CRISTO

काव्या हिंदी

सहायक पुस्तिका 1 से 8 तक

हिंदी–1

1. वर्णमाला और लिपि

स्वयं करें।

2. अमात्रिक शब्द

(क) (ख) (ग) स्वयं करें। **(घ)** फल, ठहर, करवट, तरकश **(ङ)** स्वयं करें।

3. 'आ' की मात्रा (ा)

(क) (ख) (ग) स्वयं करें। **(घ)** राजपथ, नायक, सागर, गायक, हलवा, अचार **(ङ)** स्वयं करें।

4. मात्राएँ: इ (ि), ई (ी)

(क) (ख) स्वयं करें। **(ग)** किला, सीता, टिकट, शिला, बिजली, कमीज़ **(घ)** स्वयं करें।

5. मात्राएँ: उ (ु), ऊ (ू)

(क) (ख) स्वयं करें। **(ग)** अनुज, चूड़ी, रूपा, पूड़ी, अरुण, कुसुम **(घ)** स्वयं करें।

6. मात्रा: ऋ (ृ)

(क) पृथक, नृप, तृण, कृपा, सदृश, सृजन **(ख)** स्वयं करें।

7. मात्राएँ: ए (े), ऐ (ै)

(क) (ख) स्वयं करें। **(ग)** नेता, हैदर, करेला, चेतन, मैया, हैरान **(घ)** स्वयं करें।

8. मात्राएँ: ओ (ो), औ (ौ)

(क) (ख) स्वयं करें। **(ग)** तोता, मौसम, चौकी, हथौड़ा, टोकरी, कामचोर **(घ)** स्वयं करें।

9. मात्राएँ: अनुस्वार (ं), चंद्रबिंदु (ँ)

(क) स्वयं करें। **(ख)** कंघा, पंखा, आँख, चाँद **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** चंदन, पाँच, नंदन, चाँद **(ङ)** स्वयं करें।

10. अः की मात्रा (:)

स्वयं करें।

11. 'र' का संयोजन

(क) (ख) स्वयं करें **(ग)** मार्च, वर्ष, गर्व, मर्ज, नर्स, धर्म, कर्म, चर्म, दर्पण **(घ)** व्रत, क्रम, भ्रम, चक्र, ड्रम, क्रिकेट, प्रकाश, उम्र, प्रेम **(ङ)** स्वयं करें।

12. आधे अक्षर तथा संयुक्त व्यंजन

(क) 1. बिल्ली 2. मच्छर 3. मक्खी 4. रिक्शे 5. बच्चा, दूध 6. कुत्ता 7. गुब्बारे **(ख)** यज्ञ, लड्डू, सत्य, मक्खन, शब्द, रास्ता, मुन्ना, तख्त, ठप्पा, खच्चर, लक्कड़, छज्जा **(ग)** स्वयं करें। **विविध अभ्यास–(क)** तोता, झूला, ड्रम, चूहा, उल्लू, हवाई जहाज़, रिक्शा, गेंद, बीन, बाँसुरी, बाजा, सितार **(ख)** ऊ, ई, ओ, इ, औ, आ, उ, ए, ऐ **(ग)** ू ो ा, ु ो ी, ी ो, े ू ू, ै े ि, ौ ा ि, ा ै ा, ि ा ा ि ा ी, ृ ु ा ी **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. गिटार 2. मछली 3. बरगद 4. सूरज 5. थरमस 6. अजगर **(च)** 1. कोयल 2. नवीन 3. सुपारी 4. मक्खी 5. तुलसी **(छ)** 1. आचार 2. आसमान 3. नाराज़ 4. अनारदाना 5. गमला 6. अपनापन **(ज)** बंदर, चंदन, आँगन, ऊँट, पूँछ, संतरा, बाँस, आँधी, ठंडा **(झ)** 1. गाँव 2. जंगल 3. पानी 4. डॉक्टर 5. तारे 6. जंगली 7. पालतू 8. ज्ञानी

13. मीरा की दिनचर्या

(क) 1. पाठ में मीरा के विषय में बात की जा रही है। 2., 3., 4. स्वयं करें। **(ख)** 1. मीरा सवेरे छह बजे बिस्तर त्यागती है। 2. स्नान के पश्चात् मीरा ईश्वर वंदना करती है। 3. मीरा दूध विद्यालय से लौटकर पीती है। 4. मीरा गृहकार्य भोजन करने के बाद करती है। 5. मीरा रात को दस बजे सो जाती है। **(ग)** स्कूल जाना (5), नाश्ता करना (4), सोकर उठना (1), ईश्वर की वंदना करना (3),

सोना (6), नहाना (2) **(घ)** 1. खेलकर 2. आकर 3. जाकर 4. देखकर 5. पढ़कर 6. सुनकर **सोचने-समझने की बात–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. रोज़ नहाना, दाँत साफ़ करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि इससे हमारा शरीर व दाँत स्वच्छ व स्वस्थ रहते हैं। 2. खेलने के बाद हाथ-मुँह इसलिए धोने चाहिए क्योंकि खेलते समय हमारे चेहरे व हाथों पर धूल-मिट्टी लग जाती है। धूल-मिट्टी में कीटाणु होते हैं जो हाथ-मुँह धोने से अलग हो जाते हैं। **(ग)** स्वयं करें।

14. घर में मेहमान

(क) 1. उदय के परिवार में चार लोग हैं। 2. उदय के माता-पिता मंदिर गए हैं। 3. उदय के माता-पिता के साथ उदय की बहन माला गई है। **(ख)** 1. चाची ने 2. उदय ने 3. चाचा ने 4. उदय ने 5. चाची ने **(ग)** 1. लौटकर 2. बैठकर 3. गाकर 4. लिखकर 5. उछलकर 6. मुसकराकर **(घ)** 1. चाची 2. दादी 3. मामी 4. नानी 5. ताई 6. मौसी **सोचने-समझने की बात–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. चाची जी 2. धन्यवाद **(ग)** मामा जी, भोजन कीजिए। चाचा जी, चाय पीजिए। पिता जी, अखबार पढ़िए। दादी जी, जल लीजिए। दादा जी, मिठाई खाइए। **(घ)** स्वयं करें।

15. कौन सिखाता है?

(क) मौखिक–1. गौरैया 2. फुदकना 3. पेड़ पर 4. तिनके, धागे, रूई आदि। **लिखित–**1. कवि ने चिड़िया के उड़ने को 'फुर से उड़ना' कहकर व्यक्त किया है। 2. चिड़िया के बच्चों को दाना कुदरत देती है। 3. कुदरत हमें सब कुछ देती है और बदले में हमसे कुछ भी नहीं लेती है। कवि ने इसी कार्य को कुदरत का खेल कहा है। 4. चिड़िया को बच्चों की चौकसी करना कुदरत सिखाती है। 5. सभी प्राणी, सूरज, चाँद, सितारे कुदरत के अंश हैं। **(ख)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. हिस्सा/भाग 2. रखवाली 3. वंश से उत्पन्न 4. लाड़-प्यार **(ख)** वृक्ष, सूर्य, चिड़िया, औरत, तरु, सूरज, पक्षी, स्त्री **(ग)** स्वयं करें। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–(क)** 1. मोर 2. बाघ 3. कमल 4. स्वयं करें। 5. गाय, भैंस, बकरी **(ख)** स्वयं करें।

16. आओ खेलें आँखमिचौनी

(क) मौखिक–1. पाठ में दशहरे की छुट्टियों के विषय में बताया गया है। 2. माला और उसका भाई दीपू टी०वी० देख रहे थे। 3. पड़ोस से रानी, देव, विनय और सीमा आए थे। 4. बच्चे खुशी में उछलने लगे व शोर मचाने लगे थे। 5. सभी बच्चे आँखमिचौनी का खेल खेलना चाहते थे। **लिखित–**1. आँखमिचौनी खेलने का प्रस्ताव सीमा ने रखा। 2. देव को खोजी चुना गया। 3. खोजी ने बच्चों को सर्वप्रथम मेज़ व पलंग के नीचे खोजा। 4. बच्चे स्टोर में छिपे हुए थे। 5. खोजी ने निराश होकर कहा था, ''अरे! तुम सब कहाँ छिपे हो?'' **(ख)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(ग)** 1. दशहरे 2. आजा 3. देव 4. देव **(घ)** 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) **भाषा-बोध–(क)** 1. बच्चे 2. जूते 3. लड़के **(ख)** 1. दुःख 2. अंदर 3. बुद्धिमान 4. पास 5. झूठ 6. प्रश्न **(ग)** 1. छुट्टियाँ 2. आँखें 3. मुँह 4. स्टोर 5. निराशा **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–(क)** 1. लूडो 2. शतरंज 3. साँप-सीढ़ी 4. आँख-मिचौनी 5. कैरम **(ख)** 1. क्रिकेट 2. हॉकी 3. फुटबॉल **(ग)** स्वयं करें **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. कबड्डी 2. फुटबॉल 3. कुश्ती

17. प्रिया का जन्मदिन

(क) मौखिक–1. पिछले सप्ताह प्रिया का जन्मदिवस था। 2. सजावट हेतु गुब्बारे घर की छतों व दीवारों पर लगाए गए थे। 3. बिजली की झालरें घर की बाहरी दीवार व ड्राइंग रूम में लगाई गई थीं। 4. जन्मदिवस पर बच्चों ने केक खाया, जूस व कोल्ड ड्रिंक पिया। संगीत की धुन पर नृत्य किया। 5. जन्मदिवस समारोह के अंत में स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया गया। 6. स्वयं करें। **लिखित–**1.

प्रिया को उसके मम्मी-पापा, चाची, मामी, सहपाठियों और पड़ोसियों ने उपहार दिए थे। 2. पड़ोस में प्रिया स्वयं घर-घर जाकर न्योता दे आई थी। सहपाठियों को उसने पहले ही तारीख और समय बताकर 'अवश्य आना' कहकर न्योता दिया था। 3. प्रिया ने फूँक मारकर मोमबत्तियाँ बुझाईं और केक काटा। बच्चों ने मिलकर गाना गाया। 4. जन्मदिवस समारोह में केक खाया गया तथा जूस व कोल्ड ड्रिंक पिया गया। **(ख)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) **(ग)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) **(ङ)** 1. उपहार 2. मोमबत्तियाँ 3. केक 4. मुख्य कार्यक्रम 5. केक **भाषा-बोध– (क)** प्रिया के चाचा, प्रिया के पापा, प्रिया की मामी, प्रिया का घर, प्रिया के सहपाठी, प्रिया की मम्मी **(ख) मिठाई**-मिठाइयाँ, **छत्ता**-छत्ते, **गुब्बारा**-गुब्बारे, **पत्ता**-पत्ते, **झालर**-झालरें, **ताली**-तालियाँ, **दीवार**-दीवारें, **बच्चा**-बच्चे, **छत**-छतें, **मोमबत्ती**-मोमबत्तियाँ **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

18. बालक ध्रुव

(क) मौखिक–1. ध्रुव के पिता उत्तानपाद थे और वे भारत में राज्य करते थे। 2. ध्रुव की माता का नाम सुनीति था। 3. ध्रुव की विमाता का नाम सुरुचि था। 4. ध्रुव को बड़ी लगन से भगवान की भक्ति करने पर भगवान के दर्शन हुए। 5. ध्रुव आज्ञाकारी व सुशील बालक था। **लिखित**–1. ध्रुव को उसकी माता अच्छी-अच्छी बातें सिखाती थीं। 2. ध्रुव को रोता हुआ देख उसकी विमाता बोली थीं– ''यदि राजा की गोद चाहिए तो मुझसे जन्म लेना पड़ेगा।'' 3. रोते हुए ध्रुव को उसकी माता ने समझाया कि ईश्वर की भक्ति करो। भक्ति से भगवान प्रसन्न होंगे। उनकी गोद में बैठकर तुम्हें सारे सुख मिल सकेंगे। भक्ति से सारे दुःख दूर हो जाते हैं। 4. नारद जी ने ध्रुव को भक्ति की शक्ति बताई। 5. ईश्वर के आशीर्वाद से ध्रुव को पिता का राज्य मिला। **(ख)** 1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. सुरुचि 2. सुनीति 3. कष्ट 4. पिता 5. अटल **भाषा-बोध–(क)** 1. ध्रुव ने ईश्वर की भक्ति की। 2. भक्ति में बहुत शक्ति होती है। 3. ध्रुव आज्ञाकारी बालक था। 4. ध्रुव बहुत सुशील था। 5. ईश्वर की भक्ति से कष्ट दूर होते हैं। **(ख)** 1. सुख 2. घृणा 3. अप्रसन्न 4. निर्धन 5. बेवकूफ़ 6. प्रश्न 7. रंक 8. पिता 9. बुरा 10. तुच्छ **(ग)** 1. अच्छी 2. अच्छे 3. अच्छा 4. अच्छा/अच्छे 5. अच्छे 6. अच्छा/अच्छे **(घ)** 1. सुनीति 2. विश्वास 3. भक्ति 4. शक्ति 5. सुशील 6. रानियाँ **(ङ)** 1. पुत्री 2. साथी 3. देवी 4. विजयी 5. दुःखी 6. सुखी **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

19. स्वच्छता और स्वास्थ्य

(क) मौखिक–1. मम्मी ने रोहित का पेट दर्द दूर करने के लिए हींग, काला नमक व मेथी की छोटी-सी खुराक बनाई और रोहित को पानी के साथ पीने को दी। 2. मम्मी रोहित को डॉक्टर के यहाँ रोहित के पेट दर्द का इलाज कराने के लिए ले गईं। 3. डॉक्टर ने रोहित के पेट पर स्टेथोस्कोप नामक यंत्र लगाकर जाँच की थी। 4. नहीं। 5. नहीं। **लिखित**–1. डॉक्टर ने रोहित से सफ़ाई संबंधित यह प्रश्न किया, ''क्या तुमने भोजन करने से पहले साबुन से हाथ धोए थे।'' 2. रोहित के हाथ देखकर डॉक्टर ने कहा, ''रोहित, तुम्हारे हाथ तो गंदे हैं। तुम्हारे नाखूनों में मैल भरा है। 3. डॉक्टर ने रोहित को पेट-दर्द से बचने के लिए यह उपाय बताया–तुम्हें नाखूनों को बराबर काटते रहना होगा और उन्हें साफ़ रखना होगा। भोजन करने से पूर्व हाथ साबुन से धोना भी न भूलना। 4. पेट की बीमारियाँ होने का प्रमुख कारण हाथ गंदे होना और नाखूनों में मैल होना बताया गया। **(ख)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(छ)** 1. अंकल 2. टिफिन 3. गंदे 4. नाखूनों 5. हाथों **भाषा-बोध–(क) प्र**-प्रयोग, **प्र**-प्रबल, **प्र**-प्रसार, **प्र**-प्रचार, **प्र**-प्रयुक्त, **प्र**-प्रख्यात **(ख)**

पानी-जल, **पेड़**-वृक्ष, **विद्यालय**-पाठशाला, **माता**-माँ, **बेटा**-पुत्र, **स्त्री**-औरत **(ग)** रसोईघर, अंकल, बेचैन, पलंग, गंदगी, कीटाणु **(घ)** स्वयं करें। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

20. गाँधी जी के बंदर

(क) मौखिक–1. बंदर सबको सीख दे रहे हैं। 2. बंदरों की सीख अपनाकर हम जीवन में कभी असफल व परेशान नहीं होंगे। **लिखित**–1. कविता में बुरी घटना पर ध्यान न देने की सीख दी जा रही है। 2. कविता में बुरी बात पर कान न देने की सीख दी जा रही है। 3. कविता में कड़वे बोल न बोलने के लिए सीख दी जा रही है। **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(ग)** 1. बुरा दिखे तो मत दो ध्यान बुरी बात पर मत दो कान। कभी ना बोलो कड़वे बोल गाँधी जी के बंदर तीन सीख हमें देते अनमोल। 2. याद रखोगे यदि यह बात कभी नहीं खाओगे मात। कभी न होगे डाँवाडोल गाँधी जी के बंदर तीन, सीख हमें देते अनमोल। **भाषा-बोध–(क) बन्दर**-बंदर, **झण्डा**-झंडा, **सन्तरा**-संतरा, **अण्डा**-अंडा, **चन्द्र**-चंद्र, **फन्दा**-फंदा, **दन्त**-दंत, **डण्डा**-डंडा, **गन्ध**-गंध, **खण्ड**-खंड, **अन्त**-अंत, **ठण्ड**-ठंड **(ख) लकड़ी**-लकड़ियाँ, **लड़की**-लड़कियाँ, **ककड़ी**-ककड़ियाँ, **मकड़ी**-मकड़ियाँ, **गाड़ी**-गाड़ियाँ, **नाड़ी**-नाड़ियाँ, **कहानी**-कहानियाँ, **साड़ी**-साड़ियाँ, **झाड़ी**-झाड़ियाँ **(ग)** 1. रसना, नाक, कमल, लकड़ी 2. खत, तरबूज, जग, गगन 3. धीमा, माला, लाभ, भगत 4. लड़का, काजल, जलन, नमक 5. तलवार, रथ, थरमस, सपेरा **(घ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ङ)** 1. हमें बड़ों की सीख माननी चाहिए। 2. गाँधी जी के बंदर हमें अनमोल सीख देते हैं। 3. हमें अच्छी बातों पर ध्यान देना चाहिए। 4. हमें बड़ों की बात माननी चाहिए। 5. हमें बुरी आदतें नहीं अपनानी चाहिए। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

21. आदर्श पड़ोसी

(क) मौखिक–1. राजू के पड़ोस में शर्मा जी का मकान है। 2. शर्मा जी को घर में और आस-पड़ोस में पेड़-पौधे लगाने का शौक है। 3. शर्मा जी ने अमरूद तोड़ने वाले जिन बच्चों को डाँटा, उनमें जिसका नाम बताया गया है, वह राजू था। 4. जब शर्मा जी ने राजू को अन्य बच्चों के साथ डाँटा तो राजू के पिता ने राजू को भागकर घर में घुसते हुए देख लिया था। **लिखित**–1. किसी की वस्तु उससे पूछे बिना, उसे पता न चले ऐसा सोचते हुए ले लेने को चोरी कहते हैं। 2. पिता ने राजू को शर्मा जी से उनके अमरूद तोड़ने हेतु माफ़ी माँगने और कभी किसी की वस्तु न लेने का वायदा करने को कहा। 3. शर्मा जी ने राजू के माफ़ी माँग लेने पर मुसकराकर उसे छाती से लगा लिया और पेड़ से तोड़कर अमरूद दिए। 4. शर्मा जी से मिलकर राजू ने कभी पेड़ से अमरूद नहीं तोड़े। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (स) **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ)** 1. पिता 2. बगीचे 3. अमरूद 4. राजू 5. शर्मा जी **भाषा-बोध–(क)** 1. दोस्त 2. अच्छा 3. पास 4. दयालु **(ख)** 1. अनेक 2. एक 3. एक 4. अनेक 5. अनेक 6. अनेक 7. एक 8. एक 9. एक **(ग)** 1. वृक्ष 2. सूर्य 3. तात 4. चंद्रमा 5. भ्राता 6. नभ **(घ)** 1. चोर 2. आज्ञाकारी 3. यात्री 4. दानी **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

22. बंदरों का बाग

(क) मौखिक–1. बाग का माली इसलिए परेशान रहता था क्योंकि कुछ बंदर उसके बाग में पेड़ों के पत्ते और कच्चे-पक्के फल तोड़ते थे। 2. माली बंदरों को भगाने के लिए उन पर पत्थर फेंककर मारता था। 3. प्रतिदिन पत्थरों की चोट खाते बंदरों ने अंततः एक दिन सभा की। 4. सभा में निर्णय लिया गया कि बंदर अपना बाग लगाएँगे। अपने बाग में लगे फलों को तोड़कर खाएँगे। 5. नहीं **लिखित**–1. अपना बाग लगाने के लिए बंदरों ने एक मैदान में जाकर गड्ढे खोदे और उनमें आम की गुठलियाँ

बो दीं। गड्ढों में थोड़ा पानी छिड़का। 2. बंदर प्रतिदिन गुठलियों को गड्ढों से निकालकर इसलिए देखते थे क्योंकि वे सोचते थे कि उनमें अंकुर निकल आया होगा। 3. गुठलियो से आम का पौधा इसलिए न निकल सका था क्योंकि बंदर प्रतिदिन गड्ढों से गुठलियाँ निकाल लेते थे। 4. बंदरों को अपने कार्य में सफलता इसलिए न मिल सकी थी क्योंकि उनमें धैर्य न था। **(ख)** 1. (स) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (द) **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. मैदान 2. सभा 3. आम 4. छिड़का 5. पौधे **भाषा-बोध–(क)** 1. बंदर पेड़ों पर उछल-कूद करते थे। 2. बंदर बीजों से पौधे निकलने की प्रतीक्षा करते। 3. बंदरों में धैर्य न था। **(ख)** 1. गुठलियाँ 2. गड्ढे 3. बस्तियाँ 4. पौधे 5. घड़ियाँ 6. सुराहियाँ 7. घड़े 8. कमीज़ें 9. चश्मे 10. वस्तुएँ 11. झरने 12. रोटियाँ **(ग)** 1. बंदरिया 2. स्त्री 3. अध्यापिका 4. माता 5. शेरनी 6. बहन **(घ)** 1. बहुत 2. लाभ 3. असफल 4. कम 5. बेईमान 6. पराया 7. शत्रु 8. रोना **(ङ)** स्वयं करें। **(च) 1. पौधा**–1. धान 2. नल 3. लड़का 4. काम **2. पत्थर**–1. रस्सी 2. सीता 3. तागा 4. गाजर **3. पानी**–1. नीलम 2. मटर 3. रक्षक 4. कमल **4. मनुष्य**–1. यश 2. शलगम 3. महान 4. नट **5. उत्पात**–1. तबला 2. लाख 3. खरगोश 4. शरीफा **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

हिंदी–2

1. भोर हुई, अब भोर हुई

(क) मौखिक–1. मुन्ने को आँखें खोलकर उठने को कहा जा रहा है। 2. मुन्ना सो रहा है। 3. छाछ की लुटिया गोपी लाया। 4. गैया की बोली को रँभाना कहते हैं। **लिखित**–1. समय के विषय में बताया गया है कि खोया हुआ समय वापस नहीं आता। 2. मुन्ने को जीवन में एक पल भी गँवाए बिना हरदम आगे बढ़ना है। 3. मुन्ने को जल्दी उठने के विषय में कहा गया है कि उठने में देर करने पर समय बर्बाद होगा और उसके काम नहीं हो पाएँगे। **(ख)** 1. समय को नाहक क्यूँ खोता है? रात गई, अब भोर हुई। 2. काम पड़े हैं कितने सारे। समय की हानि कौन भरेगा? **(ग)** 1. आँखें 2. भोर 3. गैया 4. गोपी 5. पल **भाषा-बोध–(क)** 1. गऊ, धेनु 2. निशा, रजनी 3. खग, पक्षी 4. नेत्र, नयन 5. कोकिला, पिक **(ख)** 1. पोथियाँ 2. तख्तियाँ 3. आँखें 4. किरणें **(ग)** 1. कोयल की आवाज़ मधुर होती है। 2. गोपी छाछ की लुटिया लाया। 3. आलस करने से समय की हानि होती है। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

2. गौरैया के बच्चे

(क) मौखिक–1. गौरैया के बच्चे चुग्गा लेते समय चूँ-चूँ करके मुँह खोलते हैं और चुग्गा लेकर मुँह बंद कर लेते हैं। 2. मुन्नू ने सीढ़ी का प्रयोग घोंसले समेत चिड़िया के बच्चों को नीचे उतारने के लिए किया। 3. एक दिन गौरैया जब जाने के थोड़ी देर बाद वापस लौटी तो उसने देखा कि वहाँ न घोंसला था और न बच्चे। इसलिए वह रोने लगी। 4. रोती हुई गौरैया ने चुहिया से पूछा, '' मेरा छोटा-सा घोंसला है। उसमें दो बच्चे थे। वे चूँ-चूँ करते थे। अब वहाँ नहीं हैं। क्या तुमने उन्हें देखा है?'' 5. मुन्नू को गौरैया से उसके बच्चों को अलग करने का दुःख हुआ। **लिखित**–1. गौरैया दिनभर इधर-उधर से दाने चुगकर लाती और बच्चों को खिलाकर उनका पालन-पोषण करती थी। 2. मुन्नू ने छोटी सीढ़ी लगाकर घोंसले और बच्चों को रोशनदान से हटाया। 3. जब मुन्नू को उसकी माँ ने समझाया कि पशु-पक्षियों के बच्चों को उनसे अलग मत करो तब मुन्नू घोंसले और बच्चों को वापस रोशनदान में रख आया था। 4. मुन्नू को गौरैया से उसके बच्चों को अलग करने के कार्य के लिए पछतावा हुआ था। **(ख)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (य) 4. (स) 5. (द) **(ग)** 1. बरामदे 2. मुन्नू 3. छोटी 4. बिल्ली 5. माँ **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. सीढ़ी 2. दृश्य 3. चुग्गा 4. अद्‌भुत 5. चिड़िया 6. घोंसला **(घ)** 1. बड़ी

2. बाईं 3. सुखी 4. छोटा **(ङ)** 1. पक्षी उड़ेंगे। 2. बच्चा रोएगा। 3. बच्चे खेलेंगे। 4. बादल गरजेंगे। 5. कुत्ता भौंकेगा। 6. राजीव पढ़ेगा। **(च)** 1. बच्चों को भूख लग रही थी। 2. मुझे प्यास लग रही है। 3. नारियल का पेड़ ऊँचा है। 4. रास्ता ऊँचा-नीचा है। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

3. स्वस्थ नागरिकता

(क) मौखिक–1. सायं के समय मीरा, राघव, नरेश, जनेश और दीपक परस्पर वार्तालाप करते हैं। 2. चारों बच्चे सामाजिक समस्याओं की बातें करते हैं। 3. मीरा ने टी०वी० पर समाचारों में देखा कि चलती हुई ट्रेन किसी गाँव से गुज़र रही थी और आवारा लड़कों का एक समूह उस पर पत्थर बरसा रहा था। 4. केले के छिलके फेंकने वाले व्यक्ति से हम यह कहना चाहेंगे कि केले के छिलके कूड़ेदान में फेंके। 5. पार्क में पानी इसलिए भरवा दिया गया क्योंकि पार्क छोटा है और वह किशोरों के क्रिकेट खेलने के लिए उपयुक्त नहीं है। **लिखित**–1. पार्क में क्रिकेट खेलने वाले किशोरों के खेलने से बच्चों, महिलाओं और वृद्धों को चोट लग सकती है। 2. किशोरों को पार्क में क्रिकेट न खेलने के लिए समझाया गया है। 3. मामा के गाँव जाते समय राघव ने देखा कि बस में बैठा एक आदमी केला छीलकर छिलका सड़क पर फेंक रहा था। उन छिलकों पर जिस किसी का पाँव पड़ता, वही फिसलकर गिर जाता। यह देखकर अन्य लोग हँसने लगते। 4. चढ़ने वाले लोग बड़ी कठिनाई से भीतर पहुँच पाते हैं। उनके पास सामान भी हो अथवा यात्री कमज़ोर हो या बीमार हो तो उन्हें बहुत परेशानी होती है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. भगवानदास, जयभगवान 2. रामदास, जगतराम 3. सूर्यकांत, सूर्यमणि 4. चंद्रमणि, कांतिचंद्र 5. अमरनाथ, रामनाथ **(ख)** 1. खुशी 2. रोज़ी 3. दुखी 4. रोगी 5. योगी 6. डाली 7. भोगी 8. कली 9. थाली 10. जाली **(ग)** 1. रेलगाड़ियाँ 2. समस्याएँ 3. खिड़कियाँ 4. शीशे 5. कॉलोनियाँ 6. महिलाएँ **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

4. लापरवाही से दुर्घटना

(क) मौखिक–1. दादी ने संजू से प्रश्न किया कि क्या उसने रेखा को धक्का दिया था। 2. संजू से पूछे गए प्रश्न का रेखा ने उत्तर दिया कि दादी, मैं खुद ही गिर पड़ी। 3. मम्मी ने सोनू को टिफ़िन में बिस्किट दिए थे। 4. सुनीता भी अपने टिफ़िन में बिस्किट लेकर आई थी। **लिखित**–1. दादी ने बच्चों को समझाया कि पलंग व सोफ़े पर चढ़कर उछल-कूद नहीं करते। खुली जगह पर उछल-कूद करनी चाहिए। मारपीट के खेल तो बिलकुल भी नहीं खेलने चाहिए। 2. सोनू को सेब काटते समय उँगली में चाकू लगने से चोट लगी थी। 3. सब बच्चों द्वारा अपने-अपने भोजन में से सोनू को भोजन खिलाया गया। 4. सुनीता के भाई को चोट हथौड़ी से कील ठोकते समय अँगूठे में हथौड़ी लगने से लगी। 5. गगन को उसकी मम्मी डॉक्टर अंकल के पास इसलिए लेकर गई थीं क्योंकि गगन के हाथ से काँच की शीशी छूटकर फूट गई थी। उसका पाँव उस काँच पर पड़ा और घाव हो गया उसमें से खून भी बहने लगा था। **(ख)** 1. तकिए 2. रेखा 3. दादी 4. सोनू 5. मेरे भाई **(ग)** 1. (स) 2. (अ) 3. (य) 4. (द) 5. (ब) **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. तकिए 2. चीखें 3. शीशियाँ 4. चेहरे 5. उँगलियाँ 6. हथौड़ियाँ **(ख)** 1. खाया, खाकर, खाएगा। 2. पढ़ा, पढ़कर, पढ़ेगा। 3. उछला, उछलकर, उछलेगा 4. रोया, रोकर, रोएगा। 5. हँसा, हँसकर, हँसेगा। **(ग)** 1. अनपढ़ 2. अनजान 3. अनदेखा 4. अनचाहा 5. अनगिनत 6. अनकहा **(घ)** 1. दिवस 2. रात्रि 3. परेशान 4. विशाल 5. तात 6. माँ **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

5. बंदर आया

(क) मौखिक–1. बंदर को मदारी लाया है। 2. बंदर के कपड़े फटे-पुराने और रंग-बिरंगे हैं। 3. बंदर का मुख डरावना, आँखें छोटी व दुम थोड़ी मोटी-सी है। 4. सिखलाने से बंदर तमाशा दिखा सकता है। **लिखित–**1. बंदर का ढंग निराला है। 2. बंदर भौंह को मटकाता है और आँखों को नचाता है। 3. लोगों को डराने के लिए बंदर कभी किलकिलाता है, कभी दाँतों को दिखाता है और कभी मुँह बनाकर घुड़कता है। 4. बंदर पढ़-लिख नहीं सकता पर मनुष्य पढ़-लिख सकता है। **(ख)** 1. देखो लड़कों! बंदर आया, एक मदारी उसको लाया। कुछ है उसका ढंग निराला, कानों में है उसके बाला। 2. कभी दाँतों को है दिखाता, कभी कूद-फाँद है मचाता। कभी घुड़कता है मुँह बनाकर, सब लोगों को बहुत डराकर। **(ग)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (स) **भाषा-बोध–(क)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ख)** कपि, वानर, बंदर; नेत्र, नयन, आँखें; अश्व, घोड़ा, तुरंग **(ग) मटकता**-भटकता, **छोटी**-मोटी, **चलता**-मचलता, **नचाता**-मचाता, **आया**-लाया, **दिखाता**-मचाता **(घ) भौंह**-भौंहें, **आँख**-आँखें, **कपड़ा**-कपड़े, **घड़ी**-घड़ियाँ, **टका**-टके, **छड़ी**-छड़ियाँ **(ङ) बंदर**-बंदरिया, **नाग**- नागिन, **घोड़ा**-घोड़ी, **गीदड़**-मादा गीदड़, **शेर**-शेरनी, **कुत्ता**-कुतिया, **बैल**-गाय, **हाथी**-हथिनी, **बाघ**-बाघिन **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

6. होली है, भाई!

(क) मौखिक–1. होली पर बच्चे गुब्बारों में रंगीन पानी भरते हैं। 2. जिन बच्चों को गुब्बारों का खेल पसंद नहीं, वे मार्ग से सावधानीपूर्वक निकलते हैं। 3. माला और गौरव को पैसे देते हुए मम्मी कहती हैं कि बढ़िया पिचकारी और बिना मिलावट का गुलाल लाना और हाँ, रास्ते में कोई भी तुम्हें पानी का गुब्बारा मार सकता है। बुरा मत मानना और किसी से लड़ना नहीं। बस! सावधानीपूर्वक शीघ्र जाओ और लौटकर आओ। 4. टब में टेसू के फूलों का रंग देखकर बच्चे खुशी से नाच रहे हैं। 5. टेसू के फूलों से बना रंग हानिरहित होता है। **लिखित–**1. माला और गौरव मम्मी से पिचकारी लेने के लिए जिद्द कर रहे हैं। 2. माला और गौरव को पैसे देते हुए मम्मी कहती हैं कि बढ़िया पिचकारी और बिना मिलावट का गुलाल लाना और हाँ, रास्ते में कोई भी तुम्हें पानी का गुब्बारा मार सकता है। बुरा मत मानना और किसी से लड़ना नहीं। बस! सावधानीपूर्वक शीघ्र जाओ और लौटकर आओ। 3. जब गौरव ने माला को पिचकारी से रंग से भिगो दिया तो माला रोने लगी। 4. माला व गौरव की मम्मी ने होली खेलने आए गली के बच्चों को तरह-तरह की मिठाइयाँ और पकौड़ियाँ खिलाईं और होली की मुबारकबाद दी। 5. गली में होली पर एक-दूसरे पर रंग डाला जा रहा था तथा गुलाल लगाया जा रहा था। **(ख)** 1. हानिरहित 2. होली 3. गुलाल और पिचकारी 4. बच्चों **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. गहराई 2. ऊँचाई 3. चौड़ाई 4. भलाई 5. बुराई 6. लंबाई **(ख)** 1. असावधान 2. विलंब 3. दुख 4. हानिकारक 5. अप्राकृतिक 6. भला **(ग)** 1. बैठकर 2. चलकर 3. देकर 4. रुककर 5. लेकर 6. पधारकर **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. पिचकारियाँ 2. मिठाइयाँ 3. गुब्बारे 4. पकौड़ियाँ **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

7. हैलो अजय

(क) मौखिक–1. झूले पर बैठते समय अजय सोचता था कि सायं के समय तो पार्क में स्थान मिलना कठिन हो जाता है। पार्क के मैदान में बड़े लड़के फुटबॉल और क्रिकेट खेलते रहते हैं। उनकी बॉल किसी को भी लग सकती है, अत: बचकर रहना पड़ता है। बस! दूसरों को खेलते हुए देखते रहो। 2. अजय ने खाली झूले पर झूलकर अवसर का पूरा लाभ उठाया। 3. पार्क में फुटबॉल व क्रिकेट

खेलने वाले बड़े लड़कों से बचकर रहना पड़ता हैं। 4. भैया से अजय कहा करता था, ''मैं सी-सॉ पर बैठना चाहता हूँ। मैं झूला झूलना चाहता हूँ। मैं स्लाइड पर फिसलना चाहता हूँ।'' 5. पार्क में चहल-पहल शाम के समय होती है। **लिखित**–1. अजय को प्रारंभ में पार्क में भीड़ होने के कारण बड़े बच्चों के फुटबॉल व क्रिकेट खेलने के कारण झूला झूलने व खेलने को नहीं मिलता था। 2. धीरे-धीरे पार्क में अजय की कठिनाइयाँ बच्चों से जान-पहचान होने पर दूर हुईं। 3. बच्चों के साथ स्लाइड पर फिसलकर अजय उनसे परिचित हो सका। 4. अजय को इस बात की खुशी होती है कि बच्चे न केवल उससे परिचित होने लगे हैं अपितु उसके साथ खेलना भी पसंद करते हैं। 5. भैया अजय को सिखाते थे कि अभी हम यहाँ नए-नए आए हैं। तुम बच्चों से जान-पहचान बढ़ाओ जिससे वे तुम्हें अपना मित्र समझकर अपने पास बुलाएँ और खेलने दें। अन्यथा अपनी बारी की प्रतीक्षा करो। **(ख)** 1. (स) 2. (य) 3. (द) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** 1. झूला झूले 2. बिस्किट 3. सायंकाल 4. फुटबॉल 5. उदास **(ङ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. माला 2. लाला 3. जाला 4. आला 5. काला 6. कला **(ग)** 1. चली 2. बली 3. रुकी 4. जाली 5. कमी 6. माली 7. रथी 8. हँसी **(घ)** 1. मैं गीत गाता हूँ। 2. मैं भोजन करता हूँ। 3. मैं विद्यालय जाता हूँ। 4. मैं सैर करने जाता हूँ। 5. मैं मंदिर जाता हूँ। **(ङ)** 1. झूले 2. बगीचे 3. लड़के 4. डालियाँ 5. लड़कियाँ 6. जालियाँ 7. गाड़ियाँ 8. ऋतुएँ 9. सड़कें **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

8. पहले तौलो, फिर बोलो

(क) मौखिक–1. हंस यह विचारकर वट वृक्ष पर आ बैठा था कि वह रात्रि को वट वृक्ष पर विश्राम करके अगले दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व अपनी यात्रा प्रारंभ करेगा। 2. हंस को सामने देखकर कौआ चौंक गया और क्रोधित होकर उससे पूछा–कौन हो तुम? यहाँ क्यों आकर बैठ गए? 3. कौए ने ऐसे पक्षी को दंड देने की बात कही जो उसका पूरा सम्मान नहीं करता। 4. कौए ने इस प्रकार आत्मप्रशंसा की कि उसने हंस की उड़ान को सामान्य और अपनी उड़ान को विशेष बताया। 5. हंस लंबी दूरी की उड़ान जानता था। **लिखित**–1. कौए ने आत्मप्रशंसा में कहा कि तुम केवल उड़ना ही जानते होंगे। ऐसी उड़ान को सामान्य उड़ान कहते हैं। मेरी तरह उड़ना तुम्हारे लिए संभव नहीं होगा। 2. आत्मप्रशंसा को शास्त्रों में पाप बताया गया है। इससे पुण्यों का नाश हो जाता है। राजा ययाति आत्मप्रशंसा करने पर ही न केवल इंद्र के आधे सिंहासन से, अपितु स्वर्ग से भी पृथ्वी लोक पर धकेल दिए गए थे। 3. पचास उड़ानें दिखाने के चक्कर में कौआ बहुत तेज़ी से ऊपर-नीचे उड़ने लगता है। वह बहुत बुरी तरह थककर नीचे सरोवर में गिरने लगता है। 4. हंस ने कौए को अपनी पीठ पर बैठाकर सरोवर में गिरने से बचाया और उसकी जान बचाई। 5. कौए पर हंस के व्यवहार का यह प्रभाव पड़ा कि वह हंस से अपने पास रहने को कहने लगा और उसका एहसान माना। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. विश्राम 2. पक्षी 3. संभव 4. पचास 5. शास्त्र **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ)** 1. हंस ने 2. हंस ने 3. कौए ने 4. कौए ने 5. हंस ने **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. इ, आ 2. उ, इ, आ 3. आ, इ 4. इ, उ 5. इ, आ 6. उ, इ **(ग)** 1. हंस वृक्ष पर विश्राम करना चाहता था। 2. कौआ हंस को वृक्ष पर बैठने की अनुमति नहीं दे रहा था 3. हंस बुद्धिमान पक्षी है। **(घ)** 1. अनुमति 2. दक्षिण 3. वट वृक्ष 4. प्रशंसा 5. सामान्य 6. संभव **(ङ)** 1. सूर्यास्त 2. सामान्य 3. नरम 4. मूर्ख 5. युवा 6. दूर **(च)** 1. पेड़, तरु 2. काग, काक **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

9. चंदू की उदारता

(क) मौखिक–1. वानर घरों की छतों पर चढ़कर वहाँ सूखने हेतु फैले वस्त्रों को फाड़ देते हैं,

इधर-उधर फेंक देते हैं अथवा ले जाकर कहीं फेंक देते हैं। घरों की छतों पर रखे गमले गिराकर तोड़ देते हैं। 2. निवेदिता के पिता ने घर के पीछे खाली भूमि पर बड़ा सुंदर बगीचा लगाया हुआ है। 3. गरमियों में बगीचे में चिड़ियाँ दिन भर चूँ-चूँ करती हैं, कोयलें कूकती हैं और गिलहरियाँ भाग-दौड़ में व्यस्त रहती हैं। 4. जो फल मनुष्यों के काम के नहीं होते; उन्हें अन्य जीव-जंतु खाते हैं। 5. बंदरों के आतंक से बचने के लिए लोग घरों के दरवाज़े बंद कर लेते हैं। **लिखित**–1. लंगूर को चंदू नाम दिया गया है और उसका स्वभाव विनम्र है वह किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाता है। 2. जब गिलहरियाँ लंगूर की पूँछ पर चढ़ जाती हैं और लंगूर उनसे छूटने के लिए पूँछ हिलाता है तब गिलहरियाँ समझ पाती हैं कि लंगूर की पूँछ एक झूला है। 3. गिलहरियों के झूलने पर लंगूर को गुदगुदी होने लगती है। उनसे छूटने के लिए वह पूँछ हिलाता है। 4. बगीचे में लंगूर पेड़ पर आराम करने आता है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. गिलहरियाँ 2. उत्पात 3. चंदू 4. मोड़कर 5. हानि **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. आवाज़ें 2. विशेषता 3. खाद्य 4. सुंदर 5. हरियाली **(ग)** 1. भूमियाँ 2. डालियाँ 3. गिलहरियाँ 4. टहनियाँ 5. पूँछें 6. गमले **(घ)** 1. गिलहरी पेड़ पर रहती है। 2. लंगूर की पूँछ लंबी होती है। 3. बाग में चारों ओर हरियाली होती है। 4. हाथी विशालकाय जानवर है। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

10. देश की माटी

(क) मौखिक–1. कविता में भारत देश की माटी की बात की जा रही है। 2. देश की हवा सरस होने से वातावरण प्रदूषणमुक्त होगा। 3. देश के तन बिना दोष के (नीरोग) होने की प्रार्थना की गई है। **लिखित**–1. प्रभु से देश की हवा, जल और माटी के लिए यह प्रार्थना की गई है कि ये सरस (प्रदूषणमुक्त) बनें। 2. प्रभु से देश के घर, वन और घाटों के लिए यह प्रार्थना की गई है कि ये सरल (सुगम) बनें। 3. प्रस्तुत कविता के रचयिता रवींद्रनाथ टैगोर हैं। **(ख)** 1. हवा देश की, देश के फल सरस बनें, प्रभु सरस बनें। 2. देश के वन और देश के बाट सरल बनें, प्रभु सरल बनें। **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) **भाषा-बोध**–1. की 2. की 3. के 4. का 5. के 6. के 7. के 8. के 9. की **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. आवास, आलय 2. वायु, बयार 3. नीर, पानी 4. भगिनी, स्वसा 5. भ्राता, सहोदर 6. भगवान, ईश्वर **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**-स्वयं करें।

11. जीवन का आनंद

(क) मौखिक–1. सेठ जी ने अपनी दुकान पर बिक्री के लिए कुछ सामान मँगवाया था। 2. मज़दूर बोरियाँ गोदाम में रख रहे थे। 3. युवा चूहे ने शहरी जीवन के विषय में सुना था कि शहरी जीवन में बड़ा आनंद है। वहाँ खाने-पीने की अनेक वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं। किसी भी प्रकार का अभाव नहीं है। 4. शहर पहुँचकर नीलू के परिवार की ध्वनि व वायु प्रदूषण से हालत खराब हो गई थी। वे सब बीमार पड़ गए थे। 5. नीलू का परिवार दुर्गंध और प्रदूषण से बचने के लिए गाँव लौट आया। **लिखित**–1. सभा में मुखिया चूहे ने कहा, ''सुनो भाइयो, अब हमें बोरियों से निकलकर भूमि में बिल बनाकर रहना होगा। अब हम इस गाँव में ही बस जाएँगे। यदि बोरियों में ही रहे और बोरियाँ फिर कहीं अन्य स्थान पर भिजवा दी गईं तो हमें यूँ ही भटकते रहना पड़ेगा।'' 2. शहर में यातायात इतना अधिक था कि नीलू को अपनी जान का खतरा बना रहा। सड़कों-गलियों में कुत्तों व बिल्लियों से बचना बड़ा कठिन था। 3. मंटू ने आस-पड़ोस से खाने-पीने का सामान लाकर नीलू और उसके परिवार की खातिरदारी की। 4. कीटनाशक छिड़के जाने पर नीलू की पत्नी बोली, ''चलो, लौट चलें। यहाँ दुर्गंध

और प्रदूषण के बीच जीवित रहना अत्यंत कठिन है।'' 5. गाँव लौटकर नीलू की पत्नी बोली, ''गाँव के शुद्ध, सरल, स्वास्थ्यप्रद जीवन को छोड़कर तुम शहरी जीवन की प्रशंसा किया करते थे। अब बोलो, क्या कहते हो? कैसा लगा शहर का जीवन?'' **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (अ) 4. (य) 5. (ब)। **(घ)** 1. मज़दूर 2. दैनिक उपयोग 3. शहरी 4. नीलू 5. दिनों **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. बोरियाँ 2. चूहे 3. चींटियाँ 4. चींटे 5. गलियाँ 6. थैले **(ग)** 1. प्रदूषण 2. मुखिया 3. प्रबंध 4. धर्मशाला 5. अभाव 6. आनंद 7. परिवार 8. संदूक **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

12. परिवर्तन

(क) मौखिक–1. कविता में ऋतुओं के परिवर्तन का वर्णन किया गया है। 2. स्वयं करें। 3. ऋतुओं के परिवर्तन से मनुष्य में खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा पहनने संबंधी परिवर्तन दिखाई देते हैं। 4. हमें ये परिवर्तन सुखद लगते हैं। **लिखित**–1. जनवरी कोहरे, ओस और अधिक ठंड से पहचानी जाती है। 2. वर्षा ऋतु जुलाई, अगस्त व सितंबर महीनों में बनी रहती है। 3. पेड़ों से पत्ते अक्टूबर माह में झड़ते हैं। 4. कविता में नवंबर के विषय में कहा गया है कि नवंबर ठिठुरन लेकर आता है तथा दिसंबर में धूप सुंदर लगती है। **(ख)** 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) **(ग)** 1. जाड़े से जनवरी भरी। फूल लिए फरवरी खड़ी। 2. मारे मई महीना रे। जान बचाओ आया जून। 3. झूले लिए आया अगस्त। मौसम मुदित सितंबर में। **भाषा-बोध–(क)** 1. अंबर नीले रंग का होता है। 2. जनवरी में कोहरा पड़ता है। 3. वर्षा के बाद आकाश में इंद्रधनुष दिखाई देता है। **(ख)** 1. दिसंबर 2. नवंबर 3. अगस्त 4. सितंबर 5. जून 6. जुलाई **(ग)** 1. सूर्य, दिनकर 2. कपि, वानर 3. मयूर, केकी 4. वृक्ष, तरु **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

13. वृक्षों की उपयोगिता

(क) मौखिक–1. प्राणवायु ऑक्सीजन को कहते हैं। यह वृक्षों से प्राप्त होती है। 2. पेड़ों की जड़ों के द्वारा वर्षा का पानी ज़मीन के भीतर तक पहुँच जाता है। इससे ज़मीन में खेती के लिए आवश्यक नमी बनी रहती है। 3. वृक्षों की जड़ें ज़मीन को जकड़े रहती हैं। इससे वर्षा में भूमि का कटाव रुक पाता है। 4. फलों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। उनसे हमें विभिन्न प्रकार के विटामिन प्राप्त होते हैं। विटामिन की कमी से शरीर का विकास रुक जाता है। शरीर के विकास के लिए फल अत्यावश्यक हैं। **लिखित**–1. वृक्षों से हमें भोजन, फल, ऑक्सीजन, लकड़ी आदि वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। 2. पेड़ हवा को शुद्ध बनाए रखते हैं। वातावरण की हवा में जितने भी दूषित तत्व मिले होते हैं, वृक्ष उन्हें ग्रहण करते रहते हैं और पर्यावरण को अशुद्ध होने से बचाते हैं। 3. जीव-जंतुओं को वृक्षों से आश्रय व भोजन मिलता है। 4. वृक्षों की अनुपस्थिति में पृथ्वी पर जीवन और पर्यावरण के संकट की अवस्था पाई जाएगी। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ऑक्सीजन 2. अशुद्ध 3. वृक्षों 4. बंदर 5. लकड़ी **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **भाषा-बोध–(क)** 1. सुंदरता 2. स्वच्छता 3. मानवता 4. सरसता 5. प्रसन्नता 6. नीरवता **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. सुहानी 2. विशेष 3. संपूर्ण 4. आवश्यकता 5. उपभोग 6. शुद्ध **(घ)** 1. दरवाज़े 2. मकड़ियाँ 3. खिड़कियाँ 4. जड़ें 5. लकड़ियाँ 6. औषधियाँ 7. बीमारियाँ 8. गिलहरियाँ 9. जानकारियाँ 10. दियासलाइयाँ **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

14. सूरज जल्दी आना

(क) मौखिक–1. कविता में शीत ऋतु का वर्णन किया गया है। 2. कविता में सूरज को बुलाया गया है। 3. कविता में गोरी' से अभिप्राय चमकती धूप है। 4. कुहासा होने पर वातावरण धुँधला हो जाता है।

लिखित–1. प्रस्तुत कविता के रचयिता रमेश तैलंग हैं। 2. धूप को उजले रंग का बताया गया है। 3. कुहासे में आर-पार दिखाई नहीं दे रहा है। 4. धूप न निकलने के कारण दीवारें और दरवाज़े सब सील गए हैं। **(ख)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ **(ग)** 1. धूप हमें भी लाना जी सूरज जल्दी आना जी। 2. आर -पार न दिखता है। घर में कोई टिकता है? सूरज जल्दी आना जी। **भाषा-बोध–(क)** 1. छाया 2. दिन 3. उष्ण 4. मूल्यहीन **(ख)** 1. जल्दी 2. धूप 3. दीवार 4. बहाना **(ग)** 1. सूर्य, भानु 2. चंद्रमा, शशि 3. मेघ, घन 4. निशा, रजनी **(घ)** 1. ताला 2. छाला 3. माला 4. काला **(ङ)** 1. सुखी 2. फली 3. दु:खी 4. नली **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

15. कौन अधिक बलवान?

(क) मौखिक–1. हवा को अपनी शक्ति का गर्व था। 2. सूरज ने अपनी शक्ति के विषय में हवा से कहा, ''तुम्हें मेरी शक्ति का पता नहीं है, तभी तुम ऐसी बात कर रही हो। मैं तुमसे बहुत अधिक बलवान हूँ।'' **लिखित**–1. हवा ने शक्ति-प्रदर्शन का यह तरीका सुझाया कि जो भी पथिक की टोपी, कुरता व कंबल उतरवा देगा, वही अधिक बलवान होगा। 2. हवा ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन तेज़ गति से चलकर और पथिक की टोपी उड़ाकर व पथिक को गिराकर किया। 3. सूरज ने शक्ति का प्रदर्शन अपना ताप बढ़ाकर और पथिक की टोपी, कुरता व कंबल उतरवाकर किया। 4. पराजित होने पर हवा ने सूरज को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और उसकी शक्ति को मान लिया। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. सूरज 2. गति 3. रुक 4. पसीना 5. सूरज **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(ङ)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. **(ब) भाषा-बोध**–सूर्य, दिवाकर; चाँद, राकेश; पेड़, वृक्ष **(ख)** 1. वायु 2. अनिल **(ग)** 1. बल 2. घमंड 3. इंतज़ार 4. हारा हुआ/हारी हुई 5. ताकतवर/शक्तिशाली 6. यात्री 7. जाड़ा 8. मार्ग **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. गर्वीली 2. पथिक 3. व्यक्ति 4. कंबल 5. पराजित 6. असहनीय

हिंदी–3

1. प्रकृति की सीख

(क) मौखिक–1. ऊँचा बन जाने को पर्वत प्रेरित कर रहा है। 2. मन में गहराई लाने को सागर कह रहा है। 3. सिर पर भार सहकर भी धैर्य बनाए रखना चाहिए। 4. कविता में बताए गए गुणों को प्रत्येक बच्चा धारण करेगा। **लिखित**–1. सागर से हमें मन में गहराई लाने की शिक्षा मिलती है। 2. तरल तरंगें मन में उत्साह की भावनाएँ भरने का संदेश दे रही हैं। 3. पृथ्वी में धैर्य रखकर भार सहने का गुण पाया जाता है। 4. कविता में पृथ्वी के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि हमारे ऊपर कितनी भी ज़िम्मेदारी हो हमें धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। 5. आकाश से हमें पूरे संसार में अपने गुण फैलाने की शिक्षा मिलती है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. पहाड़, शैल, गिरि 2. समुद्र, रत्नाकर, जलधि 3. वसुधा, वसुंधरा, धरती 4. नभ, व्योम, आसमान **(ख)** 1. ठोस 2. खट्टी 3. नीचा 4. अधैर्य **(ग)** 1. शिल्पकार 2. चर्मकार 3. गीतकार 4. उपकार **(घ) कवि**-पुल्लिंग, **दासी**-स्त्रीलिंग, **लेखिका**-स्त्रीलिंग, **राजा**-पुल्लिंग, **पुरुष**-पुल्लिंग, **मादा खटमल**-नित्य स्त्रीलिंग, **मच्छर**-नित्य पुल्लिंग, **शिक्षिका**-स्त्रीलिंग, **छात्रा**-स्त्रीलिंग, **नौकर**-पुल्लिंग **(ङ) राजा**-जातिवाचक संज्ञा, **लड़का**-जातिवाचक संज्ञा, **गाँव**-जातिवाचक संज्ञा, **दिल्ली**-व्यक्तिवाचक संज्ञा, **रामपुर**-व्यक्तिवाचक संज्ञा, **वीरता**-भाववाचक संज्ञा, **सोना**-पदार्थवाचक संज्ञा, **चाँदी**-पदार्थवाचक संज्ञा, **कक्षा**-समूहवाचक संज्ञा, **घड़ी**-जातिवाचक संज्ञा **(च)** स्वयं करें। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

2. मेरा बचपन

(क) मौखिक–1. गाँधी जी के पिता का नाम करमचंद गाँधी तथा माता का नाम पुतलीबाई था। 2. गाँधी जी के पिता कुटुंबप्रेमी, सत्यप्रिय, उदार किंतु क्रोधी थे। 3. गाँधी जी ने अपने पिता की धार्मिक शिक्षा के विषय में बताया है कि उनकी धार्मिक शिक्षा नहीं के बराबर थी पर मंदिरों में जाने से और कथा वगैरा सुनने से जो धर्मज्ञान असंख्य हिंदुओं को सहज भाव से मिलता रहता है, वह उनमें था। एक विद्‌वान ब्राह्‌मण की सलाह से जो परिवार के मित्र थे, उन्होंने गीता पाठ शुरू किया था। रोज़ पूजा के समय वे थोड़े-बहुत श्लोकों का ऊँचे स्वर में पाठ किया करते थे। 4. गाँधी जी 'हरिश्चंद्र' नाटक बार-बार देखते थे। 5. श्रवण कुमार की माता-पिता को काँवर में बैठाकर यात्रा कराने की बात ने गाँधी जी को अधिक प्रभावित किया। **लिखित–**1. गाँधी जी ने अपने पिता की शिक्षा के विषय में बताया है कि पिता जी की शिक्षा केवल अनुभव की थी। आजकल जिसे गुजराती की पाँचवीं किताब का ज्ञान कहते हैं, उतनी शिक्षा उन्हें मिली होगी। इतिहास-भूगोल का ज्ञान तो बिलकुल ही न था। फिर भी उनका व्यावहारिक ज्ञान इतने ऊँचे दर्ज़े का था कि बारीक सवालों को सुलझाने में अथवा हज़ार आदमियों से काम लेने में भी उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती थी। धार्मिक शिक्षा नहीं के बराबर थी। 2. गाँधी जी की माता कठिन-से-कठिन व्रत शुरू करतीं और उन्हें निर्विघ्न पूरा करतीं। लिए हुए व्रतों को बीमार होने पर भी कभी न छोड़तीं। 3. क्योंकि उनका मानना था सबक याद करना चाहिए, उनसे उलाहना सहा नहीं जाता था, शिक्षक को धोखा देना ठीक नहीं मानते थे। 4. पाठशाला के बंद होते ही गाँधी जी सीधे घर के लिए चल देते थे क्योंकि वे बहुत ही शर्मीले लड़के थे। पाठशाला में अपने काम से काम रखते थे। 5. श्रवण कुमार के जीवन का गाँधी जी पर यह प्रभाव पड़ा कि उनके मन में इच्छा होती कि वे भी श्रवण के समान मातृ-पितृभक्त बनें। 6. गाँधी जी ने यह मान लिया था कि नाटक में जैसी लिखी हैं, वैसी विपत्तियाँ हरिश्चंद्र पर पड़ी होंगी। हरिश्चंद्र के दु:ख देखकर व उनका स्मरण करके वे खूब रोए थे। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) **(घ)** 1. अनुभव 2. बिलकुल न 3. धार्मिक 4. भोजन 5. सात **भाषा-बोध–(क)** स्वस्थ, प्रसन्न 2. पाँचवीं 3. श्रद्‌धालु 4. उदार 5. ऐतिहासिक **(ख)** 1. शहर 2. गाँव 3. माता 4. पाठशाला 5. विद्‌यार्थी **(ग)** 1. माताएँ 2. किताबें 3. शिक्षिकाएँ 4. शिक्षाएँ 5. पाठशालाएँ 6. कठिनाइयाँ **(घ)** 1. शिक्षिका 2. बहन 3. माता 4. छात्रा 5. नौकरानी 6. साध्वी **(ङ)** 1. माँ, अंबा, जननी 2. तात, जन्मदाता, बाप 3. औरत, कामिनी, वनीता 4. नृप, भूपति, महीप 5. भगवान, प्रभु, परमात्मा **(च)** 1. पोरबंदर 2. करमचंद गाँधी 3. पुतलीबाई 4. राजकोट 5. दिल्ली, भारत **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–** स्वयं करें।

3. वीर अभिमन्यु

(क) मौखिक–1. पांडु के बड़े भाई धृतराष्ट्र जन्मांध थे इसलिए छोटे भाई पांडु को राजा बनाया गया था। 2. द्रोणाचार्य ने अर्जुन की अनुपस्थिति में चक्रव्यूह की रचना इसलिए की थी क्योंकि चक्रव्यूह को बेधना पांडव पक्ष से केवल अर्जुन ही जानते थे। 3. पांडव यह सोचकर चिंतामग्न थे कि चक्रव्यूह में जो भी पांडव युद्‌ध लड़ने जाएगा, वह या तो मारा जाएगा अथवा बंदी बना लिया जाएगा। 4. अभिमन्यु वीर, सुशील, चतुर और पराक्रमी बालक था। 5. अभिमन्यु चक्रव्यूह में केवल प्रवेश करना जानता था, उससे बाहर निकलना नहीं जानता था। **लिखित–**1. महाभारत के युद्‌ध में अभिमन्यु वीरतापूर्वक प्रदर्शन करता था। 2. अभिमन्यु को अकेले ही चक्रव्यूह में इसलिए प्रवेश करना पड़ा क्योंकि अर्जुन अनुपस्थित थे और अर्जुन व उसके अतिरिक्त चक्रव्यूह में प्रवेश करना अन्य कोई पांडव नहीं जानता था। 3. कौरव अकेले शस्त्रविहीन अभिमन्यु को घेरकर अधर्मपूर्वक अभिमन्यु से लड़ रहे थे। 4.

अभिमन्यु जब शास्त्रविहीन होकर रथ के पहिए से लड़ते हुए शत्रुओं को धिक्कार रहा था तब धोखे से जयद्रथ ने पीछे से आकर अभिमन्यु के सिर पर गदा से वार किया। अभिमन्यु धरती पर गिर पड़ा। भगवान कृष्ण, अपने माता-पिता व गुरुजनों का स्मरण करता हुआ वह वीरगति को प्राप्त हो गया। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. धृतराष्ट्र 2. कौरवों 3. पांडव 4. दुर्योधन 5. चक्रव्यूह **(ङ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. कन्हैया, मुरलीधर, गोविंद 2. बेटा, तनय, आत्मज 3. आपगा, जाह्नवी, त्रिपथगा 4. रण, समर, संग्राम 5. रवि, सूरज, दिवाकर **(ख)** 1. अभिमन्यु 2. आँखें 3. युद्ध 4. मनुष्य 5. पुत्र 6. चेहरा **(घ)** 1. सदा 2. प्रयास 3. याद 4. सारा **(ङ)** 1. पांडु, राजा 2. पांडवों, राज्य 3. अभिमन्यु 4. धृतराष्ट्र, पुत्र 5. पांडु, हस्तिनापुर राज्य **(च)** 1. अवसर पाकर जयद्रथ ने अभिमन्यु पर प्रहार कर दिया। 2. अभिमन्यु अमर है। 3. कौरवों ने कपटपूर्वक युद्ध किया। 4. चक्रव्यूह के कारण सभी पांडव चिंतामग्न थे। 5. पांडवों ने अधर्म का विरोध किया। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

4. मूर्खों के खेल

(क) मौखिक–1. बालक दिन में रामलीला का अभिनय करते थे। रामलीला के संवाद अभिनय के साथ बोलते थे। हाथों में धनुष-बाण और गदा रखते थे। 2. बालकों के शस्त्र गत्ते व प्लास्टिक से बनाए गए होते हैं। 3. बालकों को हानिकारक खेल नहीं खेलने चाहिए। 4. धनुष-बाण आदि खेलों से आँखों की हानि की संभावना बनी रहती है। **लिखित**–1. नवरात्र के उत्सव ने बालकों में उत्साह भर दिया है। वे रात को रामलीला देखते हैं और दिन में रामलीला का अभिनय करते हैं। रामलीला के संवाद अभिनय के साथ बोलते हैं। हाथों में धनुष-बाण और गदा रखते हैं। 2. बच्चे बाँस की छोटी-छोटी खपच्चियों से बाण व लंबी खपच्चियों से धनुष बनाते हैं। 3. अभिनव शरारती और चालाक बालक है। 4. अभिनव ने मनु की आँख पर बाण मारकर उसे चोट पहुँचाई। 5. अभिनव की शरारतें अन्य बच्चों को हानि पहुँचाती हैं, फिर भी वह शरारतें कम नहीं करता। इसके पीछे यह कारण माना जा सकता है कि उसकी माँ उसकी गलतियों पर उसे डाँटती नहीं है बल्कि उसका पक्ष लेकर सबसे झगड़ती है। **(ख)** 1. रात्रि 2. रामलीला 3. दशहरे 4. पुतला दहन **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. खपच्चियाँ 2. सीटियाँ 3. मिठाइयाँ 4. पुतले 5. तलवारें 6. गदाएँ 7. मोहल्ले 8. पट्टियाँ 9. सुइयाँ 10. बाँसुरियाँ **(ख)** 1. चालाक 2. वीर 3. दुष्ट 4. दस 5. मूर्ख **(ग)** 1. गंगा, हिमालय 2. हरिद्वार, गंगा, तट 3. बाण, सूई 4. मनु, दोष 5. दुकानों, सामान **विषय- संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

5. वायु-प्रदूषण

(क) मौखिक–1. नहीं 2. नहीं 3. कूड़े के बड़े ढेरों में लगी आग वातावरण को धुएँ से विषाक्त करती रहती है। धुएँ से पीड़ित लोगों की आँखों में जलन होने लगती है, दम घुटने लगता है, श्वसन क्रिया प्रभावित होती है। बच्चे और बूढ़े खाँसने लगते हैं। समस्त वातावरण में कालिमा व्याप्त हो जाती है। 4. कूड़े के ढेर में लगी आग से उत्पन्न धुएँ से वायु प्रदूषित हो जाती है। 5. सामान्य से अधिक संख्या में लोगों की भीड़ जनाधिक्य है। 6. जहाँ जनाधिक्य होता है, उसी के फलस्वरूप प्रदूषण संबंधित गतिविधियाँ भी अधिक होती हैं और प्रदूषण बढ़ता है। **लिखित**–1. कूड़े के बड़े ढेर में आग लगाने से, वाहनों व कारखानों की चिमनियों से निकले धुएँ से वातावरण में धुआँ व्याप्त हो जाता है। 2. कूड़े के ढेर में सुलगते धुएँ से वातावरण विषाक्त होता है। 3. नगरों में फैले यातायात के साधन धुआँ छोड़कर वायु- प्रदूषण फैलाते हैं। 4. भोपाल में एक कारखाने से निकली ज़हरीली गैस से हज़ारों लोग प्रभावित

हुए थे। हज़ारों लोग मारे गए थे अथवा अपंग हो गए थे। हज़ारों लोग बीमार हो गए थे जो अब तक भी उपचाराधीन हैं। लोगों को लकवा मार गया था। बड़ी संख्या में ऐसे भी बच्चे थे जो इस हादसे के बाद उत्पन्न हुए और अनेक बीमारियों से ग्रस्त रहे। 5. नगरों में वायु-प्रदूषण सर्वाधिक असंख्य वाहनों के चलने व कारखानों के स्थापित होने से उनके धुएँ से होता है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) **(घ)** 1. प्रदूषित वायु 2. उद्योगों 3. कारखाने 4. नहीं देता। **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. विषैली 2. दो हज़ार 3. मीठे 4. चौथे 5. पाँचवीं **(ख)** 1. राकेश 2. रामपुर 3. देवपाल 4. लखनऊ 5. हज़रतगंज, लखनऊ **(ग)** 1. धुएँ से वायु-प्रदूषण फैलता है। 2. कारखानों के धुएँ से वायु विषैली हो जाती है। 3. वाहनों के धुएँ से प्रदूषण फैलता है। **(घ)** 1. समीर, हवा, अनिल 2. पानी, वारि, नीर 3. अनल, दहक, पावक 4. नभ, गगन, व्योम 5. धरा, वसुंधरा, धरती **(ङ)** 1. नागरिकता 2. स्पष्टता 3. शुद्धता 4. सुलभता 5. अपंगता 6. अधिकता **(च)** नगर-पुल्लिंग, नगरी-स्त्रीलिंग, धुआँ-पुल्लिंग, देश- पुल्लिंग, गली-स्त्रीलिंग, आकाश-पुल्लिंग, दाल-स्त्रीलिंग, आलू-पुल्लिंग, दूधवाला-पुल्लिंग **(छ)** 1. हैं 2. झड़ते रहते हैं 3. काट लिया 4. सताओ 5. बचाओ **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–** स्वयं करें।

6. चाँद का कुरता

(क) मौखिक–1. कविता में चाँद और उसकी माँ के बीच वार्तालाप चल रहा है। 2. चाँद ऊन का कुरता माँग रहा है। 3. रात को चाँद को मौसम ठंडा लगता है। 4. नहीं **लिखित–**1. चाँद ने हठ करके एक दिन माँ से ऊन का एक मोटा कुरता सिलवाने को कहा। 2. चाँद को जाड़े में तेज़ चलती हवा में अपनी यात्रा पूरी करनी पड़ती है। 3. चाँद की बात का उसकी माता ने उत्तर दिया कि वह उसे एक नाप में कभी नहीं देखती। 4. चाँद के लिए एक नाप का कपड़ा इसलिए नहीं सिलवाया जा सकता है क्योंकि उसका आकार प्रतिदिन छोटा-बड़ा होता रहता है। 5. चाँद की हठ का माँ ने यह हल निकाला कि उन्होंने उससे ही तय करने को कहा कि उसका नाप किस दिन लिया जाए। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. पर मैं तो डरती हूँ। तुझको देखा करती हूँ।। 2. माता ने अरे सलोने। लगे ना तुझको जादू-टोने।। 3. कभी एक फुट मोटा। और किसी दिन छोटा।। 4. ऐसा भी करता है। दिखलाई पड़ता है।। 5. नाप तेरा किस रोज़ लिवाएँ। जो हर रोज़ बदन में आए।। **(घ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. अकुशल 2. यदा-कदा/ कभी-कभी 3. बड़ा 4. रात 5. अनेक 6. घटता **(ख)** चाँद, माँद माँ, ताँगा, ऊँट, बाँस, आँख, काँच **(ग)** 1. जननी, जन्मदात्री, माता 2. चंद्र, चंद्रमा, राकेश 3. निशा, रजनी, विभावरी **(घ)** चर-अचर, बल-सबल, सफल-असफल, फल-सफल, काम-सकाम, संभव-असंभव, परिवार-सपरिवार, जग- सजग, ज्ञान-अज्ञान **(ङ)** 1. सूर्योदय 2. चंद्रोदय 3. सूर्यास्त **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

7. स्वच्छता और स्वास्थ्य

(क) मौखिक–1. वन्या आलस के कारण अपनी साफ़-सफ़ाई न रख पाती थी। 2. वन्या की वेशभूषा गंदी रहती थी। 3. शरीर और वेश की स्वच्छता विद्यालय में अनिवार्य मानी जाती है। 4. सफ़ाई का ध्यान रखने पर वन्या को विद्यालय में शारीरिक स्वच्छता में प्रथम बालिका माना गया। **लिखित–**1. वन्या केश नहीं सँवारती थी तथा गंदी वेशभूषा पहनती थी। जबकि पड़ोस के बच्चे प्रतिदिन साफ़-सुंदर वस्त्रों में रहते थे, उनके केश कंघा किए हुए होते थे। 2. वन्या के सहपाठी उसे उसकी गंदी आदतों के कारण पसंद नहीं करते थे। 3. अध्यापिका कक्षा में सफ़ाई के बारे में बता रही थीं कि हमारी पहली आवश्यकता और कर्तव्य है कि तन और मन से स्वस्थ रहें ताकि स्वस्थ शरीर से सभी कार्य सुचारु रूप से करते रहें। शरीर बीमार है, तो कोई कार्य ठीक प्रकार से नहीं किया जा

सकता। स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन का संपूर्ण आनंद उठाता है। स्वस्थ शरीर के लिए आवश्क है भोजन और शरीर की स्वच्छता। 4. अध्यापिका ने वन्या की ओर देखकर सफ़ाई के विषय में कहा, ''देखो, यह लड़की सफ़ाई का बिलकुल भी ध्यान नहीं रखती। इसे कितनी बार समझाया कि शरीर की सफ़ाई से मन भी प्रसन्न रहता है। आलस दूर रहता है। साफ़-सुथरे बच्चों के बीच एक गंदा बच्चा स्पष्ट दिखाई पड़ता है। न इसके बाल सँवारे गए होते हैं न इसके वस्त्र साफ़ होते हैं।'' 5. स्कूल में सराहना मिलने पर वन्या की मम्मी बोलीं, ''शरीर को स्वच्छ रखने वालों के लिए सफलता के मार्ग सदा खुले रहते हैं। उन्हें सबका सहयोग भी मिलता है। ऐसा सहयोग पाकर भला कौन आगे नहीं बढ़ेगा? स्वच्छ और स्वस्थ शरीर मुसकराहट के साथ जिससे मिलेगा, वही उससे प्रसन्न होगा।'' **(ख)** 1. वन्या 2. बच्चे 3. मैले 4. मन 5. अध्यापिका **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(घ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख) स्वच्छ**-अस्वच्छ, **सफलता**-असफलता, **स्वस्थ**-अस्वस्थ, **सफल**-असफल, **प्रसन्न**-अप्रसन्न, **सहनीय**-असहनीय, **पुरस्कार**-दंड, **सदा**-यदा-कदा **(ग) माँ**-जननी, माता **पिता**-तात, बाप, **सागर**-सिंधु, रत्नाकर, **हिमालय**-पर्वतराज, नगराज, **लक्ष्मी**-श्री, कमला **(घ)** 1. वस्तुएँ 2. शहनाइयाँ 3. कंघे 4. आदतें 5. आवश्यकताएँ 6. पहाड़ियाँ 7. इच्छाएँ 8. टोकरियाँ **(ङ)** 1. लंबे 2. गंदे 3. घना 4. चार 5. मैला 6. मीठा 7. स्वच्छ 8. स्वस्थ **(च)** 1. जंगली 2. विजयी 3. वीर 4. भूखा 5. लालची 6. जागरूक **(छ)** 1. आवश्यकता 2. वीरता 3. अनिवार्यता 4. स्वच्छता 5. सुंदरता 6. सरलता **(ज)** स्वयं करें। **(झ)** 1. स्वच्छता, पुरस्कार 2. रोहन 3. पड़ोस, राहुल 4. बच्चे, विद्यालय 5. वन्या, बाल **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

8. मीदास की कहानी

(क) मौखिक–1. मीदास यूनान का राजा था। 2. मीदास को अधिक से अधिक स्वर्ण चाहिए था। 3. जब मीदास अपने खज़ाने में बैठा था, तब अचानक वहाँ देवदूत प्रकट हुआ। 4. राजा ने देवदूत के सामने इच्छा प्रकट की, ''मैं चाहता हूँ कि जिस किसी वस्तु को भी स्पर्श कर दूँ, वह सोने की हो जाए।'' **लिखित**–1. राजा मीदास ने देवदूत के प्रश्न का यह उत्तर दिया, ''मैं और भला बहुत धनी? बस, इतना थोड़ा-सा सोना पाकर कोई बड़ा धनी हो सकता है क्या?'' 2. देवदूत के वरदान देने के बाद सवेरे उठकर मीदास ने जैसे ही कुरसी पर हाथ रखा, वह सोने की हो गई। मेज़ को छुआ, वह सोने का हो गया। जिस वस्तु को छूता, सोने की हो जाती इसलिए वह प्रसन्नता से नाच उठा। 3. जब मीदास द्वारा अपनी पुत्री को गले लगाने पर वह निर्जीव होकर स्वर्ण में बदल गई तब मीदास दुखी होकर रो पड़ा। 4. अंत में मीदास ने देवदूत से प्रार्थना की, ''हे देवदूत, अपना वरदान वापस ले लीजिए। मुझे नहीं चाहिए ऐसा सोना कि मैं अपनी पुत्री और भोजन सबका त्याग कर दूँ। मुझे वही पहले वाला जीवन चाहिए। मुझे वही दे दो। सोने के बिना मेरा काम चल सकता है पर भोजन के बिना नहीं।'' **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(घ)** 1. पुत्री 2. सोना 3. कल प्रातः 4. मीदास 5. वस्त्र **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. नृप, भूपति 2. जल, नीर 3. स्वर्ण, कंचन 4. बेटी, तनया **(ग)** 1. लालच करना अच्छी बात नहीं है। 2. मीदास लालची व्यक्ति था। 3. जीवन में सभी लोग सुख चाहते हैं। 4. लालच त्यागकर मीदास सुखी जीवन बिताने लगा। **(घ)** 1. निर्धन 2. रंक 3. अप्रसन्न 4. मंद 5. सजीव 6. घृणा **(ङ)** 1. धनी 2. ठंडा 3. गरम 4. लालची, दुर्गति 5. भारी **(च)** 1. वह 2. वे 3. मैं 4. उसने 5. मुझे **(छ)** 1. राजा 2. उपवन 3. गाँव, नगर 4. वस्त्र 5. छतरी **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

9. खेल-खेल में मीठे आम

(क) मौखिक–1. नंदू दिनभर या तो खेलता रहता अथवा कुछ काम करता रहता। 2. जब नंदू न करने वाला कार्य करता था, तो उसका यह परिणाम होता था कि या तो वह चोट खा लेता अथवा किसी वस्तु को तोड़ देता, बिगाड़ देता या किसी काम की नहीं छोड़ता था। 3. आम अचार डालने हेतु लाए गए थे। 4. नंदू आमों को भूसे के ढेर में पकाकर खाना चाहता था। **लिखित–**1. नंदू ने अपने मित्र से आमों के विषय में यह सुना था कि उसने एक टोकरी कच्चे आम एक सप्ताह तक भूसे के ढेर में दबाए रखे। जब उन्हें ढेर से बाहर निकालकर धोकर काटा गया तो वे सुर्ख लाल रंग के थे। उनमें कितनी मिठास थी यह बताया नहीं जा सकता। 2. नंदू ने एक थैला आम पकने के लिए भूसे के ढेर में दबा दिए। 3. नंदू प्रतिदिन आमों के दबाए गए स्थान का निरीक्षण यह देखने के लिए करता था कि आम पक गए हैं या नहीं। 4. नंदू ने एक आम अच्छी तरह धोकर नाखून से ही उसका छिलका उतार दिया। आम भीतर से बिलकुल लाल था। उसने तुरंत बड़ा छिलका उतारा और आम के गूदे में दाँत गड़ा दिए। 5. पका आम मिलने पर नंदू खुशी से नाच-नाचकर सारे घर में आम दिखाता फिरने लगा। उसने मम्मी, मौसी, नाना- नानी, मामा-मामी और छोटी बहन, सब को इस उत्सव में सम्मिलित कर लिया। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) **(घ)** 1. धोया 2. मित्र 3. चारपाई 4. लाल 5. व्यग्र **(ङ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. शीघ्रता 2. व्यग्रता 3. निर्भरता 4. निडरता 5. नवीनता 6. कायरता 7. विनम्रता 8. मानवता **(ख)** 1. थैले 2. वस्तुएँ 3. प्याले 4. कथाएँ 5. चारपाइयाँ 6. दीवारें 7. ऋतुएँ 8. छुट्टियाँ **(ग)** मीठा-आम, काला-नाग, काली-कोयल, मीठे-रसगुल्ले, काले-कौए, मीठी-चटनी, हरा-पत्ता, हरे-पत्ते, हरी- घास, नीला-आसमान, नीले-दरवाज़े, नीली-कमीज़, पीला-आम, पुराना-कपड़ा, नया-घर, पीले- नींबू, पुराने-अखबार, नए-जूते **(घ)** 1. चलता है। 2. दौड़ा। 3. उठा लीं। 4. खाया। 5. डाल दिए। 6. लिखी। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

10. दो दीप

(क) मौखिक–1. बिना बाती बिन तेल के दिनभर जलने वाला दीपक सूरज को कहा गया है। 2. बिन बाती का यह दीपक पश्चिम में ढलता है। 3. बिना भेदभाव के। 4. इस दीपक की किरणों से सबको प्रकाश व गरमी मिलती है। **लिखित–**1. दिनभर जलने वाला दीप अंधकार दूर करके सबको नवजीवन देता है। 2. सूरज सभी के प्रति समान भाव रखता है। 3. भारत माँ के आँगन में शिक्षा का दीप जलना बताया गया है। 4. नील गगन का ढलता सूरज भारत माँ के आँगन में जलते दीप (ज्ञान दीप) के आगे इसलिए लज्जित हो जाता है क्योंकि ज्ञानदीप दिन-रात जलता है। 5. ज्ञानदीप प्रकाशित होकर समाज के घर-घर में प्रकाश भरता है। **(ख)** 1. नित नया सवेरा लाता है। तन, मन, जीवन का नाता है। 2. मन में फूले नहीं समाते। पंछी नाच-नाचकर गाते। 3. भारत माँ के आँगन में। ढलता सूरज नील-गगन में। **(ग)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. रवि, सूरज, दिनकर 2. जलज, नीरज, पंकज 3. खग, विहग, पंछी 4. कुसुम, सुमन, पुष्प **(ख)** 1. ऊँच और नीच 2. दिन और रात 3. हँसना और रोना 4. धर्म और अधर्म 5. सुख और दुःख 6. रात और दिन 7. स्त्री और पुरुष 8. धनी और निर्धन **(ग)** 1. सूर्य 2. दिनेश 3. राम 4. राजा 5. ऊँट **(घ)** 1. किरणें 2. तेल, बाती 3. सवेरा 4. कमल 5. सुबह 6. सूरज **(ङ)** चमकीली किरणें, बुद्धिमान लोग, अँधेरी रात, शीतल जल, शुभ कार्य, अच्छे मित्र, बड़ा मैदान, सुंदर फूल, लाल गुलाब **(च)** सरज-पुल्लिंग, दीप-पुल्लिंग, धरती-स्त्रीलिंग, तेल-पुल्लिंग, फूल-पुल्लिंग, बाती-स्त्रींलिंग, कली-स्त्रीलिंग, पुस्तक-स्त्रीलिंग, किरण-स्त्रीलिंग **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

11. कुसंगति का फल

(क) मौखिक–1. लालसिंह एक किसान था और वह कल्याणपुर नाम के गाँव में रहता था। 2. लालसिंह का ऊँट दुबला-पतला व कमज़ोर था। 3. लालसिंह ऊँट को रात को खूँटे से खोल देता रातभर ऊँट इधर-उधर खेतों में जाकर किसानों की फसल चर लेता। 4. ऊँट और सियार में मित्रता रात को खेतों में चरने के दौरान हुई। **लिखित–**1. लालसिंह अपनी जीविका के लिए ऊँटगाड़ी चलाता था। 2. दोनों मित्र रूप में परस्पर बातें करते। ऊँट चरता रहता और सियार उसे विभिन्न प्रकार के किस्से सुनाकर उसका मनोरंजन करता रहता था। 3. ऊँट नदी पार सियार के साथ खेत में तरबूज व खरबूजे खाने गया था। 4. सियार के ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ करने के कारण रखवालों ने ऊँट को खरबूजे खाते हुए पकड़ लिया इसलिए रखवालों ने ऊँट को मारा। 5. दुष्ट सियार था। दुष्ट की संगति में ऊँट ने मार खाई। **(ख)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(घ)** 1. किसान 2. सियार 3. धूर्तता 4. खेत 5. आवाज़ करने **(ङ)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. अस्वादिष्ट 2. सबल 3. सज्जन 4. सेवक 5. सभय 6. दूर **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. ऊँटगाड़ियाँ 2. वस्तुएँ 3. खरबूजे 4. झाड़ियाँ 5. रखवाले 6. लाठियाँ **(घ)** 1. ऊँटनी 2. मादा सियार 3. नेत्री 4. वीरांगना **(ङ)** 1. तटिनी, सरिता, तरंगिणी 2. पानी, वारि, नीर 3. पेड़, तरु, विटप **(च)** 1. स्वादिष्ट 2. निर्भय 3. कपटी 4. भारी 5. दुबला-पतला, कमज़ोर **(छ)** 1. लालसिंह, ऊँटगाड़ी 2. किसान, उपाय 3. परिवार, आय 4. निर्धनता, ज़मीन 5. मित्र **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

12. बया हमारी चिड़िया रानी

(क) मौखिक–1. बया ऊँची डालों पर लटका महल (घोंसला) बनाती है। 2. बया अपना महल तिनकों से बनाती है। 3. पानी का स्वाद मीठा होगा। 4. पर निकल आने पर बया के बच्चे उड़कर अपनी माँ से दूर चले जाएँगे। **लिखित–**1. बया अपने घोंसले ऊँची डालों पर बनाती है। 2. बया अपने भोजन के लिए दाने खेतों से लाती है। 3. बया के लिए दानों से आँगन भरने, हौज में ठंडा पानी भरने की बात कही जा रही है जिससे उसे दूर न जाना पड़े। 4. चिड़िया के बच्चों के उड़ जाने की स्थिति में चिड़िया को रोने से मना करने के लिए सांत्वना (तसल्ली) दी गई है। 5. बच्चों के जाने पर चिड़िया के पास कवयित्री व उसके परिवार के लोग रहेंगे। **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. ऊँची डालों पर लटकाती, नदियों से भर लाती पानी। 2. दानों से आँगन भर देंगे, मीठा-मीठा ठंडा पानी। **(घ)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) **(ङ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. खग, परिंदा 2. तटिनी, सरिता **(ग)** 1. नदियाँ 2. अंडे 3. घोंसले **(घ)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग 6. पुल्लिंग **(ङ)** 1. पक्षी, दाना 2. हवा 3. घोंसले, अंडे 4. तिनके, महल **(च)** हम ताज़ा खाना खाएँगे। हम साफ़ पानी पिएँगे। **(छ)** 1. लड़की रात को जल्दी सो जाती है। 2. राजा बिस्तर पर सोया था। 3. नौकरानी बाज़ार गई थी। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

13. सलोनी का साहस

(क) मौखिक–1. लोग वर्षा के विषय में समझ चुके थे कि कुछ दिनों में मौसम ठीक हो जाएगा; परंतु अब वर्षा नहीं होगी। 2. लोगों की दिनचर्या मूसलाधार वर्षा के कारण अव्यवस्थित हो गई थी। 3. लगातार वर्षा होने से मवेशियों के लिए अपना पेट भरना असंभव हो गया था। 4. सलोनी के साथ घर पर उसका छोटा भाई व मवेशी थे। 5. सलोनी के माता-पिता बाढ़ के कारण न आ सके थे। 6. समीप के गाँवों के विषय में ऐसे भी समाचार सुनने में आ रहे थे कि उन गाँवों में उफनती नदी का

पानी प्रवेश कर गया है। भयानक बाढ़ में गाँव, मवेशी, मनुष्य, खलिहान–सब बह जाएँगे। 7. लोग रातभर जागकर पहरा इसलिए देते थे कि कोई अनहोनी न हो जाए। कहीं सब सोते रहें और बाढ़ गाँव को लील न जाए! **लिखित–**1. मौसम ठीक होने के बाद पुन: दिन-रात मूसलाधार वर्षा होती रहती थी इसलिए ऐसा लगता था कि देव कुपित हो गए हैं। 2. रामपुर गाँव के लोगों की दिनचर्या मूसलाधार वर्षा के कारण अव्यवस्थित हो चली थी। घरों में छतों से पानी टपक रहा था, छप्पर पानी के बोझ और वर्षा की मार से झुकने लगे थे। मवेशी उनमें सिकुड़े हुए खड़े थे। उनके लिए चारे का संकट उत्पन्न हो गया था। 3. सलोनी ने घर का आवश्यक सामान पहले ऊँचे स्थानों पर रखा। जब पानी भीतर आ गया तो धैर्य के साथ उसने सामान को उचित स्थानों पर रखा। 4. सलोनी भाई को पीठ पर बैठाकर सीढ़ी के सहारे खपरैल की छत पर जा चढ़ी। 5. सलोनी छत पर भाई को पेड़ की एक मज़बूत डाल पर बैठाकर नीचे आई और बरसाती लेकर पुन: ऊपर चढ़ गई। पेड़ की डाल पर बरसाती इस प्रकार तानी कि वह भाई के साथ उसके नीचे वर्षा से सुरक्षा पाकर बैठी रह सके। भाई को गोद में लेकर वह खपरैल की छत पर बैठ गई। 6. सलोनी के पड़ोस में एक ऊँचा पक्का मकान था। उसकी छत पर शरण लिए पड़ोसियों ने सलोनी व उसके भाई को देख लिया। उन्होंने एक मोटी मज़बूत रस्सी सलोनी की ओर फेंकी। सलोनी ने रस्सी अपनी कमर से बाँधी और भाई को नींद से जगाकर अपनी छाती से लगाकर, रस्सी और भाई को मज़बूती से पकड़ लिया। पड़ोसियों ने धीरे-धीरे उन्हें ऊपर खींच लिया। अब दोनों भाई-बहन सुरक्षित थे। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(घ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) **भाषा-बोध–(क)** 1. मेघ, घन, जलद 2. नीर, वारि, अंबु 3. तटिनी, तरंगिणी, सरिता 4. माँ, अंबा, जननी 5. तात, बाप, जन्मदाता 6. नभ, व्योम, आकाश **(ख)** 1. मौसम 2. अव्यवस्थित 3. बूँदाबाँदी 4. खलिहान 5. परिचित 6. खपरैल **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** 1. हो रही है 2. आएगी 3. चल रही है 4. उड़ रहे हैं 5. खेल रहे हैं। **(ङ)** 1. महीना 2. लोग 3. पक्षी 4. आकाश, बादल 5. देव **(च)** **र**–रथ; शरबत; ʿ –धर्म, मर्म; ˏ–भ्रम, ग्रह; ‸–ड्रम, ट्रेन **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

14. बिल्ली के बच्चे

(क) मौखिक–1. भूरी बिल्ली अमित के घर में बिना डरे जहाँ चाहती, वहाँ बैठ जाती। वह दुबककर अथवा चुपके-से कोई चेष्टा न करती। 2. अमित या उसके घर के किसी सदस्य को देखते ही भूरी बिल्ली तुरंत उसके पास बड़ी विनम्रता से 'म्याऊँ-म्याऊँ' करती हुई जाती और उसके मुख की ओर दृष्टि गड़ाए इसी प्रकार करके भोजन माँगती थी। 3. भूरी बिल्ली प्रतिदिन अमित, उसकी मम्मी व बहन के बीच में सोती थी। 4. भूरी बिल्ली के प्रति परिवार के सदस्यों का व्यवहार विनम्र था। 5. भूरी बिल्ली से अमित के पिता को सर्वाधिक कठिनाई होती थी। **लिखित–**1. बिल्ली रात को ग्यारह-बारह बजे आकर अमित के कमरे के दरवाज़े में ज़ोर-ज़ोर से पंजे मारती। दरवाज़ा हिलाती और साँकल बजाती। दरवाज़ा खुलने पर वह तुरंत कमरे में घुस जाती। जहाँ अमित व उसकी बहन अपनी मम्मी के पास सो रहे होते थे। वह उनके बीच में जा घुसती और सो जाती। 2. एक दिन भूरी बिल्ली लौटकर न आई। 3. बिल्ली के वापस न आने पर अमित के पिता कटोरी में दूध लेकर, उसमें रुई डुबाकर, रुई को बच्चों के मुँह के पास ले जाते, उन्हें चुसाते अथवा मुँह में निचोड़ देते। लगभग पंद्रह दिन बच्चों का लालन-पालन इसी प्रकार किया गया। 4. बिल्ली के बच्चे सारा दिन 'म्याऊँ-म्याऊँ' का शोर मचाते घर में फिरते रहते। कभी पंजे फँसाकर पर्दों पर लटकते तो कभी पलंग की चादर पर। कभी उछलकर पलंग पर चढ़ जाते अथवा सोफ़े पर बैठे अमित के पिता की गोद में जा बैठते। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. दरवाज़ा 2. बिल्ली 3. बिस्तर 4. दूध 5. परिवार

(घ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. बिल्लियाँ 2. बिछौने 3. रोटियाँ 4. टोकरियाँ 5. व्यथाएँ 6. चादरें **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. भूरी 2. गीला 3. सूखे 4. भूखा 5. पाँचों 6. नीली 7. काला **(घ)** 1. अमित, घर, बिल्ली 2. तोते, चोंच, फल 3. कुत्ते, रोटी 4. पौधों 5. बच्चा **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

हिंदी–4

1. समय बहुत ही मूल्यवान है

(क) मौखिक–1. समय का पता घड़ी से लगाया जाता है। 2. समय की गति आगे को होती है। 3. 'समय को व्यर्थ खोना' से अभिप्राय है समय को बरबाद करना। 4. समय की बरबादी करने से पछताना पड़ता है और दु:ख उठाना पड़ता है। **लिखित**–1. वह समय है जिसे खोकर पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता। 2. समय को खोने वाले को कर मल-मलकर पछताना पड़ता है। 3. महात्मा गाँधी के समय के विषय में विचार थे कि उन्हें एक पल की बरबादी भी बुरी लगती थी। 4. महात्मा गाँधी की कमर से लटकी घड़ी से यह पता चलता है कि वे समय के बहुत पाबंद थे। 5. कवि समय को व्यर्थ न खोने का संकल्प करने के लिए कहता है। **(ख)** 1. सदा समय को खोने वाला कर मल-मल पछताता। 2. स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर उपचारों से है बन जाता। 3. समय बहुत ही मूल्यवान है व्यर्थ कभी मत खोना। 4. लेकिन खो जाने से मिलती नहीं समय की थाती। 5. उन्हें एक क्षण की बरबादी थी अत्यधिक खटकती। **(ग)** 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) **भाषा-बोध–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. शक्तिमान 2. बुद्धिमान 3. दयावान 4. गाड़ीवान 5. चरित्रवान 6. बलवान **(ग)** 1. गुणवान व्यक्ति समय व्यर्थ नहीं खोते। 2. समय बहुत मूल्यवान है। 3. अनेक धनवान व्यक्ति गरीबों की सहायता करते हैं। 4. बुद्धिमान व्यक्ति समय के हर पल का उपयोग करते हैं। 5. महात्मा गाँधी जी चरित्रवान व्यक्ति थे। **(घ)** 1. धर्म 2. प्रमाण 3. अपमान 4. प्रमाण 5. उत्साह 6. संतुलन **(ङ)** 1. अदृश्य 2. बहुमूल्य 3. दुर्लभ 4. अतुलनीय 5. अनुकरणीय **(च)** 1. दैनिक 2. भारतीय 3. उपयोगी 4. अंतिम 5. साहसी 6. धार्मिक **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

2. चंद्रशेखर आज़ाद

(क) मौखिक–1. भारत माता की जय! देश के वीरों की जय! अमर शहीदों की जय! आज हम इस प्रकार की जय-जयकार सुनते हैं। 2. देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर व्यक्ति अमर शहीद थे। 3. हमारा देश वीर शहीदों के बलिदान से स्वतंत्र हो सका। 4. चंद्रशेखर आज़ाद एक अंग्रेज़ अधिकारी से भिड़ गए थे। **लिखित**–1. चंद्रशेखर आज़ाद एक अमर शहीद थे तथा उनका जन्म सन् 1905 में हुआ था। 2. देश के लिए प्राण देने वाले सपूतों को अंग्रेज़ी राज में कभी-कभी रूखा-सूखा खाकर भी दिन बिताना पड़ता था। पलक झपकते ही अंग्रेज़ों की गोली इनके सीने में जा धँसती थी। 3. एक अंग्रेज़ अधिकारी अन्य अंग्रेज़ सिपाहियों के साथ कुछ देशभक्तों को पीट रहा था। इनका विरोध करने पर चंद्रशेखर को दंड मिला। 4. चंद्रशेखर आज़ाद बहुत निडर, वीर और साहसी थे। 5. अल्फ्रेड पार्क प्रयागराज (इलाहाबाद) में है। वहाँ चंद्रशेखर आज़ाद को पुलिस ने घेर लिया था। अनेक पुलिसवालों को मारकर वे स्वयं को गोली मारकर शहीद हो गए थे। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. चंद्रशेखर आज़ाद, 2. जन्म, परिवार 3. साथी 4. अल्फ्रेड पार्क 5. आज़ाद, निशाना **(ख)** 1. अचूक 2. गरीब 3. अमर 4. वीर 5. अत्याचारी 6. साहसी 7. अनेक 8. कुछ **(ग)** 1. चंद्रशेखर आज़ाद निडर थे। 2. आज़ाद ने निडरता से अंग्रेज़ों का विरोध किया। 3. स्वतंत्रता सेनानियों ने साहस से अंग्रेज़ों से मुकाबला किया। 4. आज़ाद साहसी थे। 5. भारत को वीर

पुरुषों ने स्वतंत्र कराया। 6. आज़ाद की वीरता से अंग्रेज़ भयभीत थे। **(घ)** 1. गायिका 2. रानी 3. नायिका 4. महारानी 5. नर्तकी 6. वीरांगना 7. सम्राज्ञी 8. नौकरानी 9. सेविका 10. अभिनेत्री **(ङ)** 1. चले जा रहे थे।, भूतकाल 2. आई, भूतकाल 3. खिल रहे हैं, वर्तमानकाल 4. होगी, भविष्यत्काल 5. पहुँचेगी, भविष्यत्काल 6. बैठा है, वर्तमानकाल 7. बातें कर रहे हैं, वर्तमानकाल **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

3. दो बैलों की कथा

(क) मौखिक–1. हीरा और माती दो बैल थे। 2. हीरा और मोती दोनों में परस्पर बहुत प्रेम था। वे नाँद में एक साथ मुँह डालते और एक साथ हटाते। 3. जब गया हीरा और मोती को अपने गाँव ले जा रहा था तो मार्ग में उन्होंने उसे बहुत तंग किया। मोती बाएँ भागता तो हीरा दाएँ। 4. गया के यहाँ हीरा-मोती संतुष्ट इसलिए न थे क्योंकि गया उनसे बड़ा सख्त काम लेता था। वह उन्हें दिनभर हल में जोतता। जब देखो, उन्हें मारता-पीटता। शाम को घर लाकर मोटे-मोटे रस्सों से बाँधकर उनके सामने रूखा-सूखा भूसा डाल देता। 5. कांजी हाउस की दीवार मोती ने तोड़ी। 6. कांजीहाउस की दीवार में रास्ता बनते ही पहले तो घोड़ियाँ भागीं, फिर भैंसें और बकरियाँ। मोती ने गधों को भी सींग मार-मारकर भगा दिया। **लिखित**–1. गया झूरी की पत्नी का भाई था और वह हीरा-मोती को अपने गाँव ले गया था। 2. हीरा और मोती ने साँड़ का सामना मिलकर साहस से किया। साँड़ ने हीरा पर वार किया, तो मोती ने उस पर पीछे से सींग मारकर चोट की। 3. कांजीहाउस में सब पशु कमज़ोर और दुबले-पतले थे। वहाँ किसी के लिए न चारे का प्रबंध था, न पानी का। 4. कांजी हाउस वालों ने हीरा और मोती को नीलाम कर दिया। नीलामी में सबसे ऊँची बोली लगाकर एक व्यापारी ने उन्हें खरीद लिया। वह दोनों को साथ लेकर अपने गाँव की ओर चल दिया। दोनों बैल बहुत कमज़ोर हो गए थे। वे चुपचाप व्यापारी के साथ-साथ चलने लगे। उन्हें रास्ता जाना-पहचाना लगा तो बेदम शरीर में कुछ शक्ति आ गई। वे दोनों तेज़ी से भागे। आगे-आगे बैल और पीछे-पीछे व्यापारी, जब तक व्यापारी उन्हें पकड़ पाता, वे अपने घर झूरी के पास पहुँच गए। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. गाड़ी 2. लड़की 3. साँड़ 4. झूरी 5. पीछे **(घ)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. हीरा और मोती 2. माता और पिता 3. लड़के और लड़कियाँ 4. भाई और बहन 5. स्त्री और पुरुष 6. दिन और रात 7. धनी और निर्धन 8. चारा और पानी **(ख)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग **(ग)** 1. साँप को देखकर उसके होश उड़ गए। 2. रोहन की पिटाई देखकर रमन वहाँ से जान बचाकर भाग गया। 3. बैलों को देखकर झूरी की पत्नी जल-भुन गई। **(घ)** 1. हीरा-मोती 2. गया 3. छोटी लड़की 4. झूरी की पत्नी 5. झूरी **(ङ)** 1. चर रहे थे। 2. पकड़ लिया। 3. खरीद लिए। 4. तोड़ दी। 5. मिला। **(च)** 1. हरी 2. छोटी 3. दयालु **विषय- संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

4. चंपारण की घटना

(क) मौखिक–1. चंपारण बिहार में स्थित है। 2. चंपारण के किसानों को गोरे जबरदस्ती नील की खेती करने को मजबूर करते थे। इससे उन्हें बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ती थी। न वे अपनी ज़रूरत का अनाज पैदा कर पाते थे और न ही नील की खेती के बदले उन्हें पर्याप्त धन मिल पाता था। 3. गाँधी जी ने राजकुमार शुक्ल से कलकत्ता से लौटने के बाद चंपारण जाने का वायदा किया। 4. चंपारण पहुँचने पर जिलाधीश ने गाँधी जी को एक नोटिस दिया कि वे चंपारण में नहीं ठहर सकते और जो भी पहली ट्रेन मिल रही हो, उससे वापस लौट जाएँ। गाँधी जी ने इस आदेश को नहीं माना। तब उन्हें अदालत में उपस्थित होने का आदेश दिया गया। 5. जब न्यायालय के बाहर किसानों की एक बड़ी भीड़ नारे लगा

रही थी। तब गाँधी जी के समझाने पर भीड़ शांतिपूर्वक लौट गई इसलिए सरकार ने गाँधी जी पर से मुकदमा हटा लिया। 6. गांधी जी किसानों की कठिनाई के संबंध में इस निर्णय पर पहुँचे कि गोरे लोग किसानों की अज्ञानता के कारण उनका शोषण करते हैं। **लिखित–**1. गाँधी जी को राजकुमार शुक्ल ने चंपारण के लोगों की तकलीफ़ों के बारे में बताया था। 2. न्यायधीश ने गाँधी जी से कहा था, ''यदि आप इस जिले से चले जाएँ और यहाँ कभी न आने का वचन दें, तो आपके ऊपर से मुकदमा हटा लिया जाएगा।'' 3. गाँधी जी ने न्यायाधीश की बात पर कहा, ''यदि आप मुझे इन लोगों से बात करने दें, तो उससे शांति स्थापित करने में आपको सहायता मिलेगी।'' 4. गाँधी जी ने भीड़ से कहा, ''आप लोग शांत रहकर मुझमें और मेरे काम में निष्ठा रखिए। न्यायाधीश को मुझे गिरफ़्तार करने का अधिकार है क्योंकि मैंने उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया है। यदि मुझे जेल भी भेज दिया जाए तो उसे भी उचित ही समझिए। हमें शांतिपूर्वक काम करना है। किसी भी हिंसक कार्यवाही से हमारे उद्देश्य पर आँच आएगी।'' 5. गाँधी जी ने चंपारण में रहकर ऐसे ऐच्छिक संगठन बनाए जो किसानों की आर्थिक और शिक्षा संबंधी स्थिति को सुधारने में मदद कर सकें। उन संगठनों द्वारा स्कूल खोले गए और सफ़ाई के बारे में लोगों को शिक्षा दी गई। 6. सरकार ने किसानों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की। उसने गाँधी जी को उस आयोग में काम करने का निमंत्रण दिया और वे तैयार हो गए। इससे किसानों को बहुत सहायता मिली। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) **(घ)** 1. अनाज 2. कलकत्ता 3. आदेश 4. आयोग 5. न्यायाधीश **भाषा-बोध–(क)** 1. भूतकाल 2. भूतकाल 3. भविष्यत्काल 4. वर्तमानकाल 5. भूतकाल **(ख)** 1. सत्यवादी 2. किसान 3. यशस्वी 4. अध्यक्ष 5. सेवक **(ग)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग 7. पुल्लिंग 8. स्त्रीलिंग 9. पुल्लिंग 10. स्त्रीलिंग 11. पुल्लिंग 12. स्त्रीलिंग **(घ)** 1. भारी 2. पहली 3. टूटी 4. गरीब 5. बड़ी 6. छोटा 7. हिंसक 8. अच्छा **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

5. बाँस का महत्व

(क) मौखिक–1. दादा जी का प्रस्तुतीकरण सरल होता है। 2. बाँस एक दिन में सवा मीटर तक बढ़ जाता है। 3. वसंत ऋतु में बाँस का फैलाव रुक जाता है। 4. बाँस के तने का व्यास 35 सेमी मीटर तक होता है। 5. एशिया में जहाँ-जहाँ बाँस पैदा होता है वहाँ बाँस के अँखुए खाए जाते हैं। **लिखित–** 1. बाँस से जल एक स्थान से दूसरे स्थान पर बाँस की पाइपलाइन बिछाकर पहुँचाया जाता है। 2. चीन में भोजन करने में प्रयोग की जाने वाली बाँस की तीलियों को चोपस्टिक कहा जाता है। 3. बाँस के चार उपयोग निम्नलिखित हैं-(1) बाँस से वाद्य यंत्र बनाए जाते हैं। (2) बाँस से झोंपड़ियाँ बनाई जाती हैं। (3) बाँस से बरतन बनाए जाते हैं। (4) बाँस से फ़र्नीचर बनाया जाता है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. नहीं बढ़ते 2. रक्षा 3. कागज़ 4. बंसी **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. बाँस, वस्तुएँ 2. जागृति, दादा, विद्वान 3. बच्चे, कमरे 4. मेज़, लकड़ी 5. मछलियाँ, जल **(ख)** 1. वस्तुएँ 2. चटाइयाँ 3. बाँसुरियाँ 4. अलमारियाँ 5. टोकरियाँ 6. कुरसियाँ 7. झोंपड़ियाँ 8. झरने 9. मछलियाँ 10. पगडंडियाँ **(ग)** 1. राजू 2. नौकर 3. सेठ जी 4. कुत्ता 5. रेणु **(घ)** 1. आ गए। 2. सुनेंगे। 3. बुलाया गया। 4. बैठे हैं। 5. पूछते हैं। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**- स्वयं करें।

6. कोयल

(क) मौखिक–1. कोयल की बोली को कूकना कहते हैं। 2. कोयल का आगमन वसंत ऋतु में होता है। 3. नहीं 4. चिड़ियों की रानी कोयल को कहा जाता है। **लिखित–**1. कोयल का रंग काला और

बोली मीठी होती है। 2. बच्चों ने कोयल से पहले प्रश्न में पूछा कि क्या संदेशा लाई हो। 3. कोयल कुहुककर बादलों को बुलाती है। 4. कोयल की मीठी बोली के विषय में बच्चे सोचते हैं कि कोयल की माँ ने उसे यह मीठी बोली सिखाई है। 5. कोयल की माँ ने कोयल को डाल-डाल पर उड़ना और गाना सिखाया है। 6. कोयल चिड़ियों की रानी इसलिए कहलाती है क्योंकि वह भली होती है और वह सदा अपनी माँ की बात मानती है। **(ख)** 1. पर मीठी है इसकी बोली। आमों में मिसरी घोली। 2. बतला दो कोयल रानी। हो क्या मेघों से पानी। **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ **(घ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) **भाषा-बोध–(क)** 1. डालियाँ 2. बोलियाँ 3. कविताएँ 4. रानियाँ 5. जालियाँ 6. टहनियाँ 7. कौए 8. चोटियाँ **(ख)** 1. काक, काग, वायस 2. कोकिला, कोकिल, वसंतप्रिय 3. धरा, वसुंधरा, पृथ्वी 4. माता, जननी, जन्मदात्री 5. मेघ, जलद, घन 6. आम्र, रसाल, सौरभ **(ग)** 1. मीठा 2. नरम 3. कोमल 4. ठंडा 5. लाल 6. सफ़ेद **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. कोयल चिड़ियों की रानी कहलाती है। 2. मेघ वर्षा करते हैं। 3. आम में मिठास होती है। 4. हम पत्र द्वारा संदेश देते हैं। **(च)** 1. मीठी 2. कच्चा 3. हरी 4. सच्चा 5. लाल 6. गरीब 7. खट्टे 8. ऊँचा 9. प्यासी 10. काले 11. आठ 12. नीला **(छ)** 1. कमीज़ 2. शिवाजी 3. कली 4. फूल 5. बालक 6. मकान **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

7. एकलव्य की गुरुभक्ति

(क) मौखिक–1. एकलव्य हिरण्यधेनु नामक आदिवासी का पुत्र था। 2. एकलव्य गुरु द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीखने के लिए हस्तिनापुर गया था। 3. हस्तिनापुर वर्तमान समय में मेरठ के निकट स्थित है। 4. द्रोणाचार्य हस्तिनापुर के राजकुमारों को शस्त्रविद्या सिखाने वाले गुरु थे। 5. द्रोणाचार्य ने एकलव्य को धनुर्विद्या सिखाने से इसलिए मना कर दिया था क्योंकि वे केवल राजकुमारों को ही धुनर्विद्या सिखाते थे। **लिखित**–1. एकलव्य ने द्रोणाचार्य की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर उसकी उपस्थिति में धनुर्विद्या सीखी। 2. एक दिन द्रोणाचार्य अपने शिष्यों के साथ वन में विचरण के लिए जाते हैं। उनके साथ गया हुआ एक कुत्ता मार्ग भटककर एकलव्य की कुटिया के समीप पहुँच जाता है और एकलव्य पर भौंकने लगता है। एकलव्य बाण चलाकर उसका मुँह बाणों से भर देता है। भौंकने में असमर्थ कुत्ता गुरु द्रोण के पास पहुँच जाता है। गुरु द्रोण उसे देखकर चकित रह जाते हैं। 3. द्रोणाचार्य ने गुरुदक्षिणा के रूप में एकलव्य से उसके दाएँ हाथ का अँगूठा माँगा। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** 1. ख्याति 2. दान 3. गंभीर 4. निपुण 5. सर्वस्व **(ङ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) **भाषा-बोध–(क)** 1. प्रतिमाएँ 2. मूर्तियाँ 3. कुत्ते 4. अँगूठे 5. कुटियाँ 6. तलवारें **(ख)** 1. शिष्टता 2. निजता 3. वास्तविकता 4. राष्ट्रीयता 5. संपन्नता 6. निर्भीकता 7. विपन्नता 8. विभिन्नता **(ग)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग **(घ)** 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण 3. क्रिया (भविष्यत्काल) 4. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम 5. जातिवाचक संज्ञा **(ङ)** 1. कुरुवंश 2. हिरण्यधेनु 3. हस्तिनापुर 4. श्रद्धापूर्वक 5. आश्चर्य 6. मिट्टी **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

8. अलीबाबा और चालीस चोर (1)

(क) मौखिक–1. अलीबाबा अरब देश का लकड़हारा था। 2. अलीबाबा की आजीविका का साधन लकड़ियाँ थीं। 3. एक दिन जब अलीबाबा जंगल में लकड़ियाँ काट रहा था, तो उसने देखा कि घुड़सवारों का एक बड़ा समूह धूल उड़ाता हुआ उसकी ओर ही चला आ रहा है। भयभीत होकर वह पेड़ की टहनियों और पत्तों में छिप जाता है। 4. चोरों की गुफा का दरवाज़ा 'खुल जा सिमसिम' बोलने

पर खुलता था। **लिखित–**1. धूल उड़ाते आए लोग चोर थे तथा वे गुफा का उपयोग लूट का खज़ाना छिपाने हेतु करते थे। 2. अलीबाबा ने गुफा का द्वार 'खुल जा सिमसिम' बोलकर खोला। 3. गुफा के भीतर अलीबाबा ने वहाँ रखे दो थैले उठाए और अशर्फ़ियाँ, थोड़े-थोड़े गहने मटकों व संदूकों में से उठा-उठाकर उन्हें थैलों में भर लिया। 4. अलीबाबा खज़ाने से अपने साथ अशर्फ़ियाँ व थोड़े गहने ले गया था। 5. अलीबाबा ने तराज़ू अपने भाई कासिम के घर से सारा सोना तौलने के लिए मँगवाया था। 6. कासिम की पत्नी ने अलीबाबा व उसकी पत्नी क्या तौलेंगे? यह जानने के लिए तराज़ू के एक पलड़े में चिपचिपा पदार्थ लगा दिया। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) **(ङ)** 1. वृक्ष 2. अलीबाबा 3. धूल 4. बड़ी 5. आभूषणों **भाषा-बोध–(क)** 1. लड़के गधे चरा रहे थे। 2. अलीबाबा लकड़ियाँ काटता था। 3. दरवाज़े खुल गए। 4. कहानियाँ सुनकर बच्चे सो गए। 5. राजा चले गए। 6. पक्षी उड़ गए। 7. ग्वाले पशु चराने ले गए। **(ख)** 1. अलीबाबा लकड़ियाँ बेचकर परिवार की आजीविका चलाता था। 2. गुफा का दरवाज़ा आश्चर्यजनक रूप से बंद हो गया। 3. गुफा में खज़ाना देखकर अलीबाबा आश्चर्यचकित रह गया। 4. अलीबाबा सावधानी से गुफा के अंदर गया। 5. अलीबाबा सावधानीपूर्वक खज़ाना लेकर घर आ गया। **(ग)** 1. ध्यानपूर्वक 2. सावधानीपूर्वक 3. आदरपूर्वक 4. विनम्रतापूर्वक 5. नियमपूर्वक 6. बलपूर्वक 7. दृढ़तापूर्वक 8. सम्मानपूर्वक 9. विधिपूर्वक 10. कुशलतापूर्वक **(घ)** 1. गुफाएँ 2. तहखाने 3. पलड़े 4. अशर्फ़ियाँ 5. दरवाज़े 6. पत्नियाँ **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

9. अलीबाबा और चालीस चोर (2)

(क) मौखिक–1. कासिम की पत्नी को तराज़ू के पलड़े पर चिपकी हुई अशर्फ़ी मिली। 2. कासिम ने अलीबाबा से अशर्फ़ियों के विषय में पूछा। 3. कासिम ने अलीबाबा को धमकी दी थी कि वह शहर काज़ी से शिकायत करेगा। 4. अलीबाबा को गुफा के खज़ाने की बात कासिम को इसलिए बतानी पड़ी क्योंकि कासिम शहर काज़ी से उसकी शिकायत करने को कह रहा था। 5. मरजीना अलीबाबा की नौकरानी थी। 6. रात के समय मरजीना को दीये जलाने के लिए तेल की आवश्यकता हुई। उसने एक मटके का ढक्कन उठाकर तेल लेना चाहा, तभी उसे फुसफुसाहट भरी आवाज़ सुनाई दी, ''क्या मैं बाहर आ जाऊँ?'' यह सुनकर मरजीना को आश्चर्य हुआ। वह तुरंत बोली, ''अभी नहीं परंतु तैयार रहो।'' मरजीना को समझते देर न लगी कि दाल में कुछ काला है। **लिखित–**1. गुफा में पहुँचकर कासिम ने खज़ाने से थैले भर लिए। 2. कासिम से गुफा का दरवाज़ा इसलिए न खुल पाया था क्योंकि वह भय और आवेश में था। भय और आवेश में वह दरवाज़ा खोलने का मंत्र ही भूल गया। उसे केवल 'खुल जा' ही याद आ रहा था, परंतु इतना कहने मात्र से तो दरवाज़ा खुल नहीं सकता था। 3. चोरों के सरदार ने घूम-फिरकर अलीबाबा के मकान की पहचान कर ली। उसने अलीबाबा के दरवाज़े पर एक चिह्न बना दिया ताकि उसकी पहचान छिप न सके। अगले दिन दल-बल के साथ वापस आकर उसे मारने का विचार करके वह चला गया। अगले दिन वह तेल के बड़े-बड़े मटकों को लेकर अलीबाबा के घर गया। उनमें से अधिकतर मटकों में चोर छिपे बैठे थे जिन्हें अवसर पाकर रात में अलीबाबा पर आक्रमण करना था। 4. चोरों के सरदार का षड्यंत्र मरजीना द्वारा उसके चोरों को मारने के कारण विफल हो गया था। 5. मरजीना ने चोरों के सरदार को इसलिए मार डाला था क्योंकि वह समझ गई थी कि वह अवसर पाकर उसके मालिक अलीबाबा को मार देगा। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(घ)** 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ) **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(ङ)** 1. कासिम 2. कासिम 3. मरजीना 4. दरवाज़ों 5. तेल **भाषा-बोध–(क)** 1. अशर्फ़ियाँ

2. जंगल 3. दरवाज़ा 4. थैले 5. वाक्य 6. तेल **(ख)** 1. विशाल 2. सुंदर 3. पाँच 4. बड़ा 5. अच्छे 6. गोल 7. अंधेर 8. ऊँचा **(ग)** 1. मटकों से आवाज़ आने पर मरजीना समझ गई कि दाल में कुछ काला है। 2. गुफा में खज़ाना देखकर कासिम की आँखें फटी की फटी रह गईं। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

10. बातें ज्ञान-विज्ञान की

(क) मौखिक–1. 'ज्ञान-विज्ञान' के पीरियड में दिव्या, राघव, मनीषा अपने विषय पर बोले। 2. सर्वप्रथम दिव्या ने अपने विषय के बारे में बताया व विषय का शीर्षक गुरुत्व बल था। 3. दूसरे क्रम में राघव ने अपने विषय के बारे में बताया व विषय का शीर्षक था मिट्टी के घड़े में रखा पानी ठंडा क्यों रहता है। 4. तीसरे क्रम में मनीषा ने 'गंगा' के विषय में जानकारी दी। 5. वह बल जिससे पृथ्वी किसी वस्तु को अपने केंद्र की ओर खींचती है, उसे गुरुत्व बल कहते हैं। 6. जल का वाष्प में बदलना वाष्पीकरण कहलाता है। 7. गंगाजल की यह विशेषता होती है कि इसका जल बोतलों में रखने पर बहुत दिनों तक खराब नहीं होता। इसमें कुछ ऐसे खनिज पदार्थ मिले रहते हैं, जो पानी को सड़ने नहीं देते। **लिखित**–1. किसी स्थान पर ऊपर चढ़ते समय हमें गुरुत्व बल की विपरीत दिशा में काम करना पड़ता है इसलिए हमें अधिक बल का प्रयोग करना पड़ता है। परंतु नीचे उतरते समय धरती का गुरुत्व बल हमें अपनी ओर खींचता है इसलिए हम सरलता से नीचे आ जाते हैं। 2. मिट्टी के घड़े में असंख्य सूक्ष्म छिद्र होते हैं। जब घड़े में पानी भर दिया जाता है तो इन्हीं सूक्ष्म छिद्रों से यह घड़े की बाहरी सतह पर आ जाता है। घड़े की सतह से इसका वाष्पीकरण होता है, जिसके फलस्वरूप घड़े के अंदर का तापमान गिर जाता है और पानी ठंडा रहता है। 3. गरमियों के दिनों में काँच या धातु के बरतन में पानी रख दिया जाए तो बरतन में छिद्र न होने के कारण वाष्पीकरण की क्रिया नहीं होती और पानी ठंडा होने के बजाय गरम हो जाता है। 4. बरसात के दिनों में घड़े में पानी इसलिए ठंडा नहीं होता क्योंकि वाष्पीकरण की क्रिया बहुत ही मंद होती है। वाष्पीकरण की क्रिया इसलिए मंद हो जाती है क्योंकि बरसात में जलवाष्प की मात्रा बहुत अधिक रहती है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(घ)** 1. तीसरा 2. अधिक 3. धरती 4. हिमालय 5. बंगाल की खाड़ी **(ङ)** 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) **भाषा-बोध–(क)** 1. जाह्नवी, त्रिपथगा, आपगा 2. नीर, पानी, वारि **(ख) विशेषण**–1. पौराणिक 2. ठंडा 3. सूक्ष्म 4. कठोर **विशेष्य**–1. मान्यता 2. पानी 3. छिद्र 4. चट्टान **(ग)** 1. ऊँचे स्थान से नीचे उतरना सरल कार्य है। 2. कक्षा में विज्ञान विषय का पीरियड था। 3. धरती से ऊपर जाने पर हमें गुरुत्व बल की विपरीत दिशा में काम करना पड़ता है। 4. मिट्टी के घड़े के अतिरिक्त धातु के अन्य किसी बरतन में पानी रखने से वह ठंडा होने के बजाय गरम हो जाता है। 5. बरसात में वाष्पीकरण की क्रिया मंद होती है। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

11. गाँधी जी की हिंसा

(क) मौखिक–1. जवाहरलाल नेहरू गाँधी जी के पास गए। 2. नेहरू जी गाँधी जी की लाठी से टकराकर लड़खड़ाने पर झल्ला गए थे। 3. नेहरू जी ने गाँधी जी से झल्लाकर कहा कि आप तो प्रेम व अहिंसा के समर्थक हैं फिर आप अपने पास पाँच हाथ का इतना मोटा लट्ठ (लाठी) क्यों रखते हैं। 4. गाँधी जी ने लाठी रखने का कारण बताया कि मेरे आस-पास तुम जैसे अनेक ऊधम मचाने वाले लड़के रहते हैं, उन्हें ठीक रख सकूँ इसलिए लंबी-मोटी लाठी रखता हूँ। **लिखित**–1. गाँधी जी के पास जवाहरलाल रात के समय गए थे। 2. कुटिया नन्हे दीपक से प्रकाशित थी। 3. नहीं 4. दीपक का प्रकाश होने पर भी जवाहरलाल जी लाठी से इसलिए टकरा गए थे क्योंकि दीपक का प्रकाश मंद था

इसलिए उन्हें लाठी नहीं दिखी थी। 5. नेहरू जी ने गाँधी जी से पूछा कि आप तो प्रेम व अहिंसा के समर्थक हैं फिर आप अपने पास पाँच हाथ की मोटी लाठी क्यों रखते हैं। 6. गाँधी जी ने प्रश्न का यह उत्तर दिया–मेरे आस-पास तुम जैसे अनेक ऊधम मचाने वाले लड़के रहते हैं, उन्हें ठीक रख सकूँ इसलिए लंबी-मोटी लाठी रखता हूँ। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. क्रोध 2. हँसी 3. लट्ठ 4. अहिंसा 5. छड़ी **भाषा-बोध–(क)** 1. गाँधी जी 2. घड़ी 3. दीप 4. अहिंसा **(ख)** कुटिया, अँधियारा, पहुँचे, अहिंसा, क्रोध, निर्मल, अंधकार, पाँच **(ग)** 1. जल 2. पशु 3. व्यक्ति 4. शेर 5. महात्मा 6. पथिक **(घ)** 1. गाँधी जी सदा सत्य बोलते थे। 2. हमें प्रेम से मिल-जुलकर रहना चाहिए। 3. गाँधी जी हिंसा से दूर रहते थे। 4. गाँधी जी अहिंसा के पुजारी थे। 5. शैतान बच्चे कक्षा में ऊधम करते हैं। 6. ऊधमी बच्चों को दंड दिया जाता है। **(ङ)** स्वयं करें। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

12. मेरे जीव-जंतु मित्र

(क) मौखिक–1. लेखक ने प्रस्तुत पाठ में देहरादून, लखनऊ, अल्मोड़ा की जेल में रहने की बात की है। 2. खटमलों और मच्छरों की बात लेखक ने देहरादून जेल के संदर्भ में की है। 3. लेखक को चमगादड़ों से भय लगता था। 4. गिलहरी लेखक के ऊपर चढ़कर उन्हें गौर से देखा करती थी। 5. गिरहरी के बच्चों को पेन में स्याही भरने वाले फिलर से दूध पिलाकर पाला गया। 6. मैना का जोड़ा सुबह-शाम चारा मिलने में देरी हो जाने पर धैर्यहीन हो जाया करता था। **लिखित**–1. इसका आशय यह है कि लेखक का आँगन जीवों से भरा हुआ था। वे सब रेंगने, फिसलकर चलने और उड़ने वाले कीड़े-मकोड़े उनके दैनिक जीवन में बिना किसी प्रकार का हस्तक्षेप किए हुए रह रहे थे। 2. जब भी कभी लेखक को ऐसा अनुभव होता था कि किसी बर्र ने उन्हें डंक मार दिया है, तो उनमें और लेखक में थोड़ी लड़ाई हो जाती थी। एक बार क्रोध में आकर लेखक ने सभी बर्रों को समाप्त कर देना चाहा किंतु उन्होंने अपने इस अस्थायी घर की रक्षा के लिए लेखक से काफ़ी युद्ध किया, जिसमें कदाचित उनके अंडे रखे हुए थे। 3. छिपकलियाँ जो कीड़ों की खोज में शाम को निकलकर बाहर आ जाती थीं। अपने शिकारों की तलाश में एक-दूसरे से भिड़ती थीं और इस प्रकार अपनी पूँछ हिलाया करती थीं जिसे देखकर नेहरू जी को बड़ा आनंद आता था। वे प्राय: बर्रों के पीछे न पड़ती थीं किंतु एक-दो बार उन्होंने उन्हें बड़ी सावधानी से इन बर्रों को सामने आकर पकड़ते देखा था। 4. मैना के जोड़े के विषय में लेखक ने अपना अनुभव इस प्रकार व्यक्त किया–देहरादून जेल की मेरी कोठरी में मैना के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। मैं उनको खिलाया-पिलाया करता था। वे इतना पालतू हो गए थे कि यदि सुबह या शाम उन्हें चारा मिलने में ज़रा देर हो जाती, तो वे चुपचाप मेरे पास बैठ जाते और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर अपना भोजन माँगने लगते थे। उनकी क्रियाएँ और धैर्यहीन चिल्लाहट सुनकर बड़ा आनंद आता था। **(ख)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (स) **(ग)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. छिपकलियाँ 2. चमगादड़ 3. बर्रों 4. गिलहरी 5. अल्मोड़ा **(ङ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. जातिवाचक संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया 5. क्रिया **(ख)** 1. नेहरू जी जेल की कोठरी के कीड़ों को उत्साह से देखते थे। 2. नेहरू जी को चमगादड़ों से भय लगता था। 3. गिलहरी का बच्चा नेहरू जी से भयभीत नहीं होता था। 4. जेल की कोठरी बर्रों का अस्थायी निवास था। 5. जवाहरलाल साहसी थे। **(ग)** 1. सुंदरता 2. ठंड 3. सरलता 4. लंबाई 5. उत्सुकता 6. योग्यता 7. मिठास 8. विनम्रता 9. पवित्रता 10. गहराई **(घ)** 1. मक्खियाँ 2. महीने 3. कीड़े 4. गिलहरियाँ 5. क्रियाएँ 6. चींटियाँ 7. तोते 8. घोंसले 9. कोठरियाँ 10. दीवारें **(ङ)** 1. अपरिचित 2. आलसी 3. असंभव 4. डरपोक 5. घृणा 6. अयोग्य 7. अधीर

8. कठिन 9. उजाला 10. कुरूप **(च)** 1. सुंदर 2. छोटी 3. सुरक्षित 4. हज़ारों 5. आठवाँ 6. लंबे 7. कठोर 8. काले 9. लंबी 10. सैकड़ों **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

13. बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण

(क) मौखिक–1. मनुष्य तन, मन व पड़ोस के प्रति लाभ-हानि, सुख-दु:ख को लेकर आदिकाल से ही संवेदनशील रहा है। 2. मनुष्य अपने वातावरण के प्रति स्वच्छता व स्वास्थ्य का पक्षधर रहा है। 3. सरकारें अपने नागरिकों के प्रति मंगल कामना के साथ अपना कर्तव्य मानकर कार्य करती रहती हैं। 4. जल की आवश्यकता पीने, बरतनों-कपड़ों को धोने तथा कृषि-कार्यों हेतु होती है। 5. जल के मौलिक रूप में बाहरी वस्तुओं अथवा अनावश्यक वस्तुओं का मिल जाना जल-प्रदूषण है। **लिखित**– 1. जल-प्रदूषण के कारण हैं-उद्योगों का कूड़ा-कचरा नदियों में डालना, जलयानों का तेल रिसकर समुद्र में मिलना, कीटनाशकों का जल में मिलना। 2. घरों में विभिन्न प्रकार के रसायन चाहे वे वस्त्र धोने के हों अथवा अन्य साफ़-सफ़ाई के, बहकर सीवरों, नालों और अंतत: नदियों में ही जाते हैं। हमें स्वयं ही उन सब वस्तुओं के प्रयोग में कमी करनी होगी तथा सावधानी अपनानी होगी; जिनसे जल-प्रदूषण होता है, फैलता है। 3. जल-प्रदूषण से पेट, यकृत की गंभीर बीमारियाँ होती हैं। 4. वायु-प्रदूषण के कारण मानव को साँस लेने में कठिनाई, घबराहट, खाँसी, अस्थमा व हृदय संबंधी बीमारियाँ होती हैं। 5. बड़ी संख्या में पेड़-पौधे लगाना वायु-प्रदूषण को कम करने की दिशा में बड़ा कदम होगा। साथ ही पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाई जाए और इसका कड़ाई से पालन किया जाए। ईंधन के रूप में लकड़ी, कोयले, पैट्रोलियम पर निर्भरता से दूर रहकर कार्य किया जाए और सौर ऊर्जा, जल ऊर्जा व पवन ऊर्जा का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए। कल-कारखानों में प्रदूषण के मानकों का पालन सुनिश्चित किया जाए। प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को नगरों से दूर स्थापित करना होगा। ऐसी तकनीक अपनानी होगी, जिससे धुआँ कम-से-कम उत्सर्जित हो। **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(घ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) **भाषा-बोध–(क)** 1. उद्योग कच्चे माल को विभिन्न वस्तुओं में ढालते हैं। 2. शहरों में वाहनों का आवागमन होता रहता है। 3. विकास के नए क्षेत्रों में मानव शक्ति की आवश्यकता होती है। **(ख)** 1. पानी, नीर, वारि 2. अनिल, हवा, बयार 3. बादल, जलद, वारिद **(ग)** 1. पदार्थवाचक संज्ञा 2. विशेषण 3. विशेषण 4. विशेषण 5. क्रिया **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

14. पक्षी जगत

(क) मौखिक–1. कठफोड़वा लकड़ी को अपनी चोंच के प्रहार से तोड़ता है। 2. कठफोड़वा पेड़ के तने में अपने रहने का स्थान बनाने के लिए उस पर प्रहार करता है। 3. उल्लू प्राय: वीराने खंडहरों में पाया जाता है। 4. चील का रहन-सहन बहुत गंदा और बेढंगा होता है इसलिए इसे पसंद नहीं किया जाता। **लिखित**–1. कठफोड़वा एक सुंदर पक्षी है। यह प्राय: सुनहरे परों पर सफ़ेद बुंदकियों के रंग-रूप में देखने को मिलता है। इसके सिर पर लाल कलंगी जैसी बनावट होती है। पेट पर पीले रंग पर काली बुंदकियाँ होती हैं। इस प्रकार काले, पीले, लाल तथा सुनहरे रंगों से इसका रंग-रूप बड़ा सुंदर बन जाता है। इसकी पूँछ लंबी और सुंदर होती है। 2. कठफोड़वे का आहार कीड़े-मकोड़े व फल हैं। 3. चील झपट्टा मारकर मनुष्य के हाथ से भी खाने की चीज़ें ले उड़ती है। इस कार्य को यह इतने फुर्तीले और सधे ढंग से करती है कि इसका झपट्टा व्यर्थ नहीं जाता। यह पंजों में वस्तुएँ दबाकर ले उड़ती है। 4. चील आक्रमणकारी व मांसाहारी पक्षी है। 5. उल्लू का सिर बिल्ली की तरह गोल, मुँह चपटा, कान बड़े, आँखें बड़ी व गोल और कुछ पीलापन लिए होती हैं। अन्य पक्षियों की भाँति इसकी आँखें सिर के दाएँ-बाएँ न होकर ठीक सामने होती हैं इसलिए यह केवल सामने की वस्तुएँ देख पाता

है। इसकी गरदन बहुत लचीली होती है, जिसके कारण यह अपने दाएँ-बाएँ भी देख लेता है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) **(घ)** 1. कठफोड़वा 2. गंदा 3. घोंसले 4. चार 5. उल्लू **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा-बोध-(क)** 1. मादा उल्लू 2. मादा कठफोड़वा 3. नर चील 4. मादा भालू 5. मादा मच्छर 6. मादा खटमल **(ख)** 1. अंडे 2. टहनियाँ 3. घोंसले 4. झाड़ियाँ 5. डंडियाँ 6. पत्तियाँ 7. चूजे 8. डालियाँ **(ग)** 1. कठोरता 2. वीरता 3. तरलता 4. मृदुता 5. विशेषता 6. प्रसन्नता 7. कायरता 8. निडरता **(घ)** 1. कठ, काष्ठ, लकड़ी 2. पक्षी 3. चील, स्थान, घोंसला 4. कठफोड़वा, पेड़, चोंच, प्रहार 5. अंडे **(ङ)** 1. गोल 2. गंदी 3. ऊँची 4. अच्छी 5. गुलाबी 6. सीधी 7. बड़ा 8. छोटी 9. नुकीली 10. हरी **(च)** 1. नभ, गगन, व्योम 2. तरु, पेड़, विटप 3. चिड़िया, खग, विहग **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

15. हीरा और कोयला

(क) मौखिक–1. हीरे को अपने रंग-रूप पर गर्व है। 2. कोयला हीरे को उसके खान से निकले कंकड़ जैसे मूल रूप की याद दिलाता है। 3. हीरा 4. हमें हीरे और कोयले में से कोयला अधिक उपयोगी लगता है क्योंकि कोयला जलकर गरीबों की ज़रूरतें पूरी करता है। **लिखित**–1. हीरा और कोयला दोनों खान से निकलते हैं, इस प्रकार वे सहोदर भाई हैं। 2. हीरे ने कोयले को अपनी उपयोगिता बताई कि मैं राजेश्वरों का शिरोमणि हूँ, देवताओं का मंजुल मुकुट सुशोभित करता हूँ। सुंदरियों का आभूषण बनता हूँ। 3. कोयले ने हीरे के दोष बताए कि तू अपने कारण सम्राटों के सिर कटाता है, बड़े-बड़े राज्य तहस-नहस कर डालता है। मनुष्य को इस धोखे में डालता है कि तुझे मुकुट पर लगाकर वह देवताओं को वश में कर सकता है। 4. कोयले के अनुसार सच्चे आभूषण मनुष्य की भलाई के कार्यों में उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ हैं। 5. कोयला गरीबों के लिए जलता है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. रूप 2. छोटा, बड़ी 3. जलता 4. गरीबों 5. आशीर्वाद **(ङ)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) **भाषा- बोध-(क)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ) **(ख)** 1. दानव 2. अनुज 3. पशुता 4. प्राकृतिक 5. बड़ा 6. जीत **(ग)** 1. योग्य व्यक्ति का प्रत्येक स्थान पर आदर होता है। 2. सोने का प्रयोग आभूषण बनाने में होता है। 3. दूसरों के काम आना मनुष्यता है। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

16. नीति के दोहे

(क) मौखिक–1. जहाँ दया होती है वहाँ धर्म रहता है। 2. जहाँ लोभ होता है वहाँ पाप रहता है। 3. जहाँ क्रोध होता है वहाँ काल रहता है। 4. किसी कार्य को तुरंत उसी समय करना चाहिए। 5. सज्जनों को संपत्ति परोपकार हेतु एकत्र करनी चाहिए। **लिखित**–1. व्यक्ति को ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिससे सुनने वालों को अच्छा लगे, उन्हें सुख की अनुभूति हो और स्वयं को भी आनंद का अनुभव हो। 2. आज का कार्य कल पर इसलिए नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि कल कोई भी विपत्ति आ सकती है। जिसके कारण हो सकता है कि कार्य न हो सके। 3. खजूर के पेड़ की उपमा पथिकों के लिए दी गई है। 4. उत्तम प्रकृति के लोगों पर कुसंग का कोई असर नहीं होता है। **(ख)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) **(ग)** 1. मना लेना 2. कल 3. परोपकार 4. कुसंगति **(घ)** 1. जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय। 2. पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर। 3. चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग। 4. कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहि सुजान। **भाषा-बोध-(क)** 1. ज़हर 2. साँप 3. राहगीर 4. ज़हर 5. अच्छा 6. संसार 7. कार्य 8. तालाब **(ख)** 1. साँप, अहि, व्याल 2. पेड़, वृक्ष, विटप 3. पानी, नीर, वारि **(ग)** 1. अधम 2. अमृत 3. पास 4. दंड 5. दुर्जन 6. उष्ण

(घ) 1. सज्जन व्यक्ति परोपकार के लिए संपत्ति का संचय करते हैं। 2. चंदन पर विष का असर नहीं होता है। 3. चंदन की लकड़ी सुगंधित होती है। 4. सज्जन व्यक्ति के हृदय में दया होती है। 5. मनुष्य को धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। **(ङ)** 1. अधर्म 2. अरुचि 3. अजन्मा 4. अकर्म 5. अनाम 6. अचल **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

हिंदी–5

1. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

(क) मौखिक–1. प्रस्तुत कविता का शीर्षक है 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती'। 2. प्रस्तुत कविता के रचयिता सोहनलाल द्विवेदी हैं। 3. प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि हमें असफल होने पर निराश नहीं होना चाहिए। बार-बार प्रयास करके सफलता पानी चाहिए। 4. जी हाँ 5. जय-जयकार पाने के लिए चरित्र में बार-बार प्रयास करके सफलता पाने के गुण का समावेश होना चाहिए। **लिखित**–1. कोशिश करने वाले लोगों की कभी हार नहीं होती। 2. जब व्यक्ति पूरे मन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है तब उसका उत्साह दुगुना होकर बढ़ता है। 3. लक्ष्य यदि कठिन हो तो उसकी प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना चाहिए। 4. असफलता को चुनौती मानकर अपने प्रयास में कमी को जानकर, उस कमी को सुधारकर उसका सामना करना चाहिए। **(ख)** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि जब गोताखोर समुद्र से मोती लाने के लिए उसमें बार-बार डुबकियाँ लगाता है और उसे मोती नहीं मिलते तो उसका उत्साह इसी आश्चर्य में दुगुना हो जाता है और वह मोती प्राप्त करने के लिए और गहराई में चला जाता है। **(ग)** 1. (स) 2. (अ) 3. (स) **(घ)** 1. चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है। मन का विश्वास रगों में साहस भरता है। 2. क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो। जब तक न सफल हो, नींद-चैन को त्यागो तुम। **भाषा-बोध–(क)** 1. अस्वीकार 2. जीत 3. अविश्वास 4. सफलता **(ख)** 1. कोशिश, हार (भाववाचक संज्ञा) 2. उत्साह, हैरानी (भाववाचक संज्ञा) 3. डुबकियाँ (भाववाचक संज्ञा), सिंधु, गोताखोर (जातिवाचक संज्ञा) 4. असफलता, चुनौती (भाववाचक संज्ञा) **(ग)** 1. स्वास्थ्य 2. रोग 3. मूल 4. सशक्तता 5. दुर्बलता 6. कायरता **(घ)** 1. नाव, बेड़ा, तरणी 2. पानी, वारि, नीर 3. सागर, रत्नाकर, समुद्र **(ङ)** 1. नाविक 2. चिकित्सक 3. गोताखोर 4. अद्‌वितीय **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

2. मेरी माँ

(क) मौखिक–1. लेखक की माता ने गृहकार्य की शिक्षा लेखक की दादी की बहन से प्राप्त की थी। 2. लेखक की माता ने लेखक का उचित मार्गदर्शन करके उसके जीवन में सुधार किया। 3. गुरु गोविंद सिंह जी की पत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु का संवाद सुना था, तो बहुत हर्षित हुईं और गुरु के नाम पर धर्मरक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर उन्होंने मिठाई बाँटी थी। 4. अंत में लेखक ने अपनी माता जी से इस आशीर्वाद की कामना की–जन्मदात्री! वर दो कि अंतिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करूँ। **लिखित**–1. बिस्मिल की माता ने मोहल्ले की सहेलियों से अक्षर बोध करके व स्वयं परिश्रम करके शिक्षा ग्रहण की। 2. अपनी शिक्षा का श्रेय रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी माता को इन शब्दों में दिया–यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं, तो मैं भी अति साधारण मनुष्य की भाँति संसारचक्र में फँसकर जीवन-निर्वाह करता। 3. बिस्मिल की माता उन्हें अपनी बात बड़े स्नेह से समझाया करती थीं। 4. बिस्मिल ने ये उद्‌गार प्रकट किए हैं–जीवनदात्री! आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मांतर परमात्मा ऐसी ही माता दे, यही इच्छा है। 5. 'मेरी मृत्यु का दुखद संवाद' करते हुए बिस्मिल ने माता को इस प्रकार सांत्वना का संबल दिया कि जब स्वाधीन

भारत का इतिहास लिखा जाएगा, तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. उऋण 2. करो 3. अधीर 4. साधारण 5. कष्ट **(घ)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. उपयोग, उपनिरीक्षक, उपाध्यक्ष 2. अपकार, अपयश, अपकीर्ति 3. अनबन, अनदेखा, अनकहा 4. निषेध, निर्विकार, निशेष 5. प्रयोग, प्रबल, प्रहार **(ख)** 1. बुढ़ापा 2. मिठास 3. बचपन 4. दोस्ती 5. मित्रता 6. कड़वाहट 7. पुरुषत्व 8. स्त्रीत्व 9. पात्रता 10. प्रभुता 11. बालकपन 12. निजता **(ग)** 1. कुछ 2. एक लीटर 3. इस 4. घोर 5. मधुर **(घ)** 1. अनुचित 2. अपकीर्ति 3. अनाकर्षक 4. अपयश 5. अपकार 6. तुच्छ **(ङ)** 1. वर्तमानकाल 2. भविष्यत्काल 3. भूतकाल 4. भूतकाल 5. भविष्यत्काल **(च)** 1. दयालु 2. मधुर 3. कृपालु 4. देशभक्त 5. विजयी 6. पराजित 7. सच्चा 8. भारतीय **(छ)** 1. रामप्रसाद बिस्मिल, शाहजहाँपुर 2. गोरखपुर 3. बनारस, गंगा 4. हिमालय 5. बांग्लादेश, गंगा, पद्मा **(ज)** 1. हमें अशिक्षितों को शिक्षा देनी चाहिए। 2. परिश्रम करने से सफलता मिलती है। 3. हमें असहाय की सहायता करनी चाहिए। 4. हमें अपने कार्य में निरंतर प्रयास करना चाहिए। 5. हमें परस्पर वार्तालाप करना चाहिए। 6. हमें अपना गृहकार्य समय पर करना चाहिए।

विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–स्वयं करें।

3. कुसंगति

(क) मौखिक–1. आत्मदेव तुंगभद्रा नदी के तट पर एक सुंदर नगर में रहता था। 2. आत्मदेव की पत्नी का नाम धुंधुली था। 3. धुंधुकारी धुंधुली की बहन का पुत्र था। 4. गोकर्ण आत्मदेव की गाय का बछड़ा था। 5. आत्मदेव ने संतानहीन होने के कारण स्वयं को भाग्यहीन कहा था। 6. धुंधुकारी में क्रोध, दुराचार व कुकर्मों के अवगुण उत्पन्न हो गए थे। 7. कुसंगति से व्यक्ति का पतन हो जाता है।

लिखित–1. क्षुब्ध आत्मदेव दुःखी होकर वन में तालाब पर पहुँचा और सोचने लगा था कि संतान के बिना उसका क्या होगा। बिना पुत्र के उसकी मुक्ति कैसे संभव हो सकेगी। 2. संन्यासी ने आत्मदेव की मस्तक की रेखाएँ देखकर कहा कि तुम्हारे भाग्य में संतान का योग नहीं है और यदि किसी उपाय से संतान हो जाए, तो उसके कारण अनेक कष्ट सहन करने पड़ेंगे। तुम्हारे लिए उत्तम रहेगा कि तुम संन्यास धारण कर लो। 3. आत्मदेव का हठ देखकर संन्यासी ने उससे कहा, ''यद्यपि तुम्हें संतान से कोई सुख न होगा, फिर भी मैं तुम्हें एक फल देता हूँ। इसे तुम अपनी पत्नी को खिला देना। इसके खाने से तुम्हारे परिवार में पुत्र की प्राप्ति होगी। अपनी पत्नी से कहना कि संपूर्ण समय सत्य और करुणा का व्यवहार रखे। अतिथि को नियम से भोजन कराए, तत्पश्चात् स्वयं भोजन करे।'' 4. धुंधुली ने अपनी बहन को संन्यासी द्वारा दिए फल के विषय में बताया कि इस फल को खाने पर उसे पुत्र की प्राप्ति होगी। लेकिन कुटिल स्वभाव की धुंधुली के मन में इस बात को लेकर संदेह है। यही बात उसने अपनी बहन से की। 5. धुंधुली ने संन्यासी का दिया फल गाय को खिला दिया। कुछ माह पश्चात् उस गाय से गोकर्ण का जन्म हुआ। 6. धुंधुकारी चांडालों की भाँति व्यवहार करने लगा। अपनी बुरी आदतों और व्यसनों पर उसने पिता की सारी संपत्ति का अपव्यय कर दिया। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. वन 2. प्रणाम किया 3. संतान 4. मनोव्यथा 5. फल **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ)** 1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. सुंदर 2. एक 3. रूपवती 4. कलहप्रिय, क्रूर 5. महाज्ञानी **(ख)** 1. कष्ट 2. बदलाव 3. किनारा 4. तालाब 5. बुद्धि 6. मेहमान 7. सारा 8. सच 9. हिंसक **(ग)** 1. धेनु, गौ, सुरभि 2. माँ, जननी, अंबा 3. तात, बाप, जन्मदाता 4. तटिनी, सरिता, तरंगिणी 5. पेड़, तरु, विटप **(घ)** 1. आज्ञाकारी पुत्र वाला व्यक्ति भाग्यवान होता है। 2. संतान के बिना आत्मदेव स्वयं को भाग्यहीन समझता था। 3. आत्मदेव संतानहीन था। 4. धुंधुली

कलहप्रिय थी। 5. धुंधुकारी क्रूर था। 6. हमें क्रोध नहीं करना चाहिए। 7. धुंधुकारी क्रोधी व कुकर्मी था। **(ङ)** 1. सुखी 2. कुरूप 3. क्रूर 4. विपन्न 5. अनुपयुक्त 6. दुर्गंध 7. सदाचारी 8. असत्य 9. बंधन **(च)** 1. नदी (जातिवाचक संज्ञा), नगर (जातिवाचक संज्ञा) 2. तुंगभद्रा (व्यक्तिवाचक संज्ञा) 3. चोर (जातिवाचक संज्ञा), सोना (पदार्थवाचक संज्ञा) 4. स्वर्णकार (जातिवाचक संज्ञा), चाँदी (पदार्थवाचक संज्ञा) 5. भीड़ (समूहवाचक संज्ञा) **(छ)** 1. भूतकाल 2. भविष्यत्काल 3. वर्तमानकाल 4. वर्तमानकाल 5. भूतकाल **(ज)** 1. वह दु:खी मन से घर से निकल पड़ेगा। 2. नि:संतान भाव से वह क्षुब्ध हो जाएगा। 3. एक संन्यासी उस ओर से गुज़रेगा। 4. वह उन्हें अपनी मनोव्यथा से परिचित कराएगा। 5. नि:संतान जीवन ब्राह्मण को बोझ लगेगा। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

4. गाँधी जी के जीवन से

(क) मौखिक–1. गाँधी जी के आरंभिक लेख शाकाहार, भारतीय खानपान, रीति-रिवाज़, धार्मिक उत्सवों के विषयों पर थे। 2. विलायत जाने के लिए गाँधी जी को माता की सहमति उन्हें यह प्रतिज्ञा लेकर मिली कि वे विलायत में धर्मभ्रष्ट करने वाली वस्तुओं-मांस और मदिरा आदि से दूर रहेंगे। 3. अनुमति के नाम पर चाचा ने कहा कि जब तुम्हारी माँ और भाई तैयार हैं, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं परंतु समाज की पंचायत को तुम्हारे विलायत जाने पर आपत्ति होगी। 4. मुखिया ने विलायत जाने की अनुमति न देकर यह निर्णय दिया था ''यदि तुम विलायत गए, तो तुम्हारा जाति बहिष्कार होगा। इस विषय में जो तुम्हारी सहायता करेगा या तुम्हारी विदाई के अवसर पर सम्मिलित होगा, उसे ज़ुर्माना भरना पड़ेगा।'' 5. गाँधी जी के मन में भगवान राम के प्रति असीम श्रद्धा के पीछे उनकी धाय रंभा थीं। **लिखित**–1. गाँधी जी के आरंभिक लेखों में अपने विचारों को सरल और सीधी भाषा में व्यक्त करने की विशेषता थी। 2. गाँधी जी को मुखिया से सहानुभूति और समर्थन की आशा थी। 3. गाँधी जी के विलायत जाने के खर्च हेतु रकम कस्तूरबा द्वारा गहने बेचकर और गाँधी जी के बड़े भाई द्वारा कीमती फ़र्नीचर बेचकर जुटाई गई। 4. यात्रा के समय जहाज़ में उनके साथी मजूमदार के अतिरिक्त शेष सब लोग अंग्रेज़ी में बोलते-बतियाते अंग्रेज़ लोग थे। गाँधी जी का शर्मीला स्वभाव और अंग्रेज़ी बोलने की असमर्थता की दोहरी दीवार ने उन्हें अकेला कर दिया। जहाज़ के खाने के सामान में मांस ही प्रमुख था जबकि गांधी जी शाकाहारी थे। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. धार्मिक 2. सरल 3. पिता, माँ 4. स्वर्गीय पिता 5. मुखिया **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(ङ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) **भाषा-बोध–(क)** 1. जंगली 2. बिकाऊ 3. धार्मिक 4. बनारसी 5. विषैला **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (अ) 4. (य) 5. (ब) **(ग)** रीति और रिवाज, सोना और चाँदी, सुबह और शाम, राजा और रंक, रात और दिन, गरीब और अमीर, माता और पिता, असली और नकली, शत्रु और मित्र **(घ)** 1. इंग्लैंड 2. अखबार 3. भाई 4. समाज 5. पिता 6. कस्तूरबा 7. परिवार 8. बचपन 9. जहाज़ **(ङ)** 1. सुला दिया। 2. काट चुके थे। 3. लिखेगा। 4. रख दो। 5. दिया। 6. हो रही है। 7. आई थी। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

5. बहुत नहीं सिर्फ़ चार कौए थे काले

(क) मौखिक–1. यहाँ 'कौए' से अभिप्राय सामान्य लोग अथवा 'चार कौए' से अभिप्राय धूर्त व पाखंडी लोग है। 2. धूर्त व पाखंडी संख्या में कम होने पर भी संपूर्ण समाज को अपने वश में कर लेते हैं क्योंकि उनके चतुराई भरे कार्यों व दिखावों में आकर लोग उनकी बातें मानने लगते हैं। 3. 'औगुनिया' लोगों में गुण दिखावे के कारण दिखाई पड़ जाते हैं। **लिखित**–1. 'चार काले कौए' समाज पर चतुराई व दिखावे से अपना प्रभाव डाल पाते हैं। 2. औगुनिया अवगुणी व्यक्ति होता है। 3. यहाँ 'चील, गरुड़ और बाज' चाटुकारों के प्रतीक हैं। 4. 'यह कवि का नहीं, चार कौओं का दिन है'

से अभिप्राय है कि समाज में धूर्त व पाखंडी लोगों का बोलबाला है। **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(घ)** 1. खाना-पीना मौज उड़ाना छुटभैयों को। कौओं की ऐसी बन आई पाँचों घी में, बड़े-बड़े मनसूबे आए उनके जी में। 2. उड़ने वाले सिर्फ़ रह गए बैठे ठाले। ऐसे क्या कुछ हुआ सुनाना बहुत कठिन है, यह दिन कवि का नहीं, चार कौओं का दिन है। **भाषा-बोध–(क)** 1. स्त्रीलिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. पुल्लिंग **(ख)** 1. हंसनी 2. नर चील 3. नर गौरैया 4. मादा बाज 5. मादा मच्छर 6. मादा तोता/तोती **(ग)** 1. शिष्टता 2. पाप 3. हिंसा 4. दयालुता 5. नीचता 6. चंचलता 7. कालापन 8. दुष्टता 9. चालाकी **(घ)** 1. छात्र पुस्तक पढ़ रहे हैं। 2. विनीता सामान खरीदती है। 3. नानी जी भजन गाती हैं। 4. बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं। 5. दादा जी टी०वी० देख रहे हैं। **(ङ) विशेषण**–1. चार 2. सुंदर 3. पाँच 4. भला 5. बड़ी **विशेष्य**–1. कौए 2. चित्र 3. पांडव 4. आदमी 5. बातें **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

6. यमराज का निमंत्रण

(क) मौखिक–1. कृपापाल सिंह से राजा ने यह प्रश्न किया था–क्यों मंत्री जी, मेरे विषय में प्रजा की क्या राय है? 2. अभिमान सिंह के प्रश्न का कृपापाल सिंह ने यह उत्तर दिया–महाराज, सारी प्रजा प्रसन्न है। छोटे-बड़े सभी आपकी प्रशंसा करते हैं। आपकी सच्चाई, दया और न्याय को कौन भूल सकता है? 3. महामाया ने अभिमान सिंह की इन शब्दों में प्रशंसा की–''महाराज, आपके समान कोई दूसरा राजा इस धरती पर नहीं है।'' 4. राजा ने अपनी प्रजा के प्रति यमदूत से यह बात कही-मेरी प्रजा मुझे बहुत प्यार करती है। मेरे बिना वह अनाथ हो जाएगी। 5. राजा ने यमदूत के साथ न चलने में यह मजबूरी बताई–मेरे न रहने से राज्य का सारा काम-काज बिगड़ जाएगा। सब लोग समुद्र में कूदकर प्राण दे देंगे। **लिखित**–1. राजा अभिमान सिंह अपने बारे में सबकी राय इसलिए जान लेना चाहता था क्योंकि वह बहुत वर्षों तक राज करना चाहता था। 2. पंडित गुणगानी ने राजा की प्रशंसा इस प्रकार की- आपके एक-एक गुण की प्रशंसा पर एक-एक पुस्तक लिखी जा सकती है। आप ऐसे वीर हैं कि जब आप चलते हैं तो पृथ्वी डगमगाने लगती है, हिमालय थर्राने लगता है और शेषनाग की पीठ पर छाले पड़ जाते हैं। लक्ष्मी तो आपकी आँखों में रहती हैं। सरस्वती तो आपके जीभ रूपी कमल पर बैठी वीणा बजाती हैं। आपके प्रताप से ही चंद्र-सूर्य चमकते हैं। यदि आप न हों तो अँधेरा फैल जाए। 3. राजा को अपने बारे में यह भ्रम था कि वह प्रजापालक है उसके बिना प्रजा अनाथ हो जाएगी। वह भ्रम तब दूर हुआ जब उसने अपने विषय में सबकी बातें स्वयं सुनीं। 4. यमदूत ने राजा को इस शर्त पर छोड़ना स्वीकार किया कि यदि उसके मरने का समाचार सुनकर तीन व्यक्ति भी दुखी हों तो वह उसे छोड़ देगा। 5. पंडित गुणगानी ने यमदूत से राजा के विषय में यह कहा–राजा तो ऐसा घमंडी था कि पूछो मत। अपनी झूठी प्रशंसा से फूला रहता था। हम तो झूठी प्रशंसा करते-करते थक गए। अच्छा हुआ जान छूटी। अब हमें झूठ तो न बोलना पड़ेगा। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. प्रजापालक 2. मंत्री 3. सजे पलंग पर 4. दुःखी 5. धर्मराज **(घ)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) **(ङ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **भाषा-बोध–(क)** 1. स्वर्ग 2. अवगुण 3. असमान 4. उजाला 5. निंदा 6. अयोग्य 7. सूक्ष्म 8. सज्जन 9. सत्य 10. अस्वीकार **(ख)** 1. विदुषी 2. शिक्षक 3. कवि 4. सुता 5. हथिनी 6. वीर 7. राजा 8. पंडिताइन **(ग)** 1. अभिमान सिंह, राजा 2. यमदूत, राजा 3. राजा, महल 4. रानी 5. परदा **(घ)** 1. वर्तमानकाल 2. भविष्यत्काल 3. भूतकाल 4. भविष्यत्काल 5. वर्तमानकाल 6. भूतकाल 7. भविष्यत्काल **(ङ)** 1. मूर्खता 2. लंबाई 3. अभिमान 4. चौड़ाई **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

7. मेरी यूरोप यात्रा

(क) मौखिक–1. जहाज़ में लेखक की पोशाक लोगों के कौतूहल का केंद्र बनी रही। एक पारसी दंपती

और एक अंग्रेज़ सज्जन लेखक की ओर आकर्षित हुए। 2. कपड़ों के विषय में लेखक का विचार था कि खादी के कपड़े ही पहनने चाहिए। 3. पिरामिडों के भीतर शव के साथ पहनने के कपड़े और गहने, बैठने के लिए चौकी, खाने के लिए अन्न, शृंगार के सामान, सवारी के लिए रथ और नाव रखे गए थे। 4. पिरामिडों को नज़दीक से देखने पर वे चौखूँटी इमारतों जैसे दिखाए दिए। 5. लेखक लंदन एक मुकदमे के सिलसिले में गए थे। 6. हॉलैंड में लेखक ने युवकों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया तथा वहाँ उन्होंने भाषण दिया। **लिखित–**1. पारसी दंपती से लेखक की बातचीत गाँधी जी, खादी व शाकाहार के संबंध में हुई। 2. संग्रहालय में प्रतापी राजाओं के शव देखकर लेखक को यह प्रतीति हुई कि हम जो कुछ अपने बड़प्पन के मद में करते हैं, वह सब कितना तुच्छ और अस्थायी है। 3. पिरामिडों में लगी ईंटों के विषय में लेखक का अनुभव था कि इनमें लगी पत्थर की एक-एक ईंट पाँच हाथ लंबी है। 4. महिला दुकानदार ने लेखक के कपड़ों को देखा और समझ लिया कि वे हिंदुस्तानी हैं। उस महिला ने उन्हें गाँधी जी के बारे में बताया। लेखक को आश्चर्य हुआ कि वह न केवल गाँधी जी का नाम जानती थी बल्कि उनके संबंध में जो ग्रंथ उसे मिल सके, उन्हें वह पढ़ गई थी। 5. वेनिस के विषय में लेखक को अनुभव हुआ कि यह अजीब शहर है। घर-घर में समुद्र है। नाव के सिवा दूसरी सवारी वहाँ नहीं चलती। पानी के बीच चट्टानें हैं। उन्हीं पर मकान बने हुए है। मच्छरों की भरमार है। मसहरी में भी नींद आना कठिन है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓ **(घ)** 1. लंदन 2. कम 3. ऊँटों 4. भूमध्य 5. मार्च **(ङ)** 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. देशी 2. पारसी 3. अंग्रेज़ी 4. प्रसिद्ध 5. तीसरे **(ख)** 1. स्वेज नहर 2. कैरो 3. मिस्र 4. मार्सेल्स 5. पेरिस **(ग)** 1. करण कारक 2. संप्रदान कारक 3. अपादान कारक 4. कर्म कारक 5. कर्ता कारक **(घ) भाववाचक संज्ञा–**1. स्वच्छता 2. वीरता 3. सफ़ेदी 4. क्रोध 5. लोभ **विशेषण–**1. स्वच्छ 2. वीर 3. सफ़ेद 4. क्रोधी 5. लोभी **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

8. अरमान

(क) मौखिक–1. प्रस्तुत कविता का शीर्षक 'अरमान' है। 2. प्रस्तुत कविता के रचयिता पं० रामनरेश त्रिपाठी हैं। 3. प्रस्तुत कविता के संदेश में मुख्य बात मातृभूमि की सेवा है। 4. प्रस्तुत कविता में निराश लोगों के विषय में उनमें फिर से उत्साह जगाने को कहा गया है। 5. प्रस्तुत कविता में बेसहारा लोगों के विषय में कहा गया है कि उन्हें प्रयत्न करके पुनः मेहनत से कार्य करने को प्रेरित किया जाएगा। **लिखित–**1. परोपकारी व देशभक्त लोग अमर कहलाते हैं। 2. 'हम उनको गले लगाएँगे' से अभिप्राय है कि हम उनका सहारा बनेंगे। 3. 'उद्यम का दीप जलाएँगे' से तात्पर्य है कि प्रयत्न करके असहाय लोगों में आशा और उत्साह जगाएँगे। 4. 'बुझे दिमागों' से कवि का अभिप्राय है 'आशा न रखने वाले'। 5. आज़ादी के दीवानों का कर्तव्य है मातृभूमि की रक्षा व सेवा के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर देना। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. हम कुछ करके दिखलाएँगे। मरने वालों की दुनिया में हम, अमरों में नाम लिखाएँगे। 2. जो धुन के पक्के-सच्चे थे हम उनका मान बढ़ाएँगे। **(घ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ **भाषा-बोध–(क)** 1. दुनिया 2. छाया 3. घर 4. दीप 5. आज़ादी 6. जग **(ख)** 1. सु 2. प्र 3. अ 4. अ 5. कु 6. कु **(ग)** 1. निर्धन 2. इच्छा 3. अंधकार 4. दीपक 5. रास्ता 6. स्वतंत्रता **(घ)** 1. हमें अपने अरमान पूरे करने का प्रयास करना चाहिए। 2. हमें मातृभूमि की सेवा में अपना सर्वस्व बलिदान कर देना चाहिए। 3. स्वतंत्रता सेनानियों ने आज़ादी पाने में बहुत योगदान दिया। 4. भारतीय वीर होते हैं। 5. हमें प्रत्येक कार्य उत्साह से करना चाहिए। **(ङ)** 1. नासमझ 2. दुःखी 3. अपूर्ण 4. प्रकट 5. कुपुत्र 6. कुपात्र 7. अनुपयोगी 8. असफल 9. चल 10. प्रथम **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

9. काकी

(क) मौखिक–1. यह कोहराम उसकी माँ की मृत्यु के विलाप का था। 2. श्यामू को यह कहकर दिलासा दिया गया था कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई हैं। 3. श्यामू पतंग इसलिए मँगवाना चाहता था क्योंकि वह सोच रहा था कि वह पतंग के सहारे अपनी काकी को भगवान राम के यहाँ से नीचे ले आएगा। 4. पतंग की डोर के साथ रस्सी बाँधने के पीछे सोच थी कि डोर पतली होने के कारण टूट सकती है। मोटी रस्सी को पकड़कर काकी आराम से नीचे उतर आएँगी। 5. पतंग व रस्सी हेतु पैसे चोरी करके जुटाए गए। 6. विश्वेश्वर ने श्यामू को तमाचे उनके कोट से पैसे चोरी करने के लिए लगाए। **लिखित**–1. घर में करुण विलाप श्यामू की माँ की मृत्यु के कारण हो रहा था। 2. माँ के ऊपर गिरकर श्यामू उन्हें उठाकर नहीं ले जाने दे रहा था। 3. घर के बुद्धिमान गुरुजनों ने श्यामू को समझाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है। 4. भोला को चवन्नी देकर श्यामू बोला, ''अपनी जीजी से कहकर एक पतंग और डोर मँगा दो। देखो, अकेले में लाना कोई जान न पाए।'' 5. भोला ने पतंग की डोर में रस्सी बाँधने का सुझाव इसलिए दिया क्योंकि उसके अनुसार मोटी रस्सी के सहारे काकी नीचे उतर सकती थी, जबकि डोर टूट सकती थी। 6. भोला ने रस्सी के विषय में विश्वेश्वर से कहा, ''इन्होंने (श्यामू) ने मँगाई थी। कहते थे, पतंग को तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे।'' **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. श्यामू 2. रुलाई 3. पतंग 4. कोट 5. मोटी रस्सी **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) **भाषा-बोध–(क)** 1. भोला 2. श्यामू 3. विश्वेश्वर 4. लोगों 5. वे **(ख)** 1. श्यामू घर में हो रहे शोर का रहस्य न समझ सका। 2. श्यामू के घर में कोहराम मचा हुआ था। 3. काकी की मृत्यु पर श्यामू ने बहुत उपद्रव किया। **(ग)** 1. छोटा 2. बड़ी 3. महीन 4. लाल 5. बड़े 6. हज़ारों 7. क्रूर 8. कीमती **(घ)** 1. स्वाधीन 2. अपूर्ण 3. प्रथम 4. प्रकट 5. अनुपयोगी 6. नासमझ **(ङ)** 1. भूतकाल 2. भूतकाल 3. भविष्यत्काल 4. भविष्यत्काल 5. वर्तमानकाल 6. वर्तमानकाल **विषय- संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

10. संसार पुस्तक है

(क) मौखिक–1. प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य लेखक द्वारा अपनी पुत्री को इस दुनिया की व इस दुनिया के छोटे-बड़े देशों की कथाओं से परिचित कराना है। 2. प्राकृतिक रूप से लुढ़कते पत्थर का रूप चमकीला, चिकना व आकार गोल होता है। 3. किसी पत्थर को तोड़ने पर उसके छोटे टुकड़े का रूप खुरदुरा और आकार नुकीला होता है। 4. पुराने ज़माने की बातें पहाड़, समुद्र, नदियों, जंगलों, जानवरों की पुरानी हड्डियों आदि से जानी जा सकती हैं। 5. संसार का हाल जानने का असली तरीका पुस्तकें पढ़ना बताया गया है। **लिखित**–1. 'संसार एक पुस्तक है' से अभिप्राय है कि संसार की वस्तुओं को देखकर हम बहुत कुछ समझ व सीख सकते हैं। 2. पत्थर का टुकड़ा गोल व चिकना नदी के तल में लुढ़कते रहने पर उसके किनारे घिसने पर हो जाता है। 3. जब पत्थर का टुकड़ा नदी में अत्यधिक दूरी तक बहता रहता है तो वह घिस-घिसकर बालू बन जाता है। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. नुकीला 2. छोटा टापू 3. आदमी, जानवर 4. पत्थर 5. दरिया **(घ)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (अ) **भाषा-बोध–(क)** 1. इंग्लैंड (संज्ञा), छोटा (विशेषण) 2. हिंदुस्तान (संज्ञा), बड़ा (विशेषण 3. किताबों (संज्ञा) मोटी (विशेषण) 4. धरती (संज्ञा), गरम (विशेषण) 5. पात्रों (संज्ञा), सुंदर (विशेषण) **(ख)** 1. जातिवाचक संज्ञा 2. पदार्थवाचक संज्ञा 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. व्यक्तिवाचक संज्ञा 5. जातिवाचक संज्ञा **(ग)** 1. अचल, गिरि, पर्वत 2. धरा, पृथ्वी, वसुंधरा 3. पाषाण, प्रस्तर, शिलाखंड **(घ)** 1. नेहरू जी 2. नेता जी 3. अध्यापक 4. नौकर 5. बंदर **(ङ)** 1. रावण 2. पत्र 3. चोर 4. गीत 5. आशीर्वाद **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

11. काँटों में राह बनाते हैं

(क) मौखिक–1. विपत्ति का अर्थ है–संकट का समय। 2. नहीं 3. विपत्ति से घबराकर कायर मैदान छोड़ जाते हैं। 4. विपत्ति का सामना वीर–साहसी लोग कर पाते हैं। 5. मनुष्य के सामने 'कठिन' कुछ भी नहीं है। **लिखित**–1. कायर वह होता है जो विपत्ति आने पर घबरा जाता है और डरकर उसका सामना नहीं करता है। 2. वीर लोगों का स्वभाव निडरता व धीरता का होता है। 3. मनुष्य के सामने विघ्नों की यह स्थिति मानी जाती है कि कैसा भी विघ्न मनुष्य के मार्ग में टिक नहीं सकता। 4. मनुष्य के भीतर अनेक प्रखर गुण छिपे हुए पाए जाते हैं। **(ख)** 1. कायर को ही दहलाती है। सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते। 2. टिक सके आदमी के मग में। खम ठोंक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़।। 3. हैं छिपे मानवों के भीतर, मेंहदी में जैसे लाली हो।। वर्तिका बीच उजियाली हो।। **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (अ) 4. (य) 5. (ब) **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. (स) 2. (अ) 3. (स) **भाषा–बोध–(क)** 1. वर्तमानकाल 2. भविष्यत्काल 3. भविष्यत्काल 4. भविष्यत्काल 5. भूतकाल 6. वर्तमानकाल **(ख)** 1. दहाड़ रहा था। 2. उछल रहा था। 3. देंगे 4. आए हैं। 5. पिला रहा है। 6. गरज़ते हैं। **(ग)** 1. कहाँ जा रहे हो? यहाँ आओ। 2. अरे! तुम तो बड़े डरपोक हो। 3. भूख के मारे चक्कर आ रहे हैं। 4. अजय, राजू, मोहित और नीलू भाई हैं। 5. बैठे–बैठे हरिभजन ही कर लिया करो। **(घ)** 1. बाती 2. रुकावट 3. तेज़ 4. वीर–साहसी लोग 5. डरपोक 6. धीरज **(ङ)** 1. साहसी 2. अच्छी 3. सच्ची 4. ऊँची 5. सफ़ेद 6. नीला 7. शुद्ध 8. गरम 9. स्वादिष्ट **विषय–संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

12. साँप से सामना

(क) 1. लेखक से उनके भाई ने कहा था, ''इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर के डाकखाने में डाल आओ। तेज़ी से जाना, जिससे कि पत्र शाम की डाक से निकल जाएँ।'' 2. कुरते में जेब न थी इसलिए चिट्ठियाँ लेखक ने टोपी में रख ली थीं। 3. साँप के विषय में लेखक का विचार था कि मैं नीचे पहुँचते ही साँप को मार दूँगा। 4. कुएँ में उतरते समय लेखक को साँप का तनिक भी भय नहीं था। उसको मारना वह बाएँ हाथ का खेल समझता था। कुएँ के धरातल से जब लेखक चार–पाँच गज ऊपर था, तब ध्यान से देखा। उसकी अक्ल चकरा गई। साँप धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। पूँछ और पूँछ के पास का भाग धरती पर था, आगे का आधा भाग ऊपर उठा हुआ लेखक की प्रतीक्षा कर रहा था। 5. चिट्ठी के पास डंडा पहुँचते ही साँप ने फुँफकार के साथ डंडे पर फन से प्रहार किया। **लिखित**–1. लेखक ने कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और एक हाथ से टोपी उतारते हुए ढेला कुएँ में गिराया। टोपी हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई थीं। 2. चिट्ठियाँ कुएँ में गिर जाने पर लेखक यह सोचकर डर रहा था कि अब घर जाकर रुई की तरह धुनाई होगी। 3. लेखक धोती के सहारे लटककर कुएँ में उतरा। 4. डंडा चलाने के लिए काफ़ी स्थान चाहिए, जिसमें वह घुमाया जा सके। कुएँ में डंडा चलाने के लिए स्थान न था। 5. लेखक एक–एक इंच सरककर अपनी भुजाओं के बल ऊपर आया। फिर आकर वह थोड़ी देर बेहाल होकर पड़ा रहा। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. मक्खनपुर 2. डंडा 3. टोपी 4. दो 5. चिट्ठियाँ **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✗ **(ङ)** 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) **भाषा–बोध–(क)** 1. साँप 2. मैं 3. छोटा भाई 4. वह 5. कर्मचारी **(ख)** 1. निडर 2. निर्लज्ज 3. डरपोक 4. लेखक 5. सपेरा **(ग)** 1. साँप को मारना लेखक के बाएँ हाथ का खेल था। 2. साँप को फन उठाए देख लेखक की अक्ल चकरा गई। 3. चिट्ठियों के कुएँ में गिरते ही लेखक पर बिजली–सी गिरी। **(घ)** 1. ज़मीन, भूमि, धरा 2. सर्प, भुजंग, व्याल **(ङ)** 1. धोतियाँ 2. कुएँ 3. चिट्ठियाँ 4. डंडे 5. कुरते 6. भुजाएँ 7. रस्सियाँ 8. संभावनाएँ **विषय–संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

13. हबूचंद और गबूचंद

(क) मौखिक–1. राजा को यह तकलीफ़ थी कि धरती पर पाँव रखते ही उनके पाँवों में धूल लग जाती थी। 2. राज्य से धूल को समाप्त करने की राजा की आज्ञा सुनकर गबूचंद की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। 3. इक्कीस लाख भिश्तियों को बुलवाया गया। 4. भिश्ती मशक में पानी भरकर लाने वाले आदमी होते हैं। 5. चर्मकार ने चमड़े के आवरण से महाराज के पैरों को ढक दिया और महाराज से धूल में चलने की प्रार्थना की। महाराज थोड़ा चलकर जब लौटे तो चर्मकार ने चमड़े का आवरण उतार दिया। **लिखित–**1. हबूचंद राजा था और गबूचंद उसका मंत्री था। 2. राजा धूल को नापसंद इसलिए करता था क्योंकि वह सोचता था कि वह राजा है इसलिए उसके पैरों में धूल नहीं लगनी चाहिए। 3. धुरंधर पंडितों का दल इस नतीजे पर पहुँचा कि धरती से धूल-मिट्टी उठ गई तो फसल कहाँ पैदा होगी; सब कुछ वीरान हो जाएगा। 4. प्रजा ने धूल हटाने के लिए झाड़ुओं से झाड़-फटकार की। 5. भिश्तियों के कार्य से ताल-तलैयों में कीचड़-ही-कीचड़ रह गया। जल के जीव जल के बिना मरने लगे और थल के प्राणी पानी की बाढ़ में डूबने-उतरने लगे। हाट बाज़ार के लेन-देन पर पानी फिर गया। सब ओर ठंडक हो जाने से सरदी-बुखार के कारण लोग मरने लगे। 6. चर्मकार ने चमड़े के आवरण से महाराज के पैरों को ढक दिया और महाराज से धूल में चलने की प्रार्थना की। महाराज थोड़ा चलकर जब लौटे तो चर्मकार ने चमड़े का आवरण उतार दिया। आवरण के कारण राजा के पैरों पर धूल नहीं लगी थी। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. गबूचंद ने 2. हबूचंद ने 3. हबूचंद ने 4. पंडितों ने 5. चर्मकार ने **(घ)** 1. प्रजा 2. साढ़े सत्रह लाख 3. सूरज 4. खिड़की 5. धरती **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) **भाषा-बोध–(क)** 1. भारतीय 2. मानवीय 3. शासकीय 4. राष्ट्रीय 5. दर्शनीय 6. ईश्वरीय **(ख)** 1. क्रोध 2. प्रदेश 3. प्रभाव 4. सम्मान 5. धर्म 6. चिंता **(ग)** 1. (1) राजा (2) मंत्री (3) पंडित (4) चर्मकार 2. (1) हबूचंद (2) गबूचंद **(घ)** 1. टोलियाँ 2. बिछौने 3. रस्सियाँ 4. बिल्लियाँ 5. पीपे 6. कटघरे **(ङ)** 1. वह अपने पिता से हर बात में आगे है। 2. राजेश के तीनों भाई अद्‌वितीय विद्‌वान हैं। 3. कर्मकांड उनकी जीविका का आधार है। 4. गाँव में कोई ब्लड-बैंक नहीं है। 5. वे लोग मुफ़्त का वेतन खाते हैं। 6. उसका आचरण सदैव अच्छा रहा है। **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ–**स्वयं करें।

14. अपना-अपना काम

(क) मौखिक–1. धोबी के पास कुत्ता व गधा थे। 2. गधा दिन भर घर से घाट, घाट से घर कपड़े ढोता रहता था और कुत्ता दरवाज़े पर बँधा-बँधा भौंका करता था। 3. धोबी गधे को मारता था। 4. धोबी कुत्ते को दूध व रोटी देकर उससे अच्छा व्यवहार करता था। 5. गधे ने चोरों के आने पर चीपों-चीपों गाकर अवसर का लाभ उठाया। 6. गधे को अवसर का लाभ उठाने पर धोबी द्‌वारा डंडे से मार खानी पड़ी। **लिखित–**1. गधा कुत्ते से इसलिए ईर्ष्या करता था क्योंकि धोबी कुत्ते की बहुत देखभाल करता और उसे मारता था। 2. धोबी गधे व कुत्ते से समान व्यवहार नहीं करता था क्योंकि वह कुत्ते को रोटी व दूध देता था और गधे की टाँगें बाँधकर छोड़ देता था। 3. गधा कुत्ते के विषय में सोचा करता था-यदि कुत्ता, मेरे बदले काम करे। घर से घाट, घाट से घर को बोझा लेकर चले तो बहुत ही आनंद आए। 4. चोरों के आने पर गधे ने चीपों-चीपों करके शोर किया। 5. चोरों के भागने पर गधा पूँछ हिलाकर खुश होकर धोबी के पास गया। 6. अंत में धोबी ने कई दिनों तक पहले से ज़्यादा गधे पर बोझा लादा और उसे तंग किया। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) **(घ)** 1. और भाग्य से बँधा नहीं था, कुत्ता भी दरवाज़े पर।। 2. बस यह आया ध्यान, गदहे ने चीपों-चीपों तक टेरा।। 3. सोचा उसने आज मात दी, मैंने तो कुत्ते को। 4. गट्‌ठर लादे घूमेगा वह, बाहर गाँव, गली, घर, घाट। 5. धोबी ने डंडों से उसका, खूब किया था स्वागत तब। **(ङ)**

1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-बोध– (क)** 1. कुतिया 2. गधी 3. धोबिन 4. ऊँटनी 5. चोरनी 6. सम्राज्ञी 7. शिक्षिका 8. कवयित्री 9. पुजारिन 10. पंडिताइन **(ख)** 1. गधा 2. धोबिन 3. कुत्ता 4. शिक्षिका 5. रमा **(ग)** 1. धोबी, घर, पशु 2. चोर 3. व्यापारी, सामान 4. कबूतर, जाल 5. चिड़िया **(घ)** 1. गर्दभ, रासभ, खर 2. श्वान, कुक्कुर, शुनक **(ङ)** 1. गाड़ीवान 2. धनवान 3. श्रद्धावान 4. बलवान 5. गुणवान 6. विद्यावान **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

15. कुत्ते की कहानी

(क) मौखिक–1. कुत्ते ने अपना नाम कल्लू बताया। 2. कुत्ते ने अपने भाई का नाम जकिया बताया। 3. कुत्ते का पालन-पोषण एक पंडित के यहाँ हुआ था। 4. कल्लू की माता के प्रति लोगों का व्यवहार बहुत कठोर था। 5. भ्रष्ट हुए भोजन को गरीबों में बाँट दिया गया था। 6. लड़कों का व्यवहार कल्लू के प्रति अच्छा था। **लिखित**–1. अपने जन्म के समय का कल्लू ने यह विवरण दिया–जब मेरा जन्म हुआ तो मेरी आँखें और कान बंद थे। जिस बिछावन पर मैं लेटा था, वह रुई की भाँति नरम था। सरदी ज़रा भी न लगती थी। मैं दिल में समझ रहा था कि किसी बड़े घर में मेरा जन्म हुआ है लेकिन जब आँखें खुलीं तो मैंने देखा कि एक भाड़ की राख में अपनी माता की छाती से चिपका हुआ पड़ा हूँ। 2. भूख सताने पर कल्लू की माता कभी-कभी चोरी से घरों में घुस जाती और खाने को जो मिल जाता लेकर निकल भागती। 3. उत्सव में जब लोग अपने-अपने आसन पर जा बैठे और भोजन परोसा जाने लगा। तब उसी समय कल्लू की माता वहाँ पहुँची। उसकी माता भागी नहीं, पूँछ हिलाने लगी और वहीं बैठ गई। उचित अवसर देखकर वह दबे पाँव दालान में जा पहुँची। उसे देखकर दो-तीन आदमी डंडे लेकर दौड़े। वह बैठे हुए आदमियों के बीच में से होकर मोरी के रास्ते बाहर निकल आई। 4. कल्लू की माता के भोजन के पास से गुजरने पर भोजन भ्रष्ट हो गया था। 5. बनिए ने कल्लू की माता के साथ निर्मम व्यवहार इसलिए किया क्योंकि उसके भोजन के पास से निकलने पर लोगों ने भोजन को भ्रष्ट मान लिया। वह भोजन किसी ने नहीं खाया और गरीबों में बाँट दिया गया। इससे बनिए का बहुत नुकसान हुआ। 6. चोरों को कल्लू ने पंडित जी को जगाकर व उनके पास ले जाकर रोका। 7. चोरी हुए सामान का कल्लू ने पता स्वयं गड्ढे में उतरकर व एक कटोरी मुँह में लाकर बताया। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (अ) 4. (य) 5. (ब) **(ग)** 1. खाने 2. नरम 3. करनेवाले 4. पत्तलों 5. गरीबों **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **(ङ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (स) **भाषा-बोध–(क)** 1. काला, कमज़ोर 2. अनजान 3. भ्रष्ट, गरीबों 4. सैकड़ों 5. एक **(ख)** 1. भूतकाल 2. भूतकाल 3. वर्तमानकाल 4. भूतकाल 5. भविष्यत्काल **(ग)** 1. लोग 2. आदमी, डंडे 3. गाँव, उत्सव 4. भोजन 5. बनिया **(घ)** 1. बनिया 2. भाई 3. बिछावन 4. टुकड़ा 5. आदमी 6. रात **(ङ)** 1. भूखा 2. भीतरी 3. निर्दयी 4. गरीब **(च)** 1. भ्रष्ट भोजन कुलीनों ने नहीं खाया। 2. कल्लू स्वामिभक्त कुत्ता था। 3. उत्सव में लोग भोजन खाने बैठ गए। **(छ)** 1. निर्दयी 2. भूखी 3. प्यासी 4. मतलबी **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

16. रहीम के दोहे

(क) मौखिक–1. प्रस्तुत पाठ में कवि रहीम के दोहे संकलित हैं। 2. यदि किसी स्थान पर सम्मान न मिले तो वहाँ से तुरंत प्रस्थान करना चाहिए। 3. चंदन के पेड़ पर सर्प के लिपटने का कोई प्रभाव इसलिए नहीं पड़ता क्योंकि वह उत्तम प्रकृति वाला होता है। 4. जिन लोगों के मुँह से कुछ माँगने वालों के लिए 'नहीं निकलता है, ऐसे लोगों को रहीम ने 'मरे हुए' कहा है। **लिखित**–1. उत्तम प्रकृति के लोगों की यह पहचान होती है कि उन पर बुरी संगति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 2. ज्ञानी लोग परोपकार के लिए संपत्ति एकत्र करते हैं। 3. बड़ी वस्तु के प्राप्त हो जाने पर छोटी वस्तु की उपेक्षा

इसलिए नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रत्येक वस्तु का अपना अलग महत्व होता है, जैसे जो काम सूई कर सकती है वह काम तलवार नहीं कर सकती। 4. प्रेम का संबंध क्रोध में इसलिए नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि पुनः संबंध जुड़ जाने पर पहले जैसा विश्वास व लगाव नहीं रहता। 5. रहीम ने थोड़े दिनों की विपदा को भली इसलिए बताया है क्योंकि विपदा में ही संसार में अपने भले-बुरे तथा अपने-पराए का ज्ञान होता है। **(ख)** 1. घटत मान देखिअ जबहि, तुरतहि करिअ पयान। 2. हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय। 3. उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं। **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(घ)** 1. बड़ी वस्तु के प्राप्त हो जाने पर छोटी वस्तु की उपेक्षा इसलिए नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रत्येक वस्तु का अपना अलग महत्व होता है, जैसे जो काम सूई कर सकती है वह काम तलवार नहीं कर सकती। 2. जिस प्रकार पेड़ अपने फल नहीं खाते हैं, तालाब अपना पानी नहीं पीते हैं। उसी प्रकार सज्जन लोग परोपकार के लिए धन एकत्र करते हैं। **(ङ)** 1. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग। चंदन विष व्यापत नहिं, लिपटे रहत भुजंग।। 2. रूठे सुजन मनाइए, जो रूठैं सो बार। रहिमन फिर-फिर पोइए, टूटे मुक्ताहार।। 3. रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय। सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय।। **(च)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) **भाषा-बोध–(क) तलवार**–1. खड्ग 2. असि 3. चंद्रहास **वृक्ष**–1. पेड़ 2. तरु 3. गाछ **भुजंग**–1. साँप 2. सर्प 3. व्याल **(ख)** 1. कार्य 2. ज़हर 3. पानी 4. भलाई 5. छोटा 6. अच्छी **(ग)** 1. घृणा 2. अमृत 3. बड़ी 4. दुर्जन 5. सरल 6. कटु **(घ)** 1. भूतकाल 2. भविष्यत्काल 3. वर्तमानकाल 4. वर्तमानकाल 5. भविष्यत्काल **(ङ)** 1. लिखा, सकर्मक 2. सो गया, अकर्मक 3. उड़ गई, अकर्मक 4. लाया, सकर्मक 5. उड़ गया, सकर्मक **(च)** 1. भारतीय 2. जापानी 3. बनारसी 4. राजस्थानी 5. पंजाबी 6. पाकिस्तानी **विषय- संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

17. चिपको आंदोलन

(क) मौखिक–1. अनुकूल पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। 2. पर्यावरण में प्रतिकूल बदलाव हमारे जीवन पर सीधा प्रभाव डालता है। परिस्थितियाँ हमारे जीवन के प्रतिकूल होने लगती हैं और शरीर अस्वस्थ होकर बीमारियों का घर बन जाता है। 3. पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और लगातार नष्ट हो रही वन संपदा के विरोध में उत्तराखंड के चमोली जिले के किसानों ने एक आंदोलन चलाया था। इस आंदोलन में लोग पेड़ों को ठेकेदारों द्वारा काटने से बचाने के लिए उनसे लिपट जाते थे और कहते थे कि पहले उनके प्राण लिए जाएँ, फिर पेड़ों को काटा जाए। इसे 'चिपको' आंदोलन कहा गया। 4. चिपको आंदोलन को उत्तराखंड के चमोली जिले के क्षेत्रों में चलाया गया था। इसे मुख्य रूप से गौरा देवी, सुंदर लाल बहुगुणा व चंडी प्रसाद भट्ट ने चलाया था। 5. पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और खनन के कारण उत्तराखंड के जिलों में विनाशकारी बाढ़ आई थी। **लिखित**–1. चिपको आंदोलन पेड़ों की कटाई को रोकने के लिए चलाया गया था। 2. पेड़ काटने वालों को रोकने के लिए गौरा देवी और उनके साथियों ने पेड़ों से चिपककर उनका विरोध किया। 3. उत्तराखंड के तीन जिलों में लोगों की आय के साधन हैं–मवेशी पालन, लघु वन उपज; जैसे जड़ी-बूटी, गोंद, शहद, चारे के लिए घास-फूस आदि। 4. चीन से युद्ध के पूर्व उत्तराखंड के लोग तिब्बत और चीन के साथ ऊन और कुछ हथकरघा, हाथ से शिल्पकारी का व्यापार कर पैसे कमाते थे। परंतु भारत-चीन युद्ध के बाद यहाँ के लोगों का तिब्बत और चीन के साथ व्यापार खत्म हो गया था। परिणामतः लोग पूरी तरह केवल वनों पर निर्भर हो गए थे। उनकी आजीविका का एकमात्र साधन वन ही थे। 5. सरकार को भारत-चीन सीमा की सुरक्षा को लेकर ऐसी कई सड़कों का निर्माण करवाना पड़ा था, जिससे यहाँ के लोगों को किसी प्रकार का खतरा न रहे। इससे एक ओर जहाँ सुरक्षा के इंतज़ाम हो गए, वहीं दूसरी

ओर हिमालय में खड़ी अथाह वन संपदा सरकार, ठेकेदारों और माफ़ियाओं की नज़र में आ गई। जिसके बाद हिमालय में पेड़ों की ठेकेदारी प्रथा से अंधाधुंध कटाई के साथ-साथ असुरक्षित खनन, सड़क-निर्माण, जल-विद्युत परियोजनाएँ और पर्यटन समेत अन्य विकास कार्यों से वनों का विनाश होना शुरू हो गया। 6. महाप्रलय के बाद उत्तराखंड के निवासियों ने वन संरक्षण का महत्व समझा और जाना कि पर्यावरण को सुरक्षित रखना उनके लिए कितना ज़रूरी है। अत: जब बाद में वर्ष 1970 के दशक में एक बार फिर पेड़ों की कटाई होने लगी, तो बड़ी संख्या में लोग वन-संपदा को बचाने के लिए आगे आए और पेड़ों से लिपटकर उनकी कटाई का जमकर विरोध किया। 7. महिलाओं ने पर्यावरण को संरक्षित करने और पेड़ों को बचाने में रखी जानेवाली अपनी राय की हिस्सेदारी की माँग की। उनका तर्क था कि महिलाएँ ही ईंधन, चारे, पानी आदि को एकत्र कर भोजन का बंदोबस्त करती हैं। महिलाओं का जंगल से अटूट संबंध है। मानव जीवन जंगलों पर निर्भर है। बिना पर्यावरण सुरक्षा के मनुष्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। अत: वनों से संबंधित जो फ़ैसले लिए जाएँ, उन सभी में महिलाओं की राय अवश्य ली जानी चाहिए। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. वृक्ष 2. वृक्षों 3. वनों 4. खत्म 5. महाप्रलय **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **(ङ)** 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) **भाषा-बोध-(क)** 1. भारत कई देशों के साथ व्यापार करता है। 2. विदेशी व्यापारी भारत आते रहते हैं। 3. पेड़ों से पर्यावरण शुद्ध रहता है। 4. पेड़ों की कटाई रोकने के लिए 'चिपको आंदोलन' चलाया गया। 5. गाय अहिंसक पशु है। **(ख)** 1. अस्वस्थ 2. प्रतिकूल 3. अहिंसक 4. अप्राकृतिक 5. अहिंसा 6. सामान्य **(ग)** 1. पर्वतराज, गिरिराज, नगेश 2. हवा, समीर, अनिल 3. कामिनी, औरत, वनीता **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

18. बातें ज्ञान-विज्ञान की

(क) मौखिक–1. रचना ने 'आग की लौ' विषय पर अपने विचार प्रकट किए। 2. किसी वस्तु या पदार्थ के जलने पर लौ ऊपर की ओर जाती है। 3. फूँक मारने पर लौ हिलने लगती है या बुझ जाती है। 4. इंग्लैंड की प्रचलित मुद्रा का नाम पाउंड है। 5. टी०वी दूर बैठकर देखना चाहिए। 6. टी०वी० देखते समय कमरे में प्रकाश हल्का रखना चाहिए। **लिखित**–1. जब पदार्थ या वस्तु जलती है, तो उससे जलने वाले हिस्से से कई गैसें उत्पन्न होती हैं। ये गैसें रासायनिक क्रियाओं द्वारा ऊष्मा और प्रकाश पैदा करती हैं। जलती हुई ये गैंसे हमें लौ के रूप में दिखाई देती हैं। जलने की क्रिया से पैदा हुई ये गैसें हवा से हल्की होती हैं। इनके हल्केपन के कारण ये गैसें हवा में ऊपर उठती रहती हैं। इनके ऊपर उठने से लौ भी सदा ऊपर की ओर ही उठती है। 2. फूँक मारने पर आग की लौ इसलिए हिलने लगती है या बुझ जाती है क्योंकि मुँह से निकलने वाली हवा लौ की गरम गैसों को तितर-बितर कर देती है। 3. प्रत्येक देश की मुद्रा अन्य देशों से भिन्न होती है। जब दूसरे देश में जाते हैं, तो अपने देश की मुद्रा का प्रयोग नहीं कर पाते इसलिए वहाँ मुद्रा विनिमय करना पड़ता है। 4. टी०वी० स्क्रीन से आने वाले प्रकाश के कारण आँखें चकाचौंध हो जाती हैं। टी०वी० के समीप बैठकर देखने पर यह चकाचौंध और भी अधिक हो जाती है, जिससे आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। 5. शरीर को चेतना के साथ कार्य करने के लिए आवश्यक है कि मस्तिष्क में रक्त संचार उचित प्रकार से होता रहे। जब तक हमारे मस्तिष्क में रक्त की उचित मात्रा पहुँचती रहती है, तब तक हमारी सभी क्रियाएँ सामान्य होती रहती हैं। यदि मस्तिष्क में रक्त पहुँचने में कोई बाधा आ जाए, तो सामान्य क्रियाओं में अंतर आ जाता है। जब मस्तिष्क में रक्त उचित मात्रा में नहीं पहुँचता, तो व्यक्ति को मूर्च्छा आती है। 6. मूर्च्छित व्यक्ति को साफ़ व ताज़ा हवा देनी चाहिए और उसके कपड़े ढीले कर देने चाहिए। **(ख)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ग)** 1. नहीं थकती हैं 2. 4, 3. मूर्च्छा 4. हल्की 5. अनुपस्थिति **(घ)** 1.

✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा-बोध–(क)** 1. छात्र, छात्राएँ, हाथ 2. स्कूल, घंटा 3. रचना 4. मोमबत्ती, प्रकाश 5. कक्षा **(ख)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ) **(ग)** 1. स्त्रीलिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग 7. स्त्रीलिंग 8. स्त्रीलिंग 9. स्त्रीलिंग 10. पुल्लिंग 11. पुल्लिंग 12. स्त्रीलिंग **(घ)** 1. बैठ गए 2. बताऊँगा। 3. रखेगा। 4. बताई 5. उठती है **(ङ)** 1. अँधेरे 2. मूर्च्छित 3. ताज़ा 4. तीसरा 5. नुकीली 6. नई 7. कई **(च)** 1. कक्षाएँ 2. घंटे 3. अध्यापिकाएँ 4. छात्राएँ 5. गैसें 6. क्रियाएँ 7. मोमबत्तियाँ 8. नीतियाँ **(छ)** 1. छात्र और छात्राएँ 2. रात और दिन 3. अध्यापक और अध्यापिकाएँ 4. माता और पिता 5. भाई और बहन 6. शत्रु और मित्र **विषय-संवर्धक गतिविधियाँ**–स्वयं करें।

हिंदी–6

1. तब याद तुम्हारी आती है (कविता)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता के रचयिता रामनरेश त्रिपाठी हैं। 2. संपूर्ण वातावरण का केंद्र-बिंदु कवि प्रभु को मानता है। 3. पक्षीवृंद प्रात:काल चहचहाकर खुशी के गीत गाने की क्रिया में तल्लीन प्रतीत होते हैं। 4. ठंडी हवा मस्ती ढोकर लाती प्रतीत होती है। 5. कविता में बूँदें छम-छम करके गिरती बताई गई हैं। **लिखित–(क)** 1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) **(ख)** 1. कवि ने कलियों का चित्रण इन शब्दों में किया है–कलियाँ दरवाज़े खोल-खोल, जब झुरमुट से मुसकाती हैं। 2. 'कलियाँ दरवाज़े खोल-खोल' में पंखुड़ियों को चित्रित किया गया है। 3. 'जग के सिरजनहार' का अर्थ है संसार के निर्माता। **(ग)** 1. कवि के द्वारा चित्रित प्रात:काल के तीन दृश्य हैं–(1) चिड़ियों का चहचहाना (2) कलियों का खिलना (3) ठंडी हवा का चलना 2. कवि नदियों की मस्ती का इस प्रकार वर्णन कर रहा है–झरने जब झर-झर झरते हैं, नदियाँ मस्ती में बहती हैं। 3. वर्षा में कवि ने यह सौंदर्य देखा कि वर्षा छम-छम की मधुर ध्वनि के साथ होती है। 4. तारों के प्रकटीकरण के विषय में कवि ने कहा है–चमकते तारों की महफिल रात सजाती है। 5. ओस रूपी घास की तुलना करते समय कवि के भाव आश्चर्य के हैं। **(घ)** 1. कवि को इन प्राकृतिक दृश्यों ने मुग्ध किया-चिड़ियों का गीत गाना, कलियों का खिलना, बारिश की बूँदें गिरना, बिजली का चमकना, बागों और मैदानों में हरियाली का लहराना, ठंडी-ठंडी हवा का चलना, तारों का चमकना, चाँद का निकलना, ओस का हरी घास पर गिरना, झरनों का झरना तथा नदियों का बहना। 2. 'सिरजनहार की याद आने' से कवि का अभिप्राय है-वातावरण के सुंदर दृश्यों को देखकर 'प्रभु की याद आना।' चूँकि संसार की सभी वस्तुओं, प्राणियों की रचना प्रभु ने की है। इसलिए कवि द्वारा चिड़ियों के खुशी के गीत गाने, कलियों के खिलने, वर्षा की बूँदों के छम-छम गिरने, बिजली के चम-चम चमकने, मैदानों, बागों में हरियाली छाने, ठंडी हवा चलने, तारों के चमकने आदि दृश्यों को देखने पर सिरजनहार (रचनाकार) की याद आती है। 3. कवि ने वर्षा के सौंदर्य का चित्रण इन शब्दों में किया है–जब छम-छम बूँदें गिरती हैं। बिजली चम-चम कर जाती है। मैदानों में, वन-बागों में, जब हरियाली लहराती है। 4. चाँद और तारे रात को अपने प्रकाश से सुंदर बनाते हैं। अनगिनत तारों को आसमान में देखकर लगता है जैसे रात तारों की महफ़िल हो रही हो तथा चाँद की रोशनी से सारी दिशाएँ दमकती सी प्रतीत होती हैं। **(ङ)** 1. प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि फूलों की खुशबू घर के आस-पास तक फैल जाती है। 2. इस पंक्ति का आशय है कि अलग-अलग स्थानों की नदियों का जल सागर में मिलकर एक हो जाता है। **(च) प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ रामनरेश त्रिपाठी द्वारा रचित कविता 'तब याद तुम्हारी आती है' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि रात के सौंदर्य का वर्णन कर रहा है। **व्याख्या**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि जब तारों के चमकने और चाँद के निकलने से सारी

दिशाएँ प्रकाशमान हो जाती हैं और जब हरी घास पर ओस की बूँदें मोती की तरह चमकती हैं तब संसार के रचयिता प्रभु मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है। **(छ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. खग, विहग, चिड़िया 2. दामिनी, तड़ित, चपला 3. वायु, समीर, हवा 4. सिंधु, समुद्र, रत्नाकर 5. शशि, चंद्रमा, राकेश **(ख)** 1. झरने, करने, भरने 2. बिजली, अगली, पिछली 3. गाती, खाती, भाती 4. लहराती, सहलाती, बहलाती **(ग) विशेषण–**1. हरी 2. चमकीले 3. ठंडी 4. सुंदर 5. गहरी **विशेष्य–**1. घास 2. मोती 3. हवा 4. फूल 5. नदी **(घ)** 1. कली 2. लहर 3. बूँद 4. तारा 5. बात 6. चिड़िया **भाव/विचार**-स्वयं करें।

2. अहिंसा की विजय (कहानी)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. महात्मा बुद्ध मगध की राजधानी राजगृह से चलकर श्रावस्ती आए थे। 2. श्रावस्ती कोशल की राजधानी थी। 3. वर्तमान अयोध्या के आस-पास का प्रदेश कोशल कहलाता था। 4. कोशल का राजा प्रसेनजित था। 5. कोशल नरेश महात्मा बुद्ध का शिष्य था। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) **(ख)** 1. अंगुलिमाल क्रूर व हत्यारा व्यक्ति था। 2. प्रसेनजित की प्रजा अंगुलिमाल के अत्याचार से त्राहि-त्राहि कर रही थी। 3. अंगुलिमाल ने हज़ार आदमियों की हत्या की प्रतिज्ञा कर रखी थी। 4. अंगुलिमाल स्वयं द्वारा मारे गए आदमियों का हिसाब रखने के लिए उनकी अंगुली काट लेता था और उसे माला में पहन लेता था। 5. अंगुलिमाल की क्रूरता की कहानियाँ दूर-दूर के देशों तक फैली थीं। **(ग)** 1. अंगुलिमाल ने हज़ार आदमियों की हत्या करने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। परंतु वह कितने आदमी मार चुका था, इसका हिसाब रखने के लिए उसने एक युक्ति निकाली। वह जब किसी का वध करता तो उसकी अंगुली काट लेता। इस प्रकार उसके पास अंगुलियों की माला-सी बनती जा रही थी, जिसे वह गले में डाले रहता। इसी कारण उसका नाम अंगुलिमाल पड़ गया था। 2. अंगुलिमाल से मिलने के लिए महात्मा बुद्ध उस जंगल की ओर चल पड़े जिसमें वह रहता था। 3. पहरेदार ने महात्मा बुद्ध को यह बात बताई, ''महाराज, उधर भयंकर डाकू अंगुलिमाल रहता है। उससे प्राणों को खतरा है। कृपया उधर न जाएँ।'' 4. महात्मा बुद्ध ने पहरेदार से कहा, ''मेरे लिए किसी प्रकार की चिंता न करो।'' 5. अंगुलिमाल को महात्मा बुद्ध ने इस रूप में देखा-ऊँचा कद, काला शरीर, भयानक चेहरा, लाल आँखें, बिखरे बाल, बड़ी-बड़ी मूँछें, लंबी मज़बूत भुजाएँ, चौड़ा सीना तथा हाथ में कटार। **(घ)** 1. महात्मा बुद्ध का अंगुलिमाल से प्रथम प्रश्न था '' मैं तो ठहर गया, तू कब ठहरेगा।'' अंगुलिमाल चकित हो उठा। उसके सामने वाले व्यक्ति की हमेशा भय से घिग्घी बँध जाया करती थी। आज तक उसे कोई ऐसा आदमी न मिला था, जिसने उससे आँख मिलाकर बात की हो। वह सोच रहा था–यह कौन है, जो डरना तो दूर रहा, शांतिपूर्वक मुसकरा रहा है? 2. अंगुलिमाल द्वारा महात्मा बुद्ध के प्रश्न को न समझ पाने पर उसने कहा, ''महात्मन्, मैं आपकी बात नहीं समझ सका।'' 3. बुद्ध ने अंगुलिमाल को शांति, दया और प्रेम का उपदेश देकर नई राह दिखाई। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय है कि आदमी जब किसी को जीवन नहीं दे सकता तो वह दूसरे आदमी को क्यों मारता है? सभी जीव परमात्मा ने बनाए हैं, तो एक जीव दूसरे जीव से घृणा क्यों करता है? 2. इस पंक्ति का आशय है कि अंगुलिमाल के कहने पर महात्मा बुद्ध तो रुक गए लेकिन अंगुलिमाल लोगों की हत्याएँ करना कब बंद करेगा? वह मनुष्यों पर अत्याचार करना कब बंद करेगा। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. एक बार महात्मा बुद्ध मगध की राजधानी राजगृह से चलकर श्रावस्ती पहुँचे। 2. प्रसेनजित से विदा लेकर महात्मा बुद्ध उस जंगल की ओर चल पड़े, जिसमें अंगुलिमाल रहता था। 3. महात्मा बुद्ध कुछ थक रहे थे पर वे रुके नहीं, आगे बढ़ते गए। 4. इन्हीं बातों पर विचार करते हुए महात्मा बुद्ध जंगल की राह बढ़े जा रहे

थे 5. महात्मा बुद्ध रुक गए। **(ख)** 1. अचानक उन्हें किसी की कठोर भारी आवाज़ सुनाई पड़ी, ''ठहर जा।'' 2. महात्मा बुद्ध ने कहा, ''मैं तो ठहर गया, तू कब ठहरेगा।'' 3. बुद्ध फिर बोले, ''बोल कब ठहरेगा तू?'' 4. वह बोला, ''महात्मा, मैं आपकी बात नहीं समझा।'' **(ग)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. पुल्लिंग 6. स्त्रीलिंग 7. पुल्लिंग 8. पुल्लिंग 9. स्त्रीलिंग 10. स्त्रीलिंग **(घ)** 1. मालाएँ 2. अंगुलियाँ 3. तलवारें 4. राजधानियाँ 5. आवाज़ें 6. बस्तियाँ **(ङ)** 1. विशेषण 2. भाववाचक संज्ञा 3. विशेषण 4. भाववाचक संज्ञा 5. भाववाचक संज्ञा 6. भाववाचक संज्ञा 7. विशेषण 8. भाववाचक संज्ञा 9. भाववाचक संज्ञा 10. भाववाचक संज्ञा **(च)** **विशेषण–**1. ऊँचा 2. बिखरे 3. काला 4. मज़बूत 5. भयानक 6. चौड़ा 7. बड़ी-बड़ी 8. भारी **विशेष्य–**1. कद 2. बाल 3. शरीर 4. भुजाएँ 5. चेहरा 6. सीना 7. मूँछें 8. आवाज़

3. जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी (संस्मरण)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. लेखक ने अपने पिता को आर्य समाज के सुधारवादी आंदोलन से संबंधित बताया। 2. लेखक के घर में इस प्रकार की पत्रिकाएँ मँगवाई जाती थीं-'आर्यमित्र, साप्ताहिक, सरस्वती, ग्रहणी', और दो बाल पत्रिकाएँ 'बालसखा' और 'चमचम'। 3. घर में मँगवाई जाने वाली पत्रिकाओं में परियों, राजकुमारों, दानवों व सुंदर राज कन्याओं के चित्र होते थे। 4. लेखक के पिता ने लेखक की पढ़ाई विद्यालय न भेजकर घर पर ही इसलिए शुरू करवाई क्योंकि लेखक के पिता जी नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में उन्हें स्कूल भेजा जाए। 5. स्वामी दयानंद जी की जीवनी में लेखक ने इन बातों को पढ़ा-चूहे को भगवान का मीठा भोग खाते देखकर यह मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होतीं और घर छोड़कर भाग जाना। जंगलों, तीर्थों, पर्वत शिखरों पर साधुओं के बीच इस विचार व खोज के साथ ही घूमना कि भगवान क्या है, सत्य क्या है आदि। उनके द्वारा समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी व मूल्यों, रूढ़ियों का खंडन करना और अंत में अपने हत्यारे को क्षमा कर देना। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) **(ख)** 1. आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना डॉ० धर्मवीर भारती की माता ने की थी। 2. लेखक के पिता ने सरकारी नौकरी गाँधी जी के आह्वान पर छोड़ दी थी। 3. लेखक का नाम विद्यालय में कक्षा दो की पढ़ाई करते समय लिखवाया गया था। 4. पिता ने लेखक से पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी कहानियों की पुस्तकों की तरह ध्यान से पढ़ने का वायदा करने के लिए कहा। 5. भोजन करते समय थाली के समीप लेखक ने पत्र-पत्रिकाओं का रखे रहना बताया। **(ग)** 1. लेखक के घर पर आर्यमित्र, साप्ताहिक, सरस्वती, ग्रहणी, दो बाल पत्रिकाएँ 'बाल सखा' व 'चमचम' मँगवाई जाती थीं। 2. लेखक को कहानियों की पुस्तकों के बीच पाकर उनकी माँ को चिंता हो जाती कि लड़का कक्षा की पुस्तकें नहीं पढ़ता, तो पास कैसे होगा। 3. लेखक के पिता लेखक को विद्यालय उसकी नासमझ उम्र के कारण नहीं भेजना चाहते थे। 4. कभी पुस्तकालय बंद होने के समय जब लेखक कोई पुस्तक पूरी न पढ़ पाते और लाइब्रेरियन शुक्ल जी के कहने पर 'बच्चा, अब उठो', तब वे बड़ी अनिच्छा से उठते थे। 5. लाइब्रेरी से अनिच्छा से उठते समय लेखक के मन में विचार आते थे कि काश, इतने पैसे होते कि सदस्य बनकर पुस्तक इशू कर लाता या इसे खरीद पाता तो घर में रखता। जितनी बार इच्छा होती, पढ़ता। 6. पिता के देहावसान से लेखक के परिवार पर आर्थिक संकट बहुत अधिक बढ़ गया। **(घ)** 1. हमारे मोहल्ले में एक लाइब्रेरी (पुस्तकालय) 'हरिभवन' नाम से थी। स्कूल से छुट्टी होते ही मैं उसमें जाकर जम जाता। पिता का साया सिर पर रहा नहीं था इसलिए लाइब्रेरी का चंदा चुकाने को पैसे नहीं थे। अतः वहीं पुस्तकें निकालकर पढ़ता रहता था। उसमें खूब उपन्यास थे। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 'दुर्गेशनंदनी', 'कपाल कुंडला' और 'आनंदमठ' से मेरा वहीं परिचय हुआ। टॉलस्टाय की 'अन्ना करेनिना', विक्टर

ह्यूगो का 'पेरिस का कुबड़ा', गोर्की की 'मदर' और सर्वाधिक मनोरंजक सर्वा-रीज का 'विचित्र वीर' (यानी डॉन क्विक्जोट) हिंदी के माध्यम से सारी दुनिया के कथा-पात्रों से मुलाकात करना कितना आकर्षक रहा था, मैं वर्णन नहीं कर सकता। 2. लेखक ने इंटरमीडिएट पास कर लेने पर पुरानी पाठ्यपुस्तकें बेचकर बी०ए० की सेकेंड हैंड पाठ्यपुस्तकें खरीदी थीं। इस खरीद में दो रुपए बच गए थे। सामने के सिनेमाघर में 'देवदास' लगी थी। उसकी चर्चा बहुत थी परंतु माँ को सिनेमा देखना बिलकुल नापसंद था। लेखक ने बताया कि पुस्तकें बेचकर उनके पास दो रुपए बचे हैं। वे दो रुपए लेकर माँ की सहमति से फ़िल्म देखने गए। पहला शो छूटने में देर थी, पास में परिचित की दुकान थी, वहीं चक्कर लगाने लगे। सहसा देखा कि काउंटर पर 'देवदास' पुस्तक रखी है, लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्याय, दाम एक रुपया। उन्होंने पुस्तक उठाकर उलटी पलटी तो पुस्तक विक्रेता बोला, ''तुम विद्यार्थी हो। यहीं अपनी पुस्तकें बेचते हो हमारे पुराने ग्राहक हो तुमसे अपना कमीशन नहीं लूँगा। केवल दस आने में यह पुस्तक दे दूँगा''। फ़िल्म देखने का विचार त्याग लेखक ने दस आने में पुस्तक खरीद ली। **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है कि जीवन में कहानियों की पुस्तकों की सीख ही काम आएगी। **(च)** 1. अंग्रेज़ी 2. लाइब्रेरी 3. कहानियों 4. पाठ्यक्रम 5. देवदास **भाषा-ज्ञान–**1. सत्य + अर्थ 2. विद्या + अर्थी 3. विद्या + आलय 4. पुस्तक + आलय **(ख)** 1. निराधार 2. असंभव 3. आजीवन **(ग)** 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग 6. पुल्लिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग 9. स्त्रीलिंग 10. पुल्लिंग **(घ)** 1. रूढ़ियाँ 2. कन्याएँ 3. पाठशालाएँ 4. पत्रिकाएँ 5. पुस्तकें 6. जातियाँ 7. नीतियाँ 8. घोंसले 9. दुकानें 10. अंगुलियाँ **(ङ)** 1. अवस्थिति, अवरोध 2. अनीति, अन्याय 3. उपस्थित, उपनिरीक्षक 4. अत्यधिक, अत्याचार **(च)** 1. चिंतित 2. शंकालु 3. संयमित 4. कँटीला 5. ईमानदार 6. अनुभवी **(ज)** 1. बुद्धिमान व्यक्ति 2. जो व्यक्ति धन, समय और विद्या का बुद्धिपूर्वक उचित उपयोग करना जानता हो, वह बुद्धिमान है। जिसकी बुद्धि स्थिर और सात्विक हो वह बुद्धिमान है। 3. लोग प्रायः स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं। 4. स्वर्ग से तात्पर्य देव लोक से है। नरक से तात्पर्य उस लोक से है जिसमें व्यक्ति को उसके बुरे कार्यों के लिए दंड व भयंकर यातनाएँ दी जाती हैं। 5. लोग गलत कार्य करके अच्छा परिणाम प्राप्त करके प्रसिद्धि पाना चाहते हैं। 6. (अ) बुद्धिमान (ब) अपवित्र 7. (अ) धनी (ब) विवेकी (स) मिलावटी

4. विनम्रता व सौम्यता की प्रतिमूर्ति-कस्तूरबा (जीवन परिचय)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. कस्तूरबा महात्मा गाँधी की पत्नी थीं। 2. बापू को दो वस्तुओं ने राह दिखाई-एक हिंदू धर्म ने और दूसरी 'बा' ने। 3. इन दोनों की मदद से गाँधी जी ने अपने जीवन को सफल किया। उन्होंने हिंदू धर्म के मर्म को समझा और उसे नया रूप दिया और फिर उसी के प्रभाव से वह आज की दुनिया के सबसे बड़े और संत महात्मा बन गए। 4. बापू की दृष्टि में जीवन एक खेल था। 5. बापू के वासस्थान का वातावरण सदा हास्य से मुखरित रहता था। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) **(ख)** 1. बापू स्वभाव से विनोदी, संयमी, हँसमुख व जिद्दी थे। 2. वृद्धावस्था में भी बापू का शरीर स्वस्थ, फुर्तीला व सक्रिय था। 3. बापू का प्रेम एक तरह का जुल्मी प्रेम था। 4. बापू तनकर बैठना पसंद करते थे। 5. बापू कमर झुकाकर बैठने को हानिकारक मानते थे। **(ग)** 1. सरदी के दिनों में बापू का शरीर और हाथ-पैर बहुत ठंडे हो जाया करते थे इसलिए सोते समय खून का दौरा बढ़ाने के लिए कुछ मिनट कसरत करके वे शरीर को गरम कर लिया करते थे। 2. बापू ने 'बा' के प्रति कठोरता इसलिए दिखाई थी क्योंकि 'बा' ने नए कारकुन का बरतन साफ़ किया था जबकि कारकुन का बरतन स्वयं गाँधी जी साफ़ करते थे। 3. गोखले के अनुसार एक ओर से गाँधी जी का प्रेम और दूसरी ओर से उनका आग्रह, व्यक्ति पर इतना ज़ोर-से असर करते थे कि वह

उनकी इच्छा के अनुसार चलने को बाध्य हो जाता था।'' 4. एक बार 'बा' को रक्तस्राव रोग हुआ। बहुत इलाज कराया, ऑपरेशन भी कराया, परंतु लाभ नहीं हुआ। तब बापू ने 'बा' से कहा, ''तुम दाल और नमक खाना छोड़ दो।'' बापू ने इसके लाभों का बहुत-सा वर्णन किया, बहुत मनाया, पर 'बा' नहीं मानीं। अंत में उन्होंने 'बा' का दाल व नमक छुड़ाने के लिए स्वयं दाल और नमक छोड़ने की हठ पकड़ी थी। **(घ)** 1.स्वयं करें। 2. बापू सुबह चार बजे उठते थे। रोज़ाना पाँच कि.मी. की सैर करते थे। उसके बाद अनाज पीसते थे और सब्ज़ियाँ काटते थे तथा अपने आश्रम में साफ़-सफ़ाई का काम करते थे। 3. 'कस्तूरबा' ने अपनी विनम्रता–सौम्यता से बापू को महात्मा बनने में भारी सहायता दी और महात्मा बनने के बाद उनके जीवन को कठोर और रूखा होने से रोककर उन्हें अपने सुहाग के आँचल में बाँधे रखकर संसार का बापू बनाया। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय है कि गाँधी जी के जीवन में छिपाने योग्य कोई बात न थी। 2. इस पंक्ति का आशय है कि बापू का प्रेम और आग्रह व्यक्ति को उनकी इच्छा के अनुसार चलने को बाध्य करता था। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) **(ख) विशेषण**–शारीरिक, ज़ुल्मी, ताज़ा, कुशल, विनम्र, महान, साधारण, गरम **विशेष्य**–कष्ट, प्रेम, मस्तिष्क, तैराक, व्यवहार, विचारक, मनुष्य, लावा **(ग)** 1. विनम्रता 2. सौम्यता 3. कठोरता 4. संयम 5. तीव्रता 6. वकालत **(घ)** 1. सीढ़ियाँ 2. दरवाज़े 3. इच्छाएँ 4. शक्तियाँ 5. पत्नियाँ 6. छुट्टियाँ 7. मूर्तियाँ 8. मोरियाँ **(ङ)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग 6. स्त्रीलिंग 7. पुल्लिंग 8. स्त्रीलिंग **(च) सुपुत्र**-सु-पुत्र, **उपनाम**-उप-नाम, **स्वराज्य**-स्व-राज्य, **आमरण**- आ-मरण, **पराजय**-परा-जय, **प्रबल**-प्र-बल, **अपमान**-अप-मान, **परलोक**-पर-लोक

5. हमारे तीर्थ (आध्यात्मिक लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. तीर्थ धार्मिक व आध्यात्मिक महत्व वाले स्थान को कहते हैं। 2. धाम ईश्वर के निवास स्थान को कहते हैं। 3. पुष्कर ही भारत का एकमात्र ऐसा तीर्थ है, जहाँ ब्रह्मा का मंदिर है। 4. भारत की विविध संस्कृति में प्रविष्ट धार्मिक आस्थाओं के कारण इसे स्वर्ग-तुल्य माना जाता है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) **(ख)** 1. कालांतर में अयोध्या को साकेत, कोशलनगर, विनीता, इक्ष्वाकु-भूमि, कोशल तथा श्रीरामपुरी नामों से पुकारा जाता था। 2. अयोध्या के विषय में जनश्रुति है कि आज भी देवतागण इस पुण्यस्थली के दर्शनार्थ आते हैं। 3. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र की जन्मस्थली होने के कारण अयोध्या को भारतीय संस्कृति का प्रतीक कहा जाता है। 4. पुष्कर में धार्मिक व पशु मेले लगाए जाते हैं। **(ग)** 1. अयोध्या निर्वाणी, निर्मोही, खाकी, दिगंबर, संतोषी, महानिर्वाणी, गूंदड आदि अखाड़ों के लिए प्रसिद्ध है। 2. अयोध्या का रामकोट एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। एक समय था, जब यहाँ बीस द्वार थे। इनमें श्रीराम के मुख्य सेनापति तथा रक्षक हुआ करते थे। दुर्ग के भीतर आठ महल थे; जिनमें श्रीराम की माताएँ तथा भाई रहा करते थे। 3. अयोध्या की चौरासी कोस की परिक्रमा प्रसिद्ध है। ये परिक्रमा चैत्र की पूर्णिमा से प्रारंभ होती है तथा वैशाख शुक्ल की नवमी तक चलती है। इस यात्रा का एक निश्चित मार्ग होता है। अयोध्या में एक और परिक्रमा प्रसिद्ध है–चौदह कोसी परिक्रमा। यह कार्तिक मास से अक्षय नवमी तक और श्रावण मास से शुक्ल पक्ष की तृतीया तक संपन्न होती है। 4. पुष्कर के विषय में किंवदंती है कि यहाँ रुद्रादित्य नामक एक ब्राह्मण ने पुष्कर में विष्णु का मंदिर बनवाया था, तो जैनों ने जैन मंदिर बनवाया। **(घ)** 1. अयोध्या स्मृति भवनों के लिए विख्यात है। यहाँ कहीं-न-कहीं रामकथा होती रहती है। अयोध्या के अखाड़े देश भर में प्रसिद्ध हैं। निर्वाणी, निर्मोही, खाकी, दिगंबर, संतोषी, महानिर्वाणी, गूंदड आदि अखाड़े आज भी अपने अतीत को यथावत् बनाए हुए हैं। अयोध्या परिक्रमाओं के लिए भी

विख्यात है। हज़ारों लोग अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए विभिन्न परिक्रमाओं में सम्मिलित होते हैं। अयोध्या में और भी उत्सव संपन्न होते हैं। रथयात्रा आषाढ़ में, झूला श्रावण में, सरयू-स्नान परिक्रमा कार्तिक में, राम-विवाह अगहन में और रामनवमी चैत्र में। इन उत्सवों का धर्म लाभ उठाने भक्तजन दूर-दूर से आते हैं। 2. राजस्थान राज्य के अजमेर जिले में आदितीर्थ पुष्कर शोभायमान है। पुष्कर ही भारत का एकमात्र ऐसा तीर्थ है, जहाँ ब्रह्मा का मंदिर है। पुराने मंदिर को धर्मांध औरंगज़ेब ने तुड़वा दिया था। वर्तमान मंदिर का निर्माण गोकुलचंद पारीख नामक सिंधिया के मंत्री ने सन् 1809 में करवाया था। 3. पुष्कर में प्रति वर्ष दो बार मेले लगते हैं। पहला मेला कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक एवं दूसरा वैशाख शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक चलता है। पहाड़ियों से घिरे इस स्थान पर लगने वाले दोनों भव्य मेलों में से कार्तिक पूर्णिमा पर लगने वाले मेले में देश-विदेश से लाखों तीर्थ यात्री आकर यहाँ स्नान कर सब पापों से मुक्ति पा लेते हैं। यह मेला पाँच दिन तक लगा रहता है। इस पाँच दिवसीय मेले में मथुरा एवं वृंदावन के मंदिरों की भाँति यहाँ के मंदिरों को भी सुंदर झाँकियों की सजावट कर जगमगा दिया जाता है। इस मेले में मन लुभाने वाली देश की विकसित संस्कृति एवं अनूठे रंगीलेपन के दर्शनों के अतिरिक्त पशु मेले लगाए जाते हैं, जिनमें बैलों आदि पशुओं का क्रय-विक्रय होता है। इस अवसर पर विकास प्रदर्शनियाँ, खेलकूद आदि के रोचक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है कि भारत की विविध संस्कृति में अनेक धार्मिक आस्थाएँ हैं। इन धार्मिक आस्थाओं के कारण यहाँ के बहुत-से मनुष्य परोपकार, पुण्य और मानवता के कार्य करते हैं जिससे भारत भूमि स्वर्ग जैसी बन गई है। **(च)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **भाषा-ज्ञान–(क) उद्देश्य–**1. ब्रह्मा जी 2. प्रयाग 3. कमल 4. राक्षसों 5. सावित्री **विधेय–**1. ने यज्ञ किया था 2. तीर्थों का राजा है। 3. तीन स्थानों पर गिरा 4. ने देवताओं को बहुत तंग किया। 5. भूमि में समा गईं। **(ख)** 1. मेले 2. मूर्तियाँ 3. विशेषताएँ 4. धर्मशालाएँ 5. परिक्रमाएँ 6. अखाड़े 7. आवश्यकताएँ 8. संस्कृतियाँ **(ग)** 1. संज्ञा 2. संज्ञा 3. विशेषण 4. विशेषण 5. संज्ञा 6. विशेषण 7. क्रियाविशेषण 8. विशेषण **(घ)** 1. विधि, विधाता, चतुरानन 2. शंकर, महादेव, गंगाधर 3. भारती, वीणापाणि, वागीश 4. पंकज, नीरज, जलज 5. वायु, समीर, अनिल।

6. फूल और काँटा (कविता)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. फूल और काँटे का पालन-पोषण एक ही पौधा करता है। 2. फूल को प्रिय माना जाता है। 3. काँटे को अप्रिय माना जाता है। 4. फूल अपनी खुशबू के कारण प्रिय माना जाता है। काँटा शरीर में चुभने के कारण अप्रिय माना जाता है। 5. प्रस्तुत कविता के रचयिता अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं। **लिखित–(क)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (अ) **(ख)** 1. फूल और काँटे एक ही पौधे पर जन्म लेते हैं। 2. फूल और काँटे का पालन पौधा करता है। 3. बादलों का व्यवहार फूल और काँटे के साथ समान होता है। वे उन पर समान रूप से पानी बरसाते हैं। 4. हवाएँ फूल और काँटे के साथ समान व्यवहार करती हैं। 5. जी की कली फूल खिला देता है। 6. काँटे फूलों की सुरक्षा करते हैं। 7. देवताओं के सिर पर शोभा फूल पाता है। **(ग)** 1. कविता में फूल 'खुशी' का प्रतीक है क्योंकि फूल सबके मन को खुशी प्रदान करता है। 2. कविता में काँटा 'दुख' का प्रतीक है क्योंकि काँटा सबके मन को दुख और 'तकलीफ़' देता है। **(घ)** 1. फूल सुगंध देता है, काँटा नहीं। फूल सबको खुशी देता है काँटा दुख देता है। फूल तितलियों को गोद में लेता है। भौंरों को अपना रस पिलाता है और लोगों के मन मोह लेता है। जबकि काँटा लोंगों की उँगलियों में चुभता है व तितलियों के पर काट लेता है। अपने अच्छे स्वभाव के कारण फूल देवताओं के सिर पर शोभा प्राप्त करता है जबकि अपने बुरे स्वभाव के कारण काँटा सबको बुरा लगता है। 2. फूल अपने

अच्छे व परोपकारी स्वभाव के कारण सबको अपनी ओर आकृष्ट करता है। फूल सबको सुगंध देता है। अपनी सुगंध से वह सबको खुशी देता है। तितलियों व भौंरो को अपना रस पिलाता है। **(ङ)** इन पंक्तियों का आशय है कि यदि व्यक्ति के कार्य अच्छे नहीं हैं तो उसका उच्च कुल में जन्म लेना उसके किसी काम नहीं आता। जैसे कौरव, कौरव उच्च कुल के थे लेकिन उनके कर्मों के कारण उनकी हर तरफ़ निंदा होती है। **(च) प्रसंग–**प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक में लिखित कविता 'फूल और काँटा' से ली गई हैं। इस कविता को अयोध्यासिंह उपाध्याय द्वारा लिखा गया है। इन पंक्तियों में कवि ने फूल और काँटे के माध्यम से व्यक्ति के अच्छे व बुरे व्यवहार के विषय में बतलाया है। **भावार्थ–**प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि फूल तितलियों को प्यार से अपनी गोद में स्थान देता है। भौंरों को अपना रस पिलाता है। अपनी मदमाती सुगंध और रंगों की निराली छटा से सभी के मन को प्रसन्न कर देता है। परंतु अपने व्यवहार के कारण काँटा सबको बुरा लगता है जबकि फूल को देवताओं के शीश पर चढ़ाया जाता है। यदि हमारे कार्य अच्छे न हों तो हमारा उच्च कुल में जन्म लेना हमारे किसी काम नहीं आता। **(छ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-ज्ञान– (क)** 1. समीर, वायु, बयार 2. मेघ, बादल, जलद 3. भ्रमर, अलि, भँवरा 4. नेत्र, नयन, लोचन 5. देवता, अजर, देव 6. निशा, रात्रि, रजनी **(ख)** 1. सरसता, समरसता 2. खटकता, दमकता 3. लिखता, टिकता 4. चटकता, लटकता **(ग)** 1. तितलियाँ 2. भौंरे 3. काँटे 4. अंगुलियाँ 5. आँखें 6. पौधे **(घ)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) **(ङ)** 1. श्रेष्ठ 2. निराला 3. वंश 4. वस्त्र 5. सिर 6. छेद कर देना

7. ईदगाह (कहानी)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. ईद पर ईदगाह जाने के लिए गाँव में तैयारियाँ हो रही हैं। 2. किसी के कुरते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर से सूई-धागा लेने दौड़े जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जा रहा है। लोग जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे रहे हैं। 3. गाँव के लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न ईद के मेले में जाने के लिए हैं। 4. बच्चों की जेबों में कुबेर का खज़ाना भरा हुआ है। 5. लेखक ने ईद के अवसर पर प्रकृति में वातावरण का इन शब्दों में वर्णन किया है-कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) 6. (स) 7. (ब) **(ख)** 1. हामिद गरीब सूरत का दुबला-पतला लड़का था। 2. हामिद पिता के हैजे की भेंट चढ़ने के कारण पितृहीन हो गया था। 3. हामिद के पाँव में जूते नहीं थे और सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी थी, जिसका गोटा काला पड़ गया था। 4. विपत्ति अपना सारा दल-बल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी। 5. हामिद गाँव के बच्चों के साथ ईदगाह के लिए चला। **(ग)** 1. हामिद की दादी यह सोचकर चिंतित थी कि गाँव के बच्चे अपने-अपने माँ-बाप के साथ जा रहे थे। उस भीड़- भाड़ में बच्चा कहीं खो गया, तो क्या होगा? नन्ही-सी जान, तीन कोस चलेगा कैसे? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। 2. हामिद ने मेले से कोई अन्य वस्तु न लेकर चिमटा इसलिए लिया क्योंकि उसे ख़्याल आया कि दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटी उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे, तो वे कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी, घर में काम की एक चीज़ हो जाएगी। खिलौनों से क्या फ़ायदा। 3. महमूद ने सिपाही लिया, खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला कंधे पर बंदूक रखे हुए। मोहसिन ने भिश्ती लिया, कमर झुकी हुई, ऊपर मशक रखे हुए है। नूरे ने वकील लिया। काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन की सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। 4. चिमटा पाकर

अमीना बोली, ''कैसा नासमझ लड़का है कि दोपहर हुई, न कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा। सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया।'' 5. दीवार में दो खूटियाँ गाड़ी गईं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज़ का एक कालीन बिछाया गया। **(घ)** 1. जब हामिद ने कहा कि अभी कंधे पर रखा तो बंदूक हो गई। हाथ में लिया तो फ़कीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही ज़ोर लगाएँ, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। बहादुर शेर है–मेरा चिमटा, तो हामिद की ये बातें सुनकर बच्चे उसके चिमटे से प्रभावित हुए और उसके चिमटे से अपने खिलौने बदलने को कहा। 2. **हामिद**–''यह चिमटा कितने का है?'' **दुकानदार**–''यह बिकाऊ नहीं है जी!'' **हामिद**–बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाए हैं? **दुकानदार**–बिकाऊ है, क्यों नहीं? **हामिद**–तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है? **दुकानदार**–छह पैसे लगेंगे। **हामिद**–ठीक-ठीक कितने पैसे लोगे? **दुकानदार**–ठीक-ठीक चार पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं तो चलते बनो। **हामिद**–''तीन पैसे लोगे?'' 3. चिमटा खरीदने के भाव हामिद के भीतर यह सोचकर उठ रहे थे–दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटी उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे, तो कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी, घर में काम की एक चीज़ हो जाएगी। खिलौनों से क्या फ़ायदा। 4. हामिद की बातें सुनकर अमीना का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। वह सोचने लगी-बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने खरीदते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा! इतना ज़ब्त हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो उठा। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती जाती थीं। **(ङ)** 1. उत्सुक 2. रौब 3. आकर्षण 4. अंत 5. प्रसन्न 6. दामन **(छ)** (7), (5), (3), (2), (6), (4), (1) **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) **(ख)** 1. मिठाइयाँ 2. रेवड़ियाँ 3. रास्ते 4. वस्तुएँ 5. पैसे 6. खोपड़ियाँ 7. छाले 8. मूँछें **(ग)** 1. भाईचारा 2. सुंदरता 3. क्रोध 4. लड़कपन 5. मातृत्व 6. वकालत 7. आनंद 8. हरियाली **(घ)** 1. मनोहर 2. शास्त्रानुकूल 3. धर्मानुकूल 4. आत्मानंद **(ङ)** 1. कुछ भी न बिगड़ना **वाक्य- प्रयोग**–जिस व्यक्ति पर ईश्वर की कृपा होती है उसका घोर विपत्तियों में भी बाल बाँका नहीं होता है। 2. अत्यधिक प्रसन्न होना **वाक्य-प्रयोग**–परीक्षा में प्रथम आने पर रोहित के पैरों में पंख लग गए। 3. संपूर्ण शक्ति का प्रयोग करना **वाक्य-प्रयोग**–खिलाड़ियों ने मैच जीतने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया। 4. किसी के गलत आचरण पर प्रतिक्रिया न देना **वाक्य-प्रयोग**–विनीता ने समारोह में अपने बेटे की शरारतें देखकर आँखें बंद कर लीं। **(च)** 1. असहनीय 2. लाजवाब 3. चित्त आकर्षक 4. अपेय 5. अगणनीय

8. क्या निराश हुआ जाए? (प्रेरणादायी लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत पाठ के लेखक डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। 2. समाचार-पत्र पढ़कर देश का वातावरण आरोप-प्रत्यारोप का घर प्रतीत होता है। 3. समाज में फैली अनेक बुराइयों के कारण गुणी लोगों के गुण भुला दिए जाते हैं इसलिए हर आदमी दोषी दिखाई देता है। 4. यदि देश में अपराध व भ्रष्टाचार चरम पर हैं, तो यह चिंताजनक इसलिए है क्योंकि इससे ईमानदार व गुणी लोगों को भी दोषी माना जाता है। 5. भारतवर्ष में कानून धर्म के रूप में देखा जाता है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब) **(ख)** 1. आजकल ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाता है। 2. जीवन में सच्चाई अपनाने वाले लोगों को डरपोक और बेबस

समझा जाता है। 3. भारतवर्ष में कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया जाता है। 4. भारतीय दर्शन में मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। 5. भारतीय दर्शन संयम के बंधन में बँधने का सदैव पक्षधर रहा है। **(ग)** 1. लोगों में दोष देखते रहने का यह परिणाम होगा कि जो कुछ भी कोई करेगा; उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। 2. यदि झूठ और फ़रेब का रोज़गार करने वाले फलते-फूलते रहे, तो इसका यह प्रभाव पड़ेगा कि ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगेगा। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगेगी। 3. हर आदमी दोषी दिखेगा, गुणी कम तो इसके अंतर्गत यह परिणाम होगा कि गुणी, परिश्रमी व कर्मठ लोगों का समाज में महत्व कम हो जाएगा। 4. हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि है। 5. इसका अभिप्राय यह है कि धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। **(घ)** 1. एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से लेखक ने दस की बजाय सौ का नोट दिया और लेखक जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकेंड क्लास के डिब्बों में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने लेखक को पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ उसके हाथ में नब्बे रुपए रख दिए। एक बार लेखक बस में यात्रा कर रहा था। उसके साथ उसकी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान पर बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है। कुछ समय बाद लेखक देखता है कि एक खाली बस चली आ रही है और उसमें बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। वह उनके पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, ''पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।'' इन दोनों घटनाओं से लेखक को लगा कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई है। 2. बुराई में रस लेना बुरी बात है, परंतु अच्छाई में उतना ही रस लेकर उसे उजागर न करना और भी बुरी बात है क्योंकि सैकड़ों अच्छी घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है। 3. लेखक ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीज़े तक पहुँच रही हैं, तो इन्हें बदलना होगा। आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है। लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते हैं। 2. इस पंक्ति का आशय है कि व्यक्ति यदि केवल बुरी बातों व घटनाओं का स्मरण करता रहेगा तथा अच्छी बातों व घटनाओं को भुला देगा तो उसका जीवन नकारात्मक व दुखदायी हो जाएगा। **(च)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. भाववाचक संज्ञाएँ 2. भाववाचक संज्ञाएँ 3. भाववाचक संज्ञा 4. व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ 5. जातिवाचक संज्ञाएँ **(ख)** 1. मंद 2. प्रकट 3. शयन 4. ऐच्छिक 5. दोष 6. उत्कृष्ट 7. अवांछनीय 8. अविकार **(ग)** 1. फ़रेबी 2. भ्रष्टाचारी 3. भारतीय 4. भयाक्रांत 5. भाषाविद **(घ)** 1. ठगी 2. क्रोध 3. स्वास्थ्य 4. खराबी 5. संतोष 6. दया 7. धोखेबाज़ी 8. चोरी

9. ऐसे-ऐसे (एकांकी)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत एकांकी के लेखक विष्णु प्रभाकर हैं। 2. प्रस्तुत एकांकी के पात्र मोहन, दीनानाथ, मोहन की माँ, मोहन के पिता, मोहन के मास्टर, वैद्य, डॉक्टर और एक पड़ोसिन हैं। 3. दीनानाथ मोहन के पड़ोसी हैं। 4. मोहन बार-बार पेट को पेटदर्द के बहाने को सच

दिखलाने के लिए पकड़ता है। 5. मोहन की माँ मोहन को गंभीर बीमार समझकर परेशान हैं। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) **(ख)** 1. अंट-शंट खाने से मोहन की माता का अभिप्राय था बाज़ार की खाद्य-वस्तु। 2. मोहन ने पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है की रट लगाई हुई थी। 3. दीनानाथ ने मोहन के उपचार हेतु वैद्य जी को बुलाया था। 4. डॉक्टर ने मोहन को कब्ज़ व बदहज़मी की तकलीफ़ बताई थी। **(ग)** 1. वैद्य जी ने आते ही मोहन पर यह कटाक्ष किया-कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है, क्या? 2. दीनानाथ ने मोहन का चरित्र-चित्रण इस प्रकार किया-अजी, घर क्या पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है। इसे छेड़, उसे पछाड़, इसके मुक्का, उसके थप्पड़! यहाँ, वहाँ हर कहीं मोहन-ही-मोहन। 3. वैद्य जी ने वायु प्रकोप का कारण कब्ज़, पेट साफ़ न होना तथा मल रुक जाना बताया। 4. डॉक्टर ने मोहन की तकलीफ़ की संभावनाएँ कब्ज़ व बदहज़मी बताईं 5. पड़ोसिन ने कहा-इतनी नई-नई बीमारियाँ निकली हैं। देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा। बीमारियों ने तंग कर दिया है। नए-नए बुखार निकल आए हैं। बात यह है कि खाना-पीना तो रहा नहीं। **(घ)** 1. मास्टर जी ने मोहन पर ये कटाक्ष किए–मोहन ने महीना भर मौज की। स्कूल का काम रह गया है। आज ख़्याल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा–'ऐसे-ऐसे'! 2. मास्टर जी जानते थे कि मोहन जैसे लड़के ऐसे ही बहाने बनाते हैं इसलिए वे मोहन के दर्द को पहचान गए। उन्होंने उसका यह उपचार सुनाया-आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है। स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी। आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा। अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय यह है कि मैं बीमारी के ऐसे बहानों को जानता हूँ। 2. इस पंक्ति का अर्थ है कि मोहन मैं तुझे सीधा-सादा समझती थी लेकिन तू तो कम उम्र में ही बहुत चतुर है। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. वायु, वार्तालाप 2. आग, हवा **(ख)** 1. वर्तमानकाल 2. भविष्यत्काल 3. भूतकाल 4. भूतकाल 5. भविष्यत्काल **(ग)** 1. प्रश्नवाचक वाक्य 2. निषेधवाचक वाक्य 3. इच्छावाचक वाक्य 4. आज्ञावाचक वाक्य 5. विधानवाचक वाक्य 6. विस्मयवाचक वाक्य **(घ)** ओह! मोहन के मास्टर जी हैं, आ जाइए। 2. अच्छा साहब! दर्द तो दूर हो जाएगा। डरो मत! बेशक कल स्कूल मत आना। **(ङ)** 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग 7. पुल्लिंग 8. स्त्रीलिंग **(च)** 1. ज़बान = बदज़बान 2. हवास = बदहवास 3. सूरत = बदसूरत 4. किस्मत = बदकिस्मत **(छ)** 1. चिकित्सक 2. दर्द 3. विद्यालय 4. कक्षा **(ज)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 2. अभी-(अ) 3. पुड़िया-(अ) भेजता हूँ-(अ) **(झ)** 1. <u>दे दी है,</u> (सकर्मक) 2. <u>कराहता है,</u> (अकर्मक) 3. <u>दिए,</u> (सकर्मक) 4. <u>थक गया है,</u> (अकर्मक) 5. <u>रख देता है,</u> (सकर्मक)

10. नर हो न निराश करो मन को (कविता)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं। 2. कवि ऐसे कार्य हेतु प्रेरणा दे रहा है जिससे संसार में नाम हो। 3. कवि के अनुसार मनुष्य को सहारा देने वाले भगवान हैं। 4. कवि के अनुसार मनुष्य को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारा भी कोई अस्तित्व है। 5. प्रभु ने मनुष्य को हाथ दान दिए हैं। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) 5. (अ) **(ख)** 1. निराश व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। 2. कवि के अनुसार मनुष्य का जन्म कर्म करने के लिए हुआ है। 3. कवि मनुष्य से जग में रहकर अपना नाम करने को कह रहा है। 4. नहीं 5. जग के विषय में कवि कहता है कि जग को केवल सपना नहीं समझना चाहिए। **(ग)** 1. कवि के अनुसार तन कर्मठ रहकर अर्थात् कर्म करके ही उपयुक्त हो सकता है। हर व्यक्ति काम करके ही अपने शरीर को स्वस्थ बनाए रख सकता है अत: हमें निराश न होकर कर्म में व्यस्त

रहना चाहिए। 2. 'सुयोग' से कवि का अभिप्राय है-'अच्छा अवसर' तथा 'सदुपाय' से कवि का अभिप्राय है-'अच्छा उपाय'। 3. मन में यह धारणा बनाकर पथ पर बढ़ना चाहिए कि अपने आत्म-सम्मान का ध्यान रखते हुए उचित कर्म व परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होगी। 4. अकर्मण्य व्यक्ति के लक्षण हैं–कर्म न करना, भाग्य के भरोसे रहना, असफलता मिलने पर भाग्य को दोष देना। **(घ)** 1. जो जगदीश्वर का जन है उसे कुछ भी दुर्लभ इसलिए नहीं है क्योंकि प्रभु ने उसे सभी वस्तुएँ प्रदान की हैं, उन्हें मेहनत से प्राप्त करने के लिए दो हाथ व बुद्धि दी है, यदि व्यक्ति इनका प्रयोग करके मेहनत करे तो वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है। 2. उद्यम (मेहनत) से ही व्यक्ति धन कमा सकता है। धन से वह मनचाही वस्तुएँ प्राप्त कर सकता है, जीवन के सभी सुख प्राप्त कर सकता है इसलिए उद्यम सुख की निधि (खज़ाना) है। **(ङ)** 1. प्रस्तुत पंक्तियों का आशय है, तुम मानव हो, अपने मन को निराश मत करो, कुछ काम करो। तुम्हारा जन्म किस लिए हुआ है, इसे समझो और जीवन को खाली रहकर बेकार में मत गँवाओ। इस शरीर का उपयोग करके शरीर को सक्रिय बनाओ। 2. प्रस्तुत पंक्तियों का आशय है कि हे मानव! तुम निराशा छोड़कर कर्म करो, तुम सभी गौरव प्राप्त करके, सभी सुख भोग सकते हो। तुम भी परमात्मा के बच्चे हो, इसलिए तुम्हारे लिए कुछ भी कठिन नहीं है तुम मनुष्य हो, निराश न हो। **(च) प्रसंग**-प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि मैथलीशरण गुप्त जी की कविता 'नर हो न निराश करो मन को' से ली गई हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि निराश मनुष्यों को कर्म करके सब कुछ प्राप्त करने को प्रेरित कर रहे हैं। **व्याख्या**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहते हैं कि हे मनुष्य, ईश्वर ने तुम्हें सब कुछ प्राप्त करने के लिए दो हाथ दिए हैं और सभी वस्तुएँ आपके लिए बनाई हैं। तुम परिश्रम करके उन वस्तुओं को प्राप्त न करो तो इसमें तुम्हारा ही दोष है, किसी भी वस्तु को अलभ्य (जो प्राप्त न हो सके) न समझो, तुम परिश्रम करके किसी भी वस्तु को प्राप्त कर सकते हो। तुम मनुष्य हो, निराश न हों। **भाषा-ज्ञान– (क)** 1. आशा 2. सार्थक 3. कुयोग 4. सक्रिय 5. अनुपयुक्त 6. अवांछित 7. गुण 8. निरुद्देश्य **(ख)** 1. म्यान, ज्ञान 2. जपना, अपना 3. मन, धन 4. काम, दाम **(ग)** 1. लायक 2. हताशा 3. परमात्मा 4. मार्ग 5. दुष्प्राप्य/कठिन 6. आलस 7. कोष 8. श्रेष्ठ समय **(घ)** 1. असुर, अन्याय 2. अनदेखा, अनसुना 3. प्रबल, प्रवास 4. सुयोग्य, सुपुत्र 5. कुपात्र, कुमार्ग 6. अवस्थिति, अवरोध 7. उपस्थित, उपकार 8. अधपका, अधखिला **(ङ)** सुयोग-सु, अलभ्य-अ, प्रशस्त-प्र **(च)** 1. जगत् + ईश्वर 2. सद् + उपाय 3. दु: + लभ 4. अखिल + ईश्वर **(छ)** 1. संज्ञा 2. संज्ञा 3. संज्ञा 4. संज्ञा 5. संज्ञा 6. विशेषण 7. संज्ञा 8. संज्ञा **(ज)** 1. सुखी 2. दु:खी 3. गुणी 4. ज्ञानी **(झ)** 1. निष्क्रियता 2. योग्यता 3. दोष 4. ज्ञान 5. मनुष्यता 6. पुरुषत्व

11. नालंदा विश्वविद्यालय (ज्ञानवर्धक लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. बौद्ध काल का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय था। 2. नालंदा विश्वविद्यालय में परीक्षाएँ शास्त्रार्थ के द्वारा होती थीं। 3. नालंदा विश्वविद्यालय में अध्यापक और विद्यार्थी धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) **(ख)** 1. दूर-दूर के देशों से पंडित विश्वविद्यालय में अपनी शंकाएँ दूर करने के लिए आते थे। 2. विश्वविद्यालय के सभी अध्यापक धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे। 3. नालंदा को भारतीय ज्ञान और संस्कृति के एक महान केंद्र के रूप में जाना जाता था। 4. ह्वेनसाँग को नालंदा विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने नालंदा विश्वविद्यालय में आमंत्रित किया था। 5. नालंदा विश्वविद्यालय को महाराज बलादित्य ने बनवाया था। **(ग)** 1. नालंदा विश्वविद्यालय मगध की राजधानी राजगृह से लगभग ग्यारह किलोमीटर दूर उत्तर की ओर तथा पटना से लगभग पचपन किलोमीटर दक्षिण की ओर था। इस स्थान पर आजकल बारगाँव बसा हुआ है, जो गया जिले में है। 2.

ह्वेनसाँग ने नालंदा विश्वविद्यालय में नालंदा विश्वविद्यालय के अधिकारियों द्वारा निमंत्रण देने पर शास्त्रार्थ में विजित होकर प्रवेश पाया था। 3. नालंदा विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की योग्यता शास्त्रार्थ द्वारा परखी जाती थी। 4. नालंदा विश्वविद्यालय की आय का स्रोत गृहस्थ लोगों व राजा द्वारा दिया गया धन था। **(घ)** 1. ऊँचे-ऊँचे विहार और मठ चारों ओर खड़े थे। बीच-बीच में सभा भवन और विद्यालय बने हुए थे। ये सब समाधियों, मंदिरों और स्तूपों से घिरे हुए थे। उनके चारों तरफ़ बौद्ध शिक्षकों और प्रचारकों के रहने के लिए चौमंज़िली इमारतें बनी हुई थीं। ऊँची-ऊँची मीनारों और विशाल भवनों में नाना प्रकार के बहुमूल्य रत्न जड़े हुए थे। रंग-बिरंगे दरवाज़ों, छतों और खंभों की सजावट दर्शनीय थी। विद्यालय के शिखर आकाश से बातें करते थे। मीठे और स्वच्छ जल की धाराएँ चारों ओर बहा करती थीं और सुंदर खिले हुए कमल उनकी शोभा बढ़ाया करते थे। 2. नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय नौ मंज़िला था, जिसकी ऊँचाई लगभग 90 मीटर थी। उसे महाराज बलादित्य ने बनवाया था। इसमें बौद्ध धर्म से संबंधित सभी ग्रंथ थे। प्राचीनकाल में इतना बड़ा पुस्तकालय शायद ही कहीं रहा होगा। 3. नालंदा विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों से कुछ न लिया जाता था, बल्कि उन्हें प्रत्येक वस्तु निःशुल्क दी जाती थी अर्थात् भोजन, वस्त्र, औषधि, निवास-स्थान आदि सब निःशुल्क मिलता था। गृहस्थ लोग गाँव, बाग, खेत अथवा नकद धन इस विश्वविद्यालय को दान करते थे; इसी से इनका संपूर्ण खर्च चलता था। 4. नालंदा विश्वविद्यालय में आजकल की तरह परीक्षाएँ नहीं होती थीं, किंतु विद्यार्थी की योग्यता शास्त्रार्थ द्वारा जाँची जाती थी। विद्यालय में प्रवेश के नियम भी बड़े कड़े थे, जो लोग प्रवेश के लिए आते थे, उनसे द्वार-पंडित कुछ कठिन प्रश्न पूछता था। यदि वे इन प्रश्नों के उत्तर दे सकते थे, तो भीतर जा सकते थे। द्वार-पंडित के पद पर वही नियुक्त किया जाता था, जो ऊँचे दर्ज़े का विद्वान होता था। यह पद उस समय बहुत आदर का समझा जाता था। भीतर जाने के बाद शास्त्रार्थ के द्वारा उनकी योग्यता की परीक्षा ली जाती थी। उसमें वह अपने को जिस किसी कक्षा के योग्य सिद्ध करते थे, उसी कक्षा में वह विश्वविद्यालय में प्रवेश पा सकते थे। तात्पर्य यह कि अच्छे, बुद्धिमान, योग्य और गुणवान मनुष्य ही कक्षा में प्रवेश पाते थे। दर्शन और धर्मशास्त्र के साथ-साथ, व्याकरण, ज्योतिष, काव्य, वैद्यक आदि विद्याएँ भी पढ़ाई जाती थीं। **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग **(ख)** 1. प्र, बंध 2. सु, रुचि 3. भर, मार 4. नि, वास 5. आ, वास 6. वि, योग **(ग)** 1. अध्यापकवृंद 2. छात्रगण 3. परीक्षाएँ 4. विद्यार्थीगण 5. धाराएँ 6. इमारतें 7. सीढ़ियाँ 8. औषधियाँ 9. व्यवस्थाएँ 10. दरवाज़े **(घ)** 1. विशेषण 2. संज्ञा 3. संज्ञा 4. विशेषण 5. विशेषण **(ङ)** 1. योग्यता 2. कठिनता 3. पवित्रता 4. सुंदरता 5. ऊँचाई 6. स्वतंत्रता 7. मनुष्यता 8. धर्म 9. बहाव 10. मोटापा **(च)** 1. अध्यापक बोले, ''तुमने जो कहा, वह ठीक है।'' 2. हरीश ज़ोर से चिल्लाया, ''परे हटो।'' 3. हम सभी नीचे कूदे, खेले और दौड़ पड़े। 4. चंद्रधर ने पूछा, ''यह क्या हो गया शर्मा जी को?'' 5. अहा! कितना सुंदर मौसम है। **(छ)** 1. इच्छावाचक वाक्य 2. विधानवाचक वाक्य 3. निषेधवाचक वाक्य 4. संकेतवाचक वाक्य 5. आज्ञावाचक वाक्य **(ज)** 1. शिक्षा 2. शिक्षा का कार्य मनुष्य को मस्तिष्क और शरीर का उचित प्रयोग करना सिखाना है। 3. जब शिक्षा मनुष्य को पाठ्य-पुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गंभीर चिंतन न दे, तब शिक्षा व्यर्थ हो जाती है। 4. जो शिक्षा सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित एवं अच्छे नागरिक नहीं बना सकती, ऐसी शिक्षा से कोई लाभ नहीं है। 5. यदि कोई अनपढ़ मज़दूर सहृदय व सच्चा होता है तब वह किसी स्नातक से श्रेष्ठ हो जाता है। 6. **अच्छे नागरिक**-अच्छे (विशेषण) नागरिक (विशेष्य), **शिक्षित मनुष्य**-शिक्षित (विशेषण) मनुष्य (विशेष्य), **सभ्य व्यक्ति**-सभ्य (विशेषण) व्यक्ति (विशेष्य) 7. **निर्दय** = हृदयहीन, **चरित्रहीन** = बुरे चरित्र वाला 8. **निर्दय**-सहृदय, **चरित्रहीन**-चरित्रवान, **अनपढ़**-पढ़ा- लिखा, **उचित**-अनुचित

12. मुसकान और स्वास्थ्य (स्वास्थ्य संबंधी लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. हास्य-विनोद का अर्थ है हँसी-मज़ाक। 2. स्वस्थ हास्य-विनोद से तात्पर्य है-ऐसा हँसी-मज़ाक जिसमें किसी को कोई बात बुरी न लगे और सभी प्रसन्न रहें। इससे व्यक्ति की शारीरिक-मानसिक शक्तियों का विकास होता है। 3. व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ व प्रसन्न रहने की स्थिति में खुलकर हँसता है। 4. हास्य-विनोद से मनुष्य में निरंतर नई शक्ति और स्फूर्ति उभरती रहती है। हँसमुख स्वभाव वाला मनुष्य सदा अधिक मात्रा में अच्छे स्तर का काम करता और सफलताएँ अर्जित करता है। **लिखित–(क)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) **(ख)** 1. हास्य-विनोद की आवश्यकता शारीरिक व मानसिक विकास के लिए है। 2. किसी के भी प्रति चेहरे पर मुसकान लाने वाले व्यक्ति का यह प्रभाव पड़ता है कि उससे मिलकर सभी को प्रसन्नता होती है। 3. मुँह लटकाए चिड़चिड़े लोगों के प्रति लोगों का यह व्यवहार होता है कि कोई भी उन्हें पसंद नहीं करता। 4. हँसी और मुसकान को सफलता का सूचक माना जाता है। **(ग)** 1. हँसमुख व्यक्ति ही दूसरों को हँसाते रहने में समर्थ होते हैं, जिस प्रकार सुगंधित वस्तुओं की समीपवर्ती वस्तुएँ भी सुगंधित हो जाती हैं, उसी प्रकार हँसमुख व्यक्तियों का सान्निध्य भी खिन्न और उदास चेहरों पर मुसकान बिखेर देता है। 2. हँसमुख व्यक्तियों की विशेषताएँ है–हँसमुख व्यक्ति तनाव व चिंता से दूर रहते हैं। हँसमुख व्यक्तियों के चेहरे पर सदा मुसकान रहती है। हँसमुख व्यक्ति दूसरों की सहायता करते हैं। हँसमुख व्यक्ति दूसरों को भी प्रसन्न रखते हैं। 3. ऐशले ओटांगू ने किलकारी भरते एवं खिलखिलाते शिशुओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि बढ़ती आयु के साथ यदि मनुष्य भी अपने अंदर उस बालसुलभ सरलता एवं निष्कपटता को बनाए रखे, तो उसके चेहरे पर प्रसन्नता सदैव बनी रह सकती है। प्रफुल्लता की इस वेगवान धारा के साथ विघ्न-बाधाओं, शोक-संतापों की चट्टानें भी टूटकर उस प्रवाह के साथ बह जाती हैं। चितंन की यह एक ऐसी विधेयात्मक दिशाधारा है, जो शारीरिक-मानसिक विकास के साथ ही कार्यदक्षता को भी अनेक गुणा बढ़ा देती है। 4. अमेरिका के अनुसंधान चिकित्सा वैज्ञानिकों ने हँसने-मुसकराने के विषय में यह अभिप्राय प्रकट किया कि हँसने-मुसकराने से शरीर की रोग प्रतिरोधी प्रणाली सशक्त बनती है और प्रसन्नता की इस मन:स्थिति में दर्द एवं तनाव दूर करने वाले मस्तिष्कीय रसायनों का स्तर बढ़ जाता है। इसका प्रभाव समूचे स्नायुतंत्र पर पड़ता है, जिससे काया का प्रत्येक अंग-अवयव सक्रिय हो जीवंत हो उठता है। **(घ)** 1. सैनफ्रांसिस्को हास्य-सम्मेलन में विश्व के हज़ारों मूर्धन्य वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, मनोवैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों ने भाग लिया और अपने-अपने अनुसंधान निष्कर्ष प्रस्तुत किए। इस संबंध में सभी एकमत थे कि हँसना-मुसकराना व्यक्ति को न केवल सदैव तरोताज़ा बनाए रखता है वरन् यह एक मनौवैज्ञानिक आसन होने के कारण मानसिक स्वास्थ्य को भी अक्षुण्ण बनाए रखता है। हँसने से मन के तार-तार झंकृत हो उठते हैं और वहाँ विद्यमान, ईर्ष्या, द्वेष, कुटिलता, दुर्भाव और तनावरूपी विष जलकर भस्म हो जाते हैं। 2. हास्य- विनोद से अंत:स्रावी ग्रंथियों से स्रावित रसायनों में भारी फेरबदल हो जाता है। उनके अनुसार शिशुओं की मस्ती और उमंग देखते ही बनती है। इसके कारण उनकी पीयूष ग्रंथि का स्राव और सक्रियता भी बढ़ी-चढ़ी रहती है किंतु शैशवकाल के पश्चात् जैसे-जैसे आयु में अभिवृद्धि हो जाती है, बच्चे में क्रोध, भय, चिंता, ईर्ष्या, आवेश आदि मनोविकृतियाँ उभरने लगती हैं। प्रसन्नता घटने के साथ ही रसायनों के स्रावण में न्यूनता आ जाती है, जिसका प्रभाव शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़े बिना नहीं रहता। 3. 'हँसो और मोटे हो जाओ' का अभिप्राय है कि सदैव प्रसन्न रहने वालों के पास बीमारी नहीं फटकती। सामान्य जनों की तुलना में वे स्वस्थ एवं दीर्घजीवी भी होते हैं। इस संदर्भ में कैलेफोर्निया यूनिवर्सिटी के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ० मैरियान क्लींस डायमंड ने गहन अनुसंधान किया और निष्कर्ष पाया कि प्रेम और सद्भावयुक्त हँसती खिलखिलाती ज़िंदगी

जीने से मस्तिष्क के सेरिब्रल कार्टेक्स की सघनता बढ़ जाती है। हँसते रहने वाले एवं उदासीन तथा खीजते रहने वाले व्यक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन के अतिरिक्त उन्होंने इस तरह के अनेक प्रयोग मानवेतर प्राणियों पर किए और सफलता पाई। परीक्षणोपरांत पाया गया कि जिन जीवधारियों को हँसी-खुशी के खुले वातावरण में स्वतंत्रतापूर्वक उछलने-कूदने दिया गया, वे लंबी अवधि तक जीवित रहे। किंतु जिन्हें तरह-तरह के बंधनों से जकड़कर भयभीत, उद्विग्न अथवा उदासीनता के माहौल में रहने को विवश किया गया, खीजते-झुँझलाते रहने वाले वे प्राणी असमय ही दम तोड़ गए। 4. एक मनोरंजन संबंधी प्रयोग-परीक्षण चूहों के दो समूहों पर किया गया। इसके लिए दो कटघरे लिए गए। पहले बड़े आकार वाले कटघरे में चूहों के तीन परिवारों को रखा गया; जिसमें उनके उछल-कूद करने जैसे मनोरंजन के साधन को भी जुटाया गया था। दूसरे छोटे कटघरे में चूहे के केवल एक ही परिवार को अकेला रखा गया और उसके साथ वातावरण भी उदासी का था। परखने के बाद देखा गया कि दूसरे की तुलना में पहले वाले कटघरे के चूहों के मस्तिष्क का सेरिब्रल कार्टेक्स वाला भाग सोलह गुना अधिक मोटा था। इन चूहों की जीवन अवधि में अभिवृद्धि आँकी गई और वे एक हज़ार दिन तक जीवित रहे। दूसरे समूह वाले चूहे मात्र 766 दिन तक ही जीवित रहे। इनमें से कुछ मरणासन्न चूहों को जब प्रसन्नता वाला वातावरण प्रदान किया गया, तो क्रमशः उनकी मस्तिष्कीय क्षमता बढ़ती गई और वे 904 दिन तक लंबी आयु का उपभोग कर सके। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का भाव यह है कि हँसमुख व्यक्ति के साथ रहकर दुखी व उदास व्यक्तियों के चेहरों पर मुसकान आ जाती है। 2. इस पंक्ति का भाव यह है कि यदि व्यक्ति के जीवन में प्रसन्नता नहीं है तो उसका जीवन नीरस और आयु कम हो जाती है। 3. इस पंक्ति का भाव यह है कि हँसने से व्यक्ति की सारी निराशा दूर हो जाती है। **(च)** 1. सफलता 2. अनुकूल 3. हँसते 4. हँसाने **(छ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. वर्तमानकाल 2. भूतकाल 3. भविष्यत्काल 4. भूतकाल 5. वर्तमानकाल **(ख)** 1. प्रश्नवाचक वाक्य 2. इच्छावाचक वाक्य 3. निषेधवाचक वाक्य 4. आज्ञावाचक वाक्य 5. विधानवाचक वाक्य **(ग)** **उपसर्ग–**1. प्र 2. अ 3. सु 4. कु 5. सु 6. प्र **मूल शब्द–**1. सिद्ध 2. क्षुण्ण 3. गंध 4. रूप 5. विख्यात 6. वृत्ति **(घ)** 1. निः + रस 2. सदा + एव 3. मनः + विनोद 4. सु + अच्छ **(ङ)** 1. विषैला 2. शारीरिक 3. नगरीय 4. दक्ष 5. लंबा 6. सरल 7. प्रखर 8. भयानक **(छ)** 1. दुर्गंध 2. असफल 3. कुख्यात 4. सामान्य 5. अस्वस्थ 6. अप्रसन्न 7. लघु 8. ह्रास 9. यदा-कदा 10. अमृत

13. पेड़-पौधे और पर्यावरण (पर्यावरणीय लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. जिस स्थान पर वृक्ष होते हैं, वहाँ का वातावरण स्वच्छ व स्वास्थ्यवर्धक होता है। 2. वृक्षविहीन स्थान का वातावरण प्रदूषित व स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। 3. वृक्ष प्राणियों के लिए इसलिए आवश्यक हैं क्योंकि वृक्ष प्राणवायु (ऑक्सीजन) देते हैं। 4. पशु पक्षियों के लिए वृक्ष बहुत आवश्यक हैं क्योंकि अधिकांश पशु-पक्षी अपने भोजन व आश्रय के लिए वृक्षों पर निर्भर हैं। 5. मनुष्य को वृक्षों से अनेक लाभ हैं–मनुष्य को वृक्षों से भोजन, लकड़ी व दैनिक उपयोग की अनेक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (स) **(ख)** 1. भारतीय परंपरा में वृक्ष अपनी दैवीय विशेषताओं और भगवान के साथ संबंध के लिए जाने जाते हैं। 2. वनस्पति, औषधि, वृक्ष, गुल्म, गुच्छ, प्रतान के रूप में वृक्षों का वर्गीकरण किया गया है। 3. पीपल के वृक्ष में ब्रह्मा, विष्णु, महेश का वास बताया गया है। 4. श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने स्वयं को पीपल वृक्ष के साथ संबंधित किया है। 5. कदली का वृक्ष अपने सात्विक गुणों के लिए प्रसिद्ध है। **(ग)** 1. भारतीय संस्कृति को अरण्यों (वृक्षों) की संस्कृति इसलिए माना जाता है; क्योंकि भारतीय संस्कृति और सभ्यता वनों से ही आरंभ हुई। भारतीय ऋषि-मुनियों, दार्शनिकों, संतों तथा मनस्वियों ने लोकमंगल के लिए चिंतन-मनन किया। अरण्यों में ही हमारे विपुल

वाङ्मय, वेद-वेदांगों, उपनिषदों आदि की रचना हुई। 2. कुछ औषधीय उपयोगिता वाले वृक्ष हैं–ब्राह्मी, तुलसी, वसाका, पीपल, काम कस्तूरी आदि। 3. पेड़-पौधों का संबंध जीव-जगत से माता-पुत्र का है। जिस प्रकार माता शिशु का अपने दुग्ध से पालन-पोषण करती है, उसी प्रकार वृक्ष प्राणवायु देकर जीव-जगत के प्राणों की रक्षा करते हैं। जीव-जगत द्वारा छोड़ी गई गैस, 'कार्बन डाइऑक्साइड' को वे उदरस्थ कर जाते हैं। 4. वर्षा होने पर वृक्षों की मिट्टी उस जल को पी लेती है। उसके चहुँ ओर बिखरे पत्र-पुष्प उस पानी को बह जाने से रोकते हैं। परिणामतः बाढ़ की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है। **(घ)** 1. पुराणों में वर्णित है कि अशोक का पेड़ लगाने से शोक नहीं होता। पाकड़ वृक्ष ज्ञान रूपी फल देता है। बिल्व वृक्ष दीर्घायु प्रदान करता है। जामुन का वृक्ष धन देता है, तेंदू का वृक्ष कुलवृद्धि करता है। अनार का वृक्ष स्त्री-सुख देता है। वट वृक्ष मोदप्रद, आम्र वृक्ष अभीष्ट कामनाप्रद और गुवारी (सुपारी) वृक्ष सिद्धिप्रद है। वल्लल, मधुक (महुआ) तथा अर्नुन वृक्ष सब प्रकार का आनंद प्रदान करता है। कदंब से विपुल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, इमली धर्मदूषक व शमी रोगनाशक है। शीशम, अर्जुन, जयंती करविर, बेल तथा पलाश के आरोपण से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। 2. पेड़-पौधों की श्वास प्रक्रिया इस प्रकार है–पेड़-पौधों की पत्तियों में बारीक रंध्र होते हैं, जिनके दोनों ओर रक्षक कोशिकाएँ होती हैं। इन्हीं रंध्रों के द्वारा वातावरण और पौधों में गैसों का विनिमय होता है और जैविक क्रियाएँ संपन्न होती हैं। पत्तियों के इन छोटे-छोटे रंध्रों से वायु भीतर जाती है। यहाँ प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया के द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड का ऑक्सीजन में परिवर्तन होता है। इस प्रकार इन रंध्रों से जो गैस बाहर निकलती है, उससे हमें ऑक्सीजन प्राप्त होती है। 3. पेड़-पौधे वर्षा के नियंत्रक इस प्रकार होते हैं–पौधों में जड़, तना और पत्तियाँ आदि होती हैं। जड़ मिट्टी से पानी तथा खनिज लवणों को पौधों के लिए अवशोषित करती है। यह पानी तनों से होता हुआ पत्तियों तक पहुँच जाता है। पानी के कुछ भाग को पौधा भोजन बनाने में उपयोग कर लेता है। शेष पानी पत्तियों की सतह से वाष्प बनकर निकल जाता है। 4. पद्म पुराण में कहा गया है, जो मनुष्य मार्ग के किनारे वृक्ष लगाता है, वह स्वर्ग में उतने ही वर्षों तक सुख भोगता है, जितने वर्ष तक वह वृक्ष फलता-फूलता है। पेड़-पौधों का रोपण धार्मिक कृत्य मानते हुए मत्स्य पुराण में कहा गया है–'एक वृक्ष का आरोपण दस पुत्रों के जन्म के समान है।' वराह पुराण कहता है कि आम के पाँच पौधे लगाने वाला कभी नरकगामी नहीं होता है। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय यह है कि वृक्ष पर्यायवरण को स्वच्छ व संतुलित रखते हैं, जिससे मानव का स्वास्थ्य उत्तम रहता है। 2. इस पंक्ति का आशय है कि एक वृक्ष को लगाने से दस पुत्रों के यश जितना यश प्राप्त होता है। **भाषा-ज्ञान–(क) वृक्ष**-तरु, विटप, पेड़ **आम**-आम्र, रसाल, सौरभ **(ख)** 1. प्रतिवादी 2. प्रतिक्रिया 3. प्रतिबिंब 4. प्रतिघात 5. प्रतिनिधि 6. प्रतिवाद **(ग)** 1. अ, शोक 2. अ, काल 3. अ, नाथ 4. अ, जर 5. अ, मर 6. अ, विवेक **(घ)** 1. पत्तियाँ 2. भट्टियाँ 3. ध्वनियाँ 4. औषधियाँ 5. इच्छाएँ 6. कुंजियाँ **(ङ)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. पुल्लिंग

14. नीलू (संस्मरण)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत पाठ की लेखिका महादेवी वर्मा हैं। 2. लेखिका की तीन रचनाओं के नाम हैं–मेरा परिवार, गिल्लू और हिमालय। 3. लूसी लेखिका की अल्सेशियन कुतिया थी। 4. लूसी नीलू की माँ थी। 5. घ्राणशक्ति से अभिप्राय है सूँघने की शक्ति। 6. नीलू को बचपन में माँ का अभाव था। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) **(ख)** 1. नीलू की माँ की चाल हिरनी के समान तेज़ थी। 2. लूसी बरफ़ में मार्ग बना लेने की सहज चेतना के कारण सारी रुकावटों को पार कर दुकान तक पहुँच जाती थी। 3. संभवतः शीतकाल में घ्राणशक्ति कमज़ोर हो जाने

के कारण किसी लकड़बग्घे के आने की गंध लूसी को न मिली हो और वह उसका आहार बन गई हो। 4. नीलू का माता के अभाव में दुग्ध-चूर्ण का दूध पिलाकर पालन किया गया। 5. नीलू को कोमल ऊन और अधबुने स्वेटर की डलिया में रख दिया गया। यहाँ वह माता के सामीप्य के भ्रम में सो जाता था। 6. मृत्यु के समय नीलू की आयु 14 वर्ष थी। **(ग)** 1. बरफ़ीले मौसम में उत्तरायण के निवासी लूसी के गले में रुपए और सामग्री की सूची के साथ एक बड़ा थैला या चादर बाँधकर उसे सामान लाने भेजते। 2. दुकानदार लूसी के गले में बँधे रुपयों और सामग्री की सूची के आधार पर उसे सामान दे देता था। 3. रात्रि में नीलू एक बार भौंक पड़े तो वातावरण की स्तब्धता को कंपित कर देता था। 4. लेखिका के पालतू खरगोश प्राय: अपने कक्ष से धरती के भीतर सुरंग खोदकर दूसरे कंपाउंड में जा निकलते और वहाँ जंगली बिल्ले द्वारा मार दिए जाते थे। एक दिन नीलू ने चारदीवारी के पार एक खरगोश को पहचान लिया। वह तुरंत कूदकर दूसरी ओर पहुँचा जिससे जंगली बिल्ला तो भाग गया, परंतु खरगोशों को बाहर निकलने से रोकने के लिए वह रात भर ओस में भीगता हुआ सुरंग के द्वार पर खड़ा रहा। इस परोपकार में सरदी लगने से उसे न्यूमोनिया हो गया **(घ)** 1. सामान्य कुत्तों से भिन्न लूसी का रंग-रूप जैसे राजसी विशेषता लिए था। हिरणी के समान वेगवती, सजग खड़े कान, सघन रोएँदार तथा पिछले पैरों के टखनों को छूने वाली पूँछ, बुद्धिमानी प्रकट करती काली छोटी आँखें उसके स्वरूप को जैसे चार चाँद लगाते थे। शीतकाल में बरफ़ से ढके रास्तों से होकर वह आवश्यक सामान की खरीदारी कर लाती थी। 2. नीलू का रंग-रूप निराला था। रोमों के पीले, भूरे और काले रंगों के मिलन से जो रंग बना था, वह एक प्रकार का धूप-छाँही हो गया था। धूप पड़ने पर एक की झलक मिलती, छाँह में दूसरे की और दीये के उजाले में तीसरे की। सिर सामान्य कुत्तों से बड़ा, चौड़ा और लंबोतरा परंतु सुडौल था। पूँछ सघन रोमों से युक्त पर ऊपर की ओर मुड़ी हुई कुंडलीदार, पैर अल्सेशियन कुत्तों के समान लंबे और पंजे भूटिया के समान मज़बूत, चौड़े और मुड़े हुए नाखूनों वाले। गोल आँखें, रंग शहद के समान जो धूप में तरल सुहाना और छाया में जमे मधु-सा पारदर्शी प्रतीत होता था। आकृति, बल और स्वभाव की विशेषता ऐसी थी कि ऊँची दीवार को एक छलाँग में पार कर जाए। रात्रि में एक बार भौंक पड़े, तो वातावरण की स्तब्धता को कंपित कर दे। दैन्य से रहित और अलभ्य दर्प से युक्त नीलू को प्रिय-से-प्रिय आहार भी यदि अवज्ञा के साथ फेंककर दिया जाता, तो वह उसकी तरफ़ देखता भी न था। यदि किसी बात पर झिड़क दिया जाए, तो बिना मनाए वह सामने भी न आता था। 3. कभी-कभी बहुत छोटे पक्षी-शावकों को पुन: घोंसले में रखवाने के लिए वह उन्हें हौले से मुख में दबाकर लेखिका के पास ले आता था। वह तब तक उसे कोमलता से मुँह में दबाए खड़ा रहता था, जब तक लेखिका सीढ़ी तथा उस बच्चे को रोशनदान पर रखे घोंसले में पहुँचाने की व्यवस्था न कर लेती या लेखिका के हाथ में देकर प्रतीक्षा की मुद्रा में देखता रहता। सवेरे जब लेखिका मोर, खरगोश आदि को दाना देने निकलती, तो वह विपरीत मौसम की भी परवाह न कर लेखिका को दरवाज़े पर मिलता और उनके साथ-साथ घूमता। वह पक्षियों के कक्षों की दो फुट ऊँची दीवार पर लगी जाली पर दोनों पंजे रखकर खड़ा हो जाता और आँखें घुमा-घुमाकर प्रत्येक कक्ष और उसमें रहने वालों का निरीक्षण करता रहता। सबके सो जाने पर वह गरमियों में बाहर लॉन पर और सरदियों में बरामदे में तख़्त पर बैठकर पहरेदारी का कार्य करता। रात में कई-कई बार पूरे कंपाउंड का और पशु-पक्षियों के घर का चक्कर लगाता रहता। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय है कि नीलू दीनता से रहित और अलभ्य (जो मिलता न हो) स्वाभिमान वाला था। **(च)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. काली 2. मज़बूत 3. तीव्र 4. हिंसक 5. लंबी 6. चौड़ा 7. ऊँचा 8. जंगली 9. स्वच्छ 10. उचित **(ख)** 1. कोई-अनिश्चयवाचक सर्वनाम 2. क्या- प्रश्नवाचक सर्वनाम 3. कुछ-अनिश्चयवाचक

सर्वनाम 4. वे–अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम 5. वह–अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, स्वयं–निजवाचक सर्वनाम **(ग)** 1. परि 2. बे 3. सु 4. अप 5. अव 6. अ **(घ)** 1. कोमलता 2. मधुरता 3. सघनता 4. दुर्लभता 5. गहराई 6. ऊँचाई 7. समीपता 8. उष्णता **(ङ)** 1. व्यायाम के लाभ 2. विपत्तियों का आगार संयमहीन जीवन को बताया गया है। 3. संयमी व्यक्ति को शक्तिमान बताया गया है। 4. विपत्तियाँ व्यायाम करने से दूर होती हैं। 5. वीरता का दुष्प्राप्य अंग धैर्य है। 6. वीरों का भूषण क्षमा है। 7. आगार–घर, संयमी–संयम रखने वाला, संयम–नियंत्रण, संयमहीन–उग्र, कुंजी–चाबी, आकंठ–गले तक 8. संयमी–असंयमी, संतोष–असंतोष, क्षमा–दंड, शांति–अशांति, वीरता–कायरता, धैर्य–अधैर्य 9. संयम–संज्ञा, धैर्य–संज्ञा, धैर्यवान–विशेषण, संयमी– विशेषण, वीरता–संज्ञा, संतोषी–विशेषण, संतोष–संज्ञा, पाप–संज्ञा, पुण्य–संज्ञा 10. वीर–वीरता, संतोषी –संतोष, कायर–कायरता

15. दोहा दशक (दोहे)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. उपकारी दूसरों का भला करने वाले को कहते हैं। 2. उपकारी लोगों की संगति की तुलना मेहंदी के रंग से की गई है। 3. मेहंदी का रंग लाल होता है। 4. खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने को व्यर्थ कहा गया है। 5. कौए और कोयल की पहचान बसंत ऋतु में होती है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) 6. (स) **(ख)** 1. रहीम ने उपकारी लोगों को धन्य कहा है। 2. कौआ और कोयल क्रमशः बुरे और भले के प्रतीक हैं। 3. खजूर के वृक्ष से व्यक्ति को छाया नहीं मिलती और उसके फल पहुँच से दूर होते हैं। 4. चिंता मिटाने हेतु इच्छाओं के त्याग को उपचार बताया गया है। 5. जिसे कुछ नहीं चाहिए उसे रहीम ने राजाओं का राजा बताया है। **(ग)** 1. मेहंदी की यह विशेषता होती है कि उसका रंग बाँटने वाले के हाथ पर भी लग जाता है। 2. ज्ञानीजन संपत्ति का संचय परोपकार हेतु करते हैं। 3. कुल कपूत की गति की दीपक से तुलना ऐसे की गई है कि जब वह बुरे कर्म करता है तो जिस प्रकार दीपक बुझने पर अँधेरा होता है उसी प्रकार परिवार का पतन होता है। 4. चिंता मिटाने हेतु उपचार बताया गया है कि व्यक्ति द्वारा इच्छाओं का त्याग कर देना चाहिए। **(घ)** 1. ऐसे लोग धन्य होते हैं जो उपकारी लोगों के साथ रहते हैं क्योंकि उपकारी के कार्यों से उनकी गणना भी अच्छे लोगों में होती है। 2. सूई और तलवार के विषय में रहीम ने बताया है कि सूई जो कार्य (सिलने का कार्य) कर सकती है वह कार्य तलवार नहीं कर सकती। 3. बड़ा होने की सार्थकता इसी में है कि व्यक्ति दूसरों के हित के कार्य करे अर्थात् लोगों का उपकार करे। 4. भले–बुरे की पहचान के विषय में रहीम ने कहा है कि भले और बुरे व्यक्ति की पहचान उनकी बोली से होती है जिस प्रकार कौआ–कोयल देखने में एक जैसे लगते हैं लेकिन बसंत ऋतु में उनकी बोली से अंतर पता लगता है। **(ङ)** 1. इन पंक्तियों का आशय है कि जिनके पास देने का सामर्थ्य व मन हो उन्हीं से कुछ प्राप्त किया जा सकता है। असमर्थ लोगों से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता जैसे सूखे तालाब पर जाने से व्यक्ति की प्यास नहीं बुझती। 2. इन पंक्तियों का आशय यह है कि इच्छाओं का त्याग करके व्यक्ति चिंता रहित हो सकता है जो जीवन में किसी वस्तु की इच्छा नहीं रखते वे राजाओं के राजा होते हैं। **(च)** 1. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि नाराज़ सज्जन को मनाने को कह रहे हैं। **व्याख्या**–प्रस्तुत पंक्तियों में रहीम जी कह रहे हैं जिस प्रकार मोतियों की माला टूटने पर मोतियों को बार–बार पिरोकर पुनः माला बनाई जाती है उसी प्रकार हमें किसी सज्जन के बार–बार नाराज होने पर हमें विनयपूर्वक उसकी नाराजगी दूर करनी चाहिए। 2. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने अच्छे स्वभाव के लोगों की विशेषता बताई है। **व्याख्या**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि अच्छे स्वभाव वाले व्यक्ति पर बुरी संगति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता जिस प्रकार चंदन के वृक्ष पर साँपों के लिपटे रहने पर भी उस पर विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 3. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि उपकारी लोगों के साथ रहने का

लाभ बता रहे हैं। **व्याख्या–**प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि वे लोग भाग्यशाली हैं जो परोपकारी लोगों के साथ रहते हैं क्योंकि उनको भी उनके परोपकार के यश का लाभ मिलता है और उनकी गणना भी अच्छे व परोपकारी लोगों में होती है। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. जल, नीर, वारि 2. पेड़, विटप, गाछ 3. साँप, सर्प, व्याल 4. काक, काग, वायस 5. कोकिला, काकपाली, वसंतदूत **(ख)** 1. परोपकारी/परमार्थी 2. स्वार्थी 3. वाचाल 4. मधुभाषी **(ग)** 1. क, पूत 2. कु, संग 3. वि, शेष 4. उप, कारी 5. अप, यश 6. अ, नीति **(घ)** 1. विषैला 2. उपकारी 3. रंगीला 4. लोभी **(ङ)** 1. लघुता 2. भलाई 3. बड़प्पन 4. विशालता 5. बुराई 6. प्रभुता

16. गिरवन के सिंह (वन्यजीव आधारित लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. भारत के वनों में जितने दुर्लभ और विविध प्रकार के प्राणी मिलते हैं, उतने अन्य किसी देश में नहीं। 2. भारत में शेर की प्रजाति के प्रति उसके लुप्त होने का भय बताया गया है। 3. लुप्त होती प्रजाति की रक्षा के लिए कानून बनाने होंगे व उनकी संख्या बढ़ाने के उपाय करने होंगे। 4. सरकार ने सभी जंगलों में शिकार खेलने पर प्रतिबंध लगाना दिया है और ऐसे जंगल सुरक्षित वन घोषित कर दिए हैं, जहाँ प्राणी बंद बाड़ों में नहीं बल्कि खुले और प्राकृतिक वातावरण में निर्भय और बेरोक-टोक आज़ादी से घूम सकते हैं। 5. सभी जंगलों में शिकार के प्रति सरकार ने यह नीति अपनाई है कि शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (स) **(ख)** 1. जंगल के रंगमंच का नायक पशु शेर है। 2. सिंह स्वभाव से निडर व बहादुर प्राणी है। 3. गिरनार नाम सिहों के कारण पड़ा। 4. सिंह पहले उत्तरी भारत में काफ़ी बड़े क्षेत्र तक और दक्षिण में नर्मदा नदी तक पाए जाते थे। 5. अब सिंह गुजरात के सौराष्ट्र के गिरवन क्षेत्र में ही रह गए हैं। **(ग)** 1. शिकारियों की हवस, सिर और खाल के शौक, वनों की कटाई, आबादी की बढ़ोत्तरी, खेती के लिए भूमि के अधिकाधिक उपयोग आदि कारणों से भारत में सिंहों की संख्या घटी। 2. गिरवन की छोटी-छोटी पहाड़ियों, झुरमुटों, कुंडों के किनारे यानी कि हर कहीं सिंह अपनी मौज-मस्ती में घूमते रहते हैं। अन्य जगहों पर शिकारियों की नज़र इन पर पड़ जाती है और वे इनका शिकार कर देते हैं। 3. गिरवन जूनागढ़ आदि स्थानों से पर्यटकों वाली बसों से पहुँचा जा सकता है। 4. पहला कारण यह है कि गिरवन विश्वप्रसिद्ध है, जिसे दुनिया भर के पर्यटक लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष देखने आते हैं और सिंहों को अपने-अपने कैमरों में बंद करके ले जाते हैं, उनके रहन-सहन का अध्ययन करते हैं और उनकी जीवनचर्या पर फ़िल्में भी बनाते हैं। दूसरा कारण यह है कि सिंह जंगल का राजा है। 5. सिंदों को गिरवन के अलावा अन्य स्थानों पर बसाने की भी कोशिश की गई थी लेकिन वहाँ ये पनप न सके। उत्तर प्रदेश में वाराणसी के चकिया वन में चंद्रप्रभा अभयारण्य में गिरवन के सिंह रखे गए थे लेकिन पास-पड़ोस के गाँववालों ने उन्हें विषयुक्त आहार देकर मार डाला। इसका मुख्य कारण यह भी है कि ये स्वभाव के अनुसार जंगल के अंदर न रहकर बाहर आकर घूमते हैं और खुले में झाड़ियों वाली जगह पसंद करते हैं। इसलिए इन पर मारने वालों की निगाह आसानी से पड़ जाती है। **(घ)** 1. गिरवन जूनागढ़ में स्थित है। गिरवन एक अनोखा, आकर्षक और दर्शनीय स्थान है और ऐसा शरणवन दुनिया में और कहीं नहीं है। यह पूरा घना जंगल नहीं बल्कि अर्ध बंजर भूमि का विस्तृत भू-भाग है। एशियाई सिंह का यह शरण स्थल 1295 वर्ण किलोमीटर क्षेत्र में किस्म-किस्म के पतझड़ी वृक्षों और कँटीली झाड़ियों वाले सूखे तथा खुले जंगल के रूप में फैला हुआ है। गिरवन की छोटी-छोटी पहाड़ियों, झुरमुटों, कुंडों के किनारे यानी कि हर कहीं सिंह अपनी मौज-मस्ती में घूमते रहते हैं। सिंह के अलावा यहाँ जंगली सुअर, तेंदुए, हिरन, बारहसिंगा, गीदड़, लोमड़ी, चीतल, सांभर आदि जानवर रहते हैं। 2. जीप से और नीचे उतरकर ओट से लेखक को गर्वीले

सिंहों को बिलकुल नज़दीक से देखने का मौका मिला, कभी टहलते हुए, कभी पानी पीते हुए, कभी एक-दूसरे पर गुर्राते हुए, कभी बच्चों से खिलवाड़ करते हुए, आराम करते हुए तो कभी शिकार को दबोचते हुए और खाते हुए। पहले तो उन्हें बहुत डर लगा; लेकिन वन-अधिकारियों के साथ रहने पर उनका डर भाग गया और वे सिंहों के निकट रहकर कैमरामैन के खेल में शामिल हो गए। 3. सिंहनी लंबी और खुरदरी जीभ से बच्चों को चाट-पोंछकर साफ़ रखती है और उनके लिए शिकार करके लाती है। थोड़ा बड़ा होते ही उन्हें शिकार करने की विधि सिखाने के लिए ले जाती है। वह इनकी शिक्षिका होती है। 4. सिंह के जबड़े की मांसपेशियाँ इतनी मज़बूत होती हैं कि वह हिरन, सुअर और यहाँ तक कि भैंसे को मुँह में दबाकर आसानी से ले जा सकता है। पिछली टाँगों और शरीर के अगले भाग की बनावट के कारण यह पाँच मीटर तक लंबी छलाँग मार सकता है। यह गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट, घोड़े, हिरन, बारहसिंगा, सुअर आदि का शिकार करता है। जीभ की कड़ी स्वाद-कलियों की सहायता से यह हड्डी से मांस को रेती की तरह छील सकता है। **(ङ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. अधिकरण कारक 2. संबंध कारक 3. अधिकरण कारक **(ख)** 1. जंगल, अरण्य, कानन 2. शेर, केसरी, नाहर **(ग)** 1. पहाड़ियाँ 2. कैमरे 3. कलियाँ 4. मांसपेशियाँ 5. गद्दियाँ 6. बच्चे **(घ) विशेषण**-गर्वीले, पतला, पिछली, रोबीली, दुर्लभ, लचीला **विशेष्य**-सिंह, अयाल, टाँगें, आकृति, प्राणी, शरीर **(ङ) सिंह**-संज्ञा, **गिरिवन**-संज्ञा, **कैमरा**-संज्ञा, **निर्भय**-विशेषण, **उद्यान**-संज्ञा, **पतला**-विशेषण, **लचीला**-विशेषण, **फुर्तीली**-विशेषण, **छोटा**-विशेषण, **वन**-संज्ञा, **आवश्यकता**- संज्ञा, **आज़ादी**-संज्ञा

हिंदी-7

1. ठुकरा दो या प्यार करो (कविता)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता को सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा है। 2. उपासक देव के लिए बहुमूल्य वस्तुएँ लेकर आते हैं। 3. कवयित्री ने पूजा और पुजापा स्वयं को कहा है क्योंकि वह खाली हाथ आई है। 4. कवयित्री प्रेममगन हो मंदिर में अपना हृदय दिखाने और चढ़ाने आई है। **लिखित-(क)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) **(ख)** 1. कवयित्री प्रेममगन हो मंदिर में अपना हृदय दिखाने और चढ़ाने आई है। 2. कवयित्री ने अपने प्रेम को स्वीकार करने और ठुकराने के लिए कहा है। 3. कवयित्री ने पूजा और पुजापा स्वयं को कहा है। 4. 'मैं उन्मत्त प्रेम की प्यासी' से कवयित्री का अभिप्राय है-मैं प्रेम में मगन आपके प्रेम की आकांक्षिणी हूँ। **(ग)** 1. कवयित्री अपने मन के भाव ईश्वर के प्रति भक्ति व समर्पण से व्यक्त करती है। 2. प्रस्तुत कविता का संदेश है कि भगवान की उपासना सच्चे हृदय से की जाती है न कि ठाठ-बाट और आडंबरों से। **(घ)** 1. हमें ईश्वर की सच्ची भक्ति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि ईश्वर ने ही हमें सभी वस्तुएँ प्रदान की हैं। उन्हें इन सभी वस्तुओं और जीवन में प्राप्त सफलता व प्रसन्नता का धन्यवाद देने के लिए भक्ति करनी चाहिए। ईश्वर सच्ची भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं आडंबर से नहीं। ईश्वर की भक्ति के लिए आडंबर की ज़रूरत नहीं होती। 2. प्रस्तुत कविता का सार यह है कि कवयित्री बाहरी आडंबरों का विरोध करती है। भगवान भक्त के महँगे उपहारों से प्रसन्न नहीं होते। वे सच्चे भाव चाहते हैं। कवयित्री केवल भक्ति भाव चढ़ाना चाहती है। सच्चे मन से प्रार्थना करना चाहती है। **(ङ)** स्वयं करें। **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. सुमन, कुसुम, प्रसून 2. ईश्वर, भगवान, परमात्मा **(ख)** 1. दानव 2. मूल्यहीन 3. काँटा 4. अमंगल 5. दोष 6. दुस्साहस 7. अधैर्य 8. अस्वीकार **(ग)** 1. ढंग 2. रिक्त 3. प्रेममगन 4. स्वामी **(घ)** 1. संप्रदान कारक 2. कर्ता कारक 3. अधिकरण कारक 4. कर्म कारक **(ङ)** 1. अप 2. प्र 3. सु 4. कम 5. स 6. परि 7. उप 8. आ 9. अव 10. अ

2. संस्कृति क्या है? (प्रेरणाप्रद लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. संस्कृति से अभिप्राय है–उत्तम अथवा सुधरी हुई स्थिति। 2. सभ्यता मनुष्य के उस गुण को कहते हैं, जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। 3. सभ्य आदमी को सुसंस्कृत कहते हैं। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) **(ख)** 1. मनुष्य के भीतर छह विकार (काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर) हैं। 2. यदि मनुष्य अपने भीतर के विकारों को न रोके, तो वह इतना गिर जाएगा कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाएगा। 3. दुर्गुणों पर काबू पाने वाला व्यक्ति सांस्कृतिक रूप से सुसंस्कृत कहलाया। 4. संस्कृति आदान-प्रदान से बढ़ती है। **(ग)** 1. संस्कृति की विशेषता है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं, तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। एक जाति का धार्मिक रिवाज़ दूसरी जाति का रिवाज़ बन जाता है और एक देश की आदत दूसरे देश के लोगों की आदत में समा जाती है। 2. संस्कृति से मनुष्य परोपकार, दया सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है। 3. असभ्यता की स्थिति से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया। यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, घर बनाकर रहने लगा और कपड़े बनुकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता में आने लगा। आज भी रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज़, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभी अच्छी सभ्यता की पहचान हैं। 4. संस्कृति की दृष्टि से वह देश या जाति बहुत ही महान बताई जाती है, जिसने ज़्यादा-से-ज़्यादा देशों या जातियों की संस्कृति का विकास किया हो। ऐसे देशों में भारत का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है; क्योंकि यहाँ के लोग संस्कृति के मामले में बड़े उदार रहे हैं। **(घ)** 1. सभ्यता वह है जो हमारे पास है लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लत्ते होते हैं, गाय, भैंस, बैल, घोड़े, हाथी, मोटर और हवाई जहाज़ भी होते हैं मगर ये सारी वस्तुएँ हमारी सभ्यता के सबूत हैं जिनसे यह जाना जा सकता है कि ज़िंदगी की मोटी और बाहरी सुविधाएँ हमने कहाँ तक हासिल की हैं। लेकिन संस्कृति इतने मोटे तौर से दिखाई नहीं देती; वह बहुत ही सूक्ष्म और महीन है और वह हमारी प्रत्येक पसंद तथा आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं–यह हमारी संस्कृति बताती है; कपड़ा तैयार करना सभ्यता का काम है, लेकिन उसका रंग-रूप कैसा हो–यह हमारी संस्कृति बताती है; हथियार गढ़ना सभ्यता का काम है, लेकिन उस हथियार से किसी को मारना ठीक है या नहीं, यह बताना संस्कृति का काम है। 2. एक वह समय था, जब मनुष्य को घर बनाना नहीं आता था। जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था, जब उसे खेती करना भी नहीं आता था और वह कंद-मूल या जंगली जीवों का गोश्त खाकर गुज़ारा करता था। उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था, वह या तो नंगा रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर अपनी लाज छिपाता था। इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की स्थिति कहते हैं। 3. भारतीय संस्कृति का जब-जब किसी विदेशी संस्कृति से मिलन हुआ, तब-तब हमारी संस्कृति में एक नई ताज़गी आ गई। असल में भारतीय संस्कृति में बसंत ऋतु बड़े पैमाने पर चार बार आई है और इन चारों मौकों पर हमारी फुलवारी में जो लहलहाहट पैदा हुई, जो फूल खिले, वे हमारी संस्कृति को आज भी ताज़ा बनाए हुए हैं। इन चार अध्यायों में पहला अध्याय वह है जब आर्य इस देश में आए और द्रविड़ जाति से मिलकर उन्होंने उस संस्कृति की नींव डाली, जिसे हम हिंदू अथवा भारतीय संस्कृति कहते हैं। दूसरा अध्याय वह है जब संस्कृति कुछ पुरानी हो गई। इस संस्कृति के खिलाफ़ महात्मा बुद्ध और महावीर ने विद्रोह किया जिसके फलस्वरूप बहुत-सी रूढ़ियाँ दूर हुईं

और यह संस्कृति एक बार फिर से नवीन हो गई। तीसरा अध्याय वह है जब इस देश में मुसलमान आए और हिंदू धर्म का इस्लाम से संबंध हुआ और चौथा अध्याय वह है जब भारत की मिट्टी पर हिंदुत्व और इस्लाम, दोनों का संबंध ईसाई धर्म और यूरोप के विज्ञान और बुद्धिवाद से हुआ। **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है कि संस्कृति दिखावा या दूसरों से स्वयं को उच्च दर्शाना नहीं बल्कि व्यावहारिकता व विनम्रता है। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. भाववाचक संज्ञा 2. संज्ञा 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. संज्ञा 5. विशेषण **(ख)** 1. लोभी 2. मोहित 3. परोपकारी 4. विद्रोही 5. शिष्ट 6. नवीन 7. महान 8. प्राचीन 9. सभ्य 10. उन्नत **(ग)** 1. वर्षा हो रही थी। 2. पिछले महीने फल पक गए थे। 3. वह पहले सुनता था फिर बोलता था। 4. अजय पत्र लिख रहा था। 5. पंडित जी कथा सुनाते थे। **(घ)** 1. प्रश्नवाचक वाक्य 2. निषेधवाचक वाक्य 3. आज्ञावाचक वाक्य 4. इच्छावाचक वाक्य 5. विस्मयवाचक वाक्य **(ङ)** 1. दिक् + दर्शन 2. सत् + भावना 3. सदा + एव 4. परि + आवरण 5. परम + ईश्वर 6. सुर + इंद्र **(च)** 1. समीपता 2. शीघ्रता 3. पारिवारिक 4. मनुष्यता 5. सज्जनता 6. शिष्टता 7. विनम्रता 8. सभ्यता 9. सुंदरता 10. सघनता

3. नादान दोस्त (कहानी)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कहानी के लेखक प्रेमचंद हैं। 2. प्रस्तुत कहानी के प्रमुख पात्र केशव, श्यामा और उनकी माता हैं। 3. प्रस्तुत कहानी का मुख्य विषय है चिड़िया के अंडों की देखभाल। 4. प्रस्तुत कहानी में बाल सुलभ चेष्टाओं का इस प्रकार वर्णन किया गया है–श्यामा दौड़कर पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई। केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया। उसकी कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे-से उस पर रख दिए। अंडों पर छाया के लिए टोकरी रख दी व चिड़ियों के लिए दाना व प्याली में पानी रख दिया। 5. बच्चों की चेष्टाओं में चिड़िया के अंडे खराब हो गए और चिड़िया ने अंडे फोड़ दिए। केशव कसूरवार रहा। 6. पक्षियों के अंडों को छूना नहीं चाहिए। छूने से चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) **(ख)** 1. चिड़िया ने अंडे केशव के घर में कार्निस के ऊपर दिए थे। 2. बच्चे चिड़िया की बच्चों को चारा खिलाने की कठिनाई का अंदाज़ा लगाकर घबरा उठे थे। 3. चिड़िया के अंडों को धूप से बचाने के लिए टोकरी से छाया की गई। 4. केशव ने चिथड़े अंडों के नीचे रखने के लिए मँगवाए। 5. केशव श्यामा को बार-बार स्टूल सही न पकड़ने पर पीटने की धमकी देता था। 6. श्यामा केशव पर उसे चिड़िया के अंडे न दिखाने के कारण नाराज़ हो गई थी। **(ग)** 1. बच्चों के मन में चिड़ियों के प्रति इस प्रकार के प्रश्न उठते थे-अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? क्या खाते होंगे? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है? 2. दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिनों-दिन अंडों को देखने के लिए बढ़ती जा रही थी। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब ज़रूर बच्चे निकल आए होंगे। बच्चों के चारे का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ। चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ से लाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे। गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे। 3. केशव ने श्यामा को अंडे इसलिए नहीं दिखाए क्योंकि उसे डर था कि वह स्टूल से नीचे गिर सकती है तथा ऐसा होने पर माँ को पता लग जाएगा और दोनों को माँ मारेंगी। 4. केशव इसलिए डर गया था कि कहीं श्यामा माँ से न कह दे। उसने श्यामा को अंडे न दिखाए थे, इससे अब उसको श्यामा पर विश्वास न था। 5. चार बजे दोनों बच्चों ने देखा कि टोकरी का पता न था तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई चूने की-सी चीज़ बाहर निकल आई है। पानी की प्याली भी एक तरफ़ टूटी पड़ी है। **(घ)** 1. प्रस्तुत कहानी में श्यामा दौड़कर पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई। केशव ने उसकी कई तह करके एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे-से उस पर रख दिए। अंडों पर

छाया के लिए टोकरी रख दी व चिड़ियों के लिए दाना व प्याली में पानी रख दिया। 2. केशव ने चिथड़ों के ऊपर तिनके बिछाकर उन पर अंडे रख दिए। अंडों के ऊपर छाया करने के लिए टोकरी रख दी और टोकरी ने नीचे प्याली में पानी रख दिया तथा चावल के दाने रख दिए। 3. अंडों के फूट जाने पर दोनों बच्चे सहम गए। उनकी माँ ने उन पर गुस्सा किया तथा उन्हें डाँटा और समझाया कि अंडों को छूने पर चिड़िया अंडे नहीं सेती वह अंडों को गिराकर तोड़ देती है। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ) **(ख)** 1. टोकरियाँ 2. अंडे 3. तैयारियाँ 4. कोठरियाँ 5. टहनियाँ 6. चौकियाँ 7. छड़ियाँ 8. धोतियाँ **(ग)** 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग 6. स्त्रीलिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग 9. स्त्रीलिंग 10. पुल्लिंग **(घ)** 1. अधिकरण कारक 2. कर्म कारक 3. कर्ता कारक 4. संबंध कारक 5. अपादान कारक **(ङ)** 1. भविष्यत्काल 2. वर्तमानकाल 3. भविष्यत्काल 4. भूतकाल 5. भविष्यत्काल **(च) विशेषण**–पुरानी, एक, रोनी, तीन, दोनों, गरीब, थोड़े, उजला **विशेष्य**–धोती, टहनी, सूरत, अंडे, चिड़ियाँ, बच्चे, तिनके, पानी **(छ)** 1. प्रश्नवाचक वाक्य 2. आज्ञावाचक वाक्य 3. आज्ञावाचक संज्ञा 4. विधानवाचक वाक्य 5. विस्मयवाचक वाक्य 6. निषेधवाचक वाक्य **(ज)** 1. यूरोपीय देशों ने जीवन की समृद्धि के लिए आवश्यकताओं की वृद्धि को स्वीकार किया है। 2. भारत ने अपरिग्रह का और आवश्यकताएँ हटाओ का उपदेश दिया। 3. भारत ने 'सादा जीवन उच्च विचार' का संदेश सुनाया। 4. भारत ने वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में समाज-कल्याण के लिए जीवन समर्पण का पथ प्रशस्त किया। 5. भारत ने समाज- कल्याण के लिए जीवन समर्पण का पथ प्रशस्त किया। चिंतन के इसी अंतर के कारण पाश्चात्य नागरिकों का अंत:करण अशांत है। 6. नैराश्यपूर्ण जीवन के कारण पाश्चात्य नागरिकों में आत्महत्या की प्रमुखता है, विक्षिप्तता का प्राचुर्य है। 7. सोने के लिए पश्चिमी देशों के नागरिक नींद की गोलियों का सहारा लेते हैं। 8. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-सादा जीवन उच्च विचार।

4. सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन् (जीवन-परिचय)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. डॉ० राधाकृष्णन् भारत के दूसरे राष्ट्रपति थे। 2. इंजील ईसाइयों की धार्मिक पुस्तक है। 3. डॉ० राधाकृष्णन् का निधन 2 जून, 1975 को हुआ था। 4. विश्व में डॉ० राधाकृष्णन् को महान दार्शनिकों के रूप में जाना जाता है। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (स) **(ख)** 1. डॉ० राधाकृष्णन् बचपन से ही अदृश्य जगत के रहस्योद्घाटन में लग गए। 2. डॉ० राधाकृष्णन् ने ईसाई मिशन की संस्थाओं में शिक्षा पाई। 3. मानव को ऊँचा बनाने में डॉ० राधाकृष्णन् ने हृदय की स्पंदनशीलता और परदुखकातरता के दो गुणों को अनिवार्य बताया। 4. प्राचीन शिक्षा पद्धति को डॉ० राधाकृष्णन् सर्वोत्तम मानते थे। **(ग)** 1. जब राधाकृष्णन् स्नातक होकर निकले, तब वे इंजील का भी अध्ययन कर चुके थे। वह समय ऐसा था जब यूरोपियन लोग भारतीय दर्शन की यह कहकर खिल्ली उड़ाया करते थे कि वह तो 'आत्मा' और 'कर्म' के विषय में मूर्खतापूर्ण और भ्रांतिमूलक धारणाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। राधाकृष्णन् को यह अच्छा नहीं लगता था इसलिए ''ईसाई आलोचकों की इस चुनौती ने उन्हें हिंदू धर्म के अध्ययन के लिए प्रेरित किया 2. डॉ० राधाकृष्णन् पुन: राष्ट्रपति पद पर इसलिए आसीन नहीं हुए क्योंकि राजनीति में उनकी दिलचस्पी नहीं थी, उन्हें भाग-दौड़ पसंद नहीं थी। वे बिना किसी बाधा के लगातार पढ़ते रहना चाहते थे। 3. तीर्थों की पृष्ठभूमि से जुड़ी राधाकृष्णन् की जन्मस्थली का उनके ऊपर यह प्रभाव पड़ा कि वे बचपन से ही अदृश्य जगत के रहस्योद्घाटन में लग गए। 4. राधाकृष्णन् की गणना विश्व के अद्वितीय वक्ताओं में इसलिए की जाती है क्योंकि वे इतना धाराप्रवाह और इतनी सशक्त शैली में बोलते थे कि सुनने वाले मुग्ध हो जाते थे। उनकी वाणी में ओज था और भाषा में गजब प्रवाह और प्रभाव। संतुलित शब्दों में वे

अपने विषय का इतने सुंदर शब्दों में प्रतिपादन करते थे कि उनकी बात सीधी हृदय में प्रवेश कर जाती थी। 5. डॉ० राधाकृष्णन् ने जीवन के अंतिम दिन मद्रास में अस्वस्थता में व्यतीत किए। **(घ)** 1. शिक्षा समाप्त करके राधाकृष्णन् सर्वप्रथम सौ रुपये मासिक पर मद्रास (चेन्नई) में लेक्चरर नियुक्त हुए। दर्शनशास्त्र तो उनका विषय था ही, शीघ्र ही वे मद्रास प्रेसीडेंसी कॉलेज में 1911 में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर और 1916 में प्रोफ़ेसर बन गए। 1918 में वे मैसूर विश्वविद्यालय में चले गए और 1921 तक वहाँ रहे। सन् 1926 और 1929-30 में ऑक्सफोर्ड के मानचेस्टर कॉलेज में और 1926 में शिकागो विश्वविद्यालय में वे प्रोफ़ेसर रहे। सन् 1927 में भारतीय दर्शन परिषद् के बंबई (मुंबई) अधिवेशन के अध्यक्ष बने। सन् 1931 से 1939 तक राष्ट्रसंघ (लीग ऑफ़ नेशंस) की बौद्धिक सहकारी अंतर्राष्ट्रीय समिति के सदस्य रहे। सन् 1947 में देश के स्वतंत्र होने पर वे भारत के राजदूत होकर रूस गए। जब सन् 1950 में गणराज्य की घोषणा हुई, तो उन्हें सर्वसम्मति से उपराष्ट्रपति के पद पर आसीन किया गया। वे बारह वर्ष तक उस पद पर रहे और राजेंद्र बाबू के बाद सन् 1962 में राष्ट्रपति बने। सन् 1954 में उनकी महान सेवाओं के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया। 2 जून, 1975 को इनका निधन हो गया। 2. 'गाँधी-अभिनंदन ग्रंथ' में उन्होंने लिखा था-''समय महान वीरों को अन्य अनेक वस्तुओं की भाँति बड़ी सुगमता से भूल चुका है परंतु संतों की स्मृति आज भी सुरक्षित है। गाँधी जी की महत्ता का कारण—उनके वीरतापूर्ण संघर्ष इतने नहीं जितना कि उनका पवित्र जीवन है और यह भी ऐसे समय में जबकि विनाश की शक्तियाँ प्रबल होती दिख रही हैं। वे आत्मा का सृजन करने तथा जीवन देने की शक्ति पर ज़ोर देते हैं।'' 3. आत्मा का सृजन करने तथा जीवन देने की शक्ति के मूल-तंत्र को अपने जीवन में राधाकृष्णन् ने उतारा। इससे वे इतने बड़े बने और उनकी विद्वत्ता उनके लिए वरदान सिद्ध हुई। इन मनीषी का जीवन-दर्शन इन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है—''केवल शुद्ध हृदय वाला ही ईश्वर से और मनुष्य से प्रेम कर सकता है। सहनशीलतायुक्त प्रेम आध्यात्मिकता का एक चमत्कार है। इसमें यद्यपि दूसरों के अन्याय हमें अपने कंधों पर झेलने पड़ते हैं, तथापि उससे एक ऐसे आनंद का अनुभव होता है, जो शुद्ध स्वार्थमय सुख की अपेक्षा अधिक वास्तविक और गहरा होता है। ऐसे अवसरों पर ही ज्ञात होता है कि संसार में इस ज्ञान से बढ़कर मधुर अन्य कुछ नहीं कि हम किसी दूसरे को क्षमा कर सुख दे सकें, इस भावना से बढ़कर मूल्यवान अन्य कुछ नहीं कि हमने किसी दूसरे के दु:ख में हाथ बँटाया। अहंकार-रहित, गर्वशून्य भलाई करने के भी गर्व से शून्य पूर्ण दयालुता ही धर्म का सर्वोच्च रूप है।'' **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है कि शुद्ध हृदय वाले मनुष्य के मन में छल-कपट, द्वेष, निर्ममता आदि दुर्गुण नहीं होते हैं इन दुर्गुणों से रहित व्यक्ति ही ईश्वर और मनुष्यों से प्रेम कर सकता है। **भाषा-ज्ञान—(क)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) **(ख)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) **(ग)** 1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक 3. क्रियाविशेषण 4. संबंधबोधक 5. क्रियाविशेषण **(घ)** 1. भूतकाल 2. भूतकाल 3. भूतकाल 4. भविष्यत्काल 5. वर्तमानकाल **(ङ)** 1. वह कष्ट सहता रहा; लोग आनंद लेते रहे। 2. भाई भरत, तुम अयोध्या लौट जाओ। 3. डटकर परिश्रम करो, परीक्षा निकट है। 4. जीवन संग्राम में सब लड़ रहे हैं; कुछ जीतेंगे कुछ हारेंगे।

5. कर्तव्यपरायणता (संस्मरण)

मौखिक—(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. कर्तव्य से तात्पर्य उस कार्य से है जो व्यक्ति अपने हित के लिए अपनी इच्छा अनुसार नहीं बल्कि निश्चित नैतिक सिद्धांतों के आधार पर करता है। 2. पूर्ण निष्ठा, समर्पण, बिना लालच के और आदर की भावना से कर्तव्य निभाना कर्तव्यपरायणता है। 3. मज़दूरों को लेखक ने 'नूरजहाँ का सगा भाई' कहकर विशेष पहचान दी है। 4. लेखक ने जफ़र को दिलचस्प

आदमी इसलिए कहा क्योंकि वह सबका सम्मान करता है और मज़दूरों के बाल भी लगन से काटता है। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (स) **(ख)** 1. लेखक के दुकान पर पहुँचते ही ज़फ़र मियाँ ने उस्तरा एक ओर रख दिया। उनके लिए उन्होंने कुरसी बिछाई और बाहर की दुकान से चाय का प्याला लाकर उन्हें दिया। 2. मज़दूर आरा चलाने के कार्य से संबंधित थे। 3. बाल काटते समय ज़फ़र मियाँ को यह भी याद नहीं था कि लेखक भी बैठे हैं। 4. बालों की कटाई के प्रति ज़फ़र मियाँ की तल्लीनता देखकर लेखक ने ज़फ़र को गले लगा लिया। **(ग)** 1. मज़दूरों के बालों में रेत भरी थी और बुरादा भी। उनकी गरदन काली चीकट हो रही थी और मुँह पर धूल भी थी। 2. लेखक ने सोचा संभवत: मज़दूर हज़ामत के बाद आज नहाएँगे और बालों में तेल डालकर कंघा करेंगे, पर कल इनमें फिर यही धूल और बुरादा भर जाएगा और ऐसे ही उलझ जाएँगे, जैसे आज उलझे हुए हैं। 3. मज़दूर पाँच-सात दिन से नहीं नहाया था। बालों में उसके रेत भरी थी और बुरादा भी। उसकी गरदन काली चीकट हो रही थी और मुँह पर भी धूल थी, पर ज़फ़र साहब बड़ी लगन से उसके बाल काट रहे थे इसलिए लेखक ने उसे नूरजहाँ का सगा भाई बताया। 4. लेखक ज़फ़र मियाँ के मज़दूरों के धूल भरे बालों की कटाई व हज़ामत के तल्लीनता से किए कार्य से प्रभावित हुए। 5. लेखक ने राष्ट्र की जीवन-शक्ति का सर्वोत्तम मापदंड इस प्रकार तय किया, ''हर एक नागरिक में अपने काम के लिए चाव, श्रम के प्रति श्रद्धा और पेशे के प्रति ईमानदारी के भाव का जागरण ही राष्ट्र की जीवन-शक्ति का सर्वोत्तम मापदंड है।'' **(घ)** 1. लेखक के प्रति आदरभाव के होने पर भी ज़फ़र मियाँ ने उन्हें पहले क्रम में इसलिए नहीं रखा क्योंकि वह ईमानदार व कर्तव्यपरायण था। 2. ज़फ़र मियाँ कभी कंघे से बाल नापते हैं, कभी कैंची से और फिर फुरक-फुरक दो-चार कैंची मारते हैं। वे अपनी धुन में हैं। वे कंघा चलाते हैं पर वह नहीं चलता, उलझे बालों में अटक जाता है। ज़फ़र मियाँ बाल सुलझाते हैं और कंघा बढ़ाते हैं। कभी वे झुककर बालों का मिलान देखते हैं, कभी उभार कर, कभी इधर और कभी उधर। एक-एक बाल पर, एक-एक ढलाव पर, एक-एक मिलान पर ज़फ़र की निगाह रहती है, जैसे कोई इंजीनियर किसी पुल के खंभों का मिलान देख रहा हो। 3. स्वयं करें। **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है कि जो इस कुरसी पर बैठकर मुझसे बाल कटवाता है या हज़ामत करवाता है वही मेरे लिए प्रमुख व्यक्ति है अर्थात् मैं किसी से भेदभाव नहीं करता। मज़दूर हो या कोई बड़ा आदमी सभी मेरे लिए एकसमान हैं। **(च)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा-ज्ञान–उपसर्ग–**अव, अन, परि, कु, प्र, सु, बे, पर, अ, दुर्, कु, स, सु, ना, अप, सु **मूल शब्द–**नत, पढ़, पूर्ण, रूप, दर्शन, पात्र, खबर, अधीन, पूर्ण, गुण, मार्ग, जल, यश, पसंद, मान, योग **(ख)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब) 6. (अ) 7. (ब) **(ग)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) **(घ)** 1. स्मृतियाँ 2. कैंचियाँ 3. कंघे 4. कलमें **(ङ)** 1. विशेषण 2. संज्ञा 3. विशेषण 4. संज्ञा 5. संज्ञा 6. विशेषण 7. विशेषण 8. विशेषण 9. संज्ञा 10. संज्ञा **(च)** 1. मित्रों की संख्या में वृद्धि मीठे वचनों से होती है। 2. स्पष्ट और मीठे वचनों का सब ओर स्वागत होता है। 3. स्नेहपूर्वक व्यवहार अनेक लोगों के साथ करना चाहिए। 4. सलाहकार हज़ारों में से एक को चुनना चाहिए। 5. मित्र बनाने में उस पर विश्वास करने में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। 6. कोई-कोई व्यक्ति स्वार्थपूर्ति हेतु मित्रता करता है। 7. स्वार्थी मित्र संकट के दिनों में साथ नहीं देता है। 8. सच्चा मित्र जीवन की औषधि है। वह संकटकाल में शक्तिशाली रक्षक होता है। 9. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–सच्चा मित्र। 10. (अ) विशेषण (ब) विशेषण (स) विशेषण (द) विशेषण

6. खिलौना (कविता)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता के रचयिता सियाराम शरण गुप्त हैं। 2. दीना के

लाल की हठ राजकुमार वाले स्वर्ण-निर्मित खिलौनों से खेलने की है। 3. निर्धन स्त्री व्यथित हो उठती है क्योंकि उसका बेटा स्वर्ण-निर्मित खिलौनों से खेलने की हठ कर रहा है। 4. राजपुत्र मिट्टी के खिलौनों से खेलने की हठ कर रहा है। 5. राजपुत्र को यह कहकर समझाया जा रहा है कि दीना के लाल का खिलौना मिट्टी का है और तुम्हारा खिलौना सोने का है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) **(ख)** 1. कविता के लेखक का नाम सियाराम शरण गुप्त है। 2. दोनों बच्चों की हठ एक-दूसरे के खिलौने पाने हेतु है। **(ग)** 1. निर्धन महिला का लड़का मिट्टी के खिलौने इसलिए फेंक देता है क्योंकि वह राजकुमार को सोने के खिलौनों से खेलता हुआ देख लेता है और उन्हीं खिलौनों से खेलने की ज़िद करता है। 2. प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव है-आवश्यक नहीं कि धनी के बालक को स्वर्ण-निर्मित खिलौना ही पसंद आए। जब वह किसी अन्य बालक को मिट्टी के खिलौने से खेलते हुए देखता है तो अनेक अवसरों पर अपनी कीमती तथा सुंदर वस्तु की अपेक्षा अन्य की कमतर वस्तु उसे श्रेष्ठ लगने लगती है। **(घ)** 1. राजकुमार ने रानी से 2. रानी ने राजकुमार से 3. निर्धन माँ के पुत्र ने अपनी माता से। 4. निर्धन माँ के पुत्र ने अपनी माता से। **(ङ)** 1. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक में लिखित कविता 'खिलौना' से ली गई हैं; इस कविता को सियाराम शरण गुप्त जी के द्वारा लिखा गया है। प्रस्तुत पंक्तियों में माँ अपने पुत्र की हठ से दुखी हो जाती है। **भावार्थ**–प्रस्तुत पंक्तियों में निर्धन माँ अपने पुत्र की हठ से दुखी होकर कहती है वह खिलौना तो सोने का बना था। पुत्र, इसी खिलौने से खेल यह खिलौना तो राजा के घर पर भी नहीं है। 2. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक में लिखित कविता 'खिलौना' से ली गई हैं; इस कविता को सियाराम शरण गुप्त जी के द्वारा लिखा गया है। प्रस्तुत पंक्तियों में निर्धन का पुत्र सोने के खिलौने से खेलने की हठ करता है। **भावार्थ**–प्रस्तुत पंक्तियों में बताया गया है कि निर्धन के पुत्र ने अपना मिट्टी का गुड्डा फेंककर हठ की कि वह तो राजपुत्र वाले सोने के खिलौने से खेलेगा। 3. **प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक में लिखित कविता 'खिलौना' से ली गई हैं; इस कविता को सियाराम शरण गुप्त जी के द्वारा लिखा गया है। प्रस्तुत पंक्तियों में राजकुमार मिट्टी के खिलौने से खेलने की हठ कर रहा है। **भावार्थ**–प्रस्तुत पंक्तियों में बताया गया है कि राजकुमार अपने सोने-चाँदी के सभी खिलौने फेंक देता है और हठ करता है कि वह निर्धन के पुत्र वाले मिट्टी के खिलौने से खेलेगा। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. स्त्रीलिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग 6. पुल्लिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग 9. पुल्लिंग 10. स्त्रीलिंग **(ख)** 1. खिलौने 2. रानियाँ 3. दासियाँ 4. गुड्डे 5. पुस्तकें 6. मालाएँ 7. डालियाँ 8. शाखाएँ **(ग)** 1. कर्म कारक 2. कर्ता कारक 3. संबंध कारक **(घ)** 1. राजा का महल 2. राजा का पुत्र 3. भारत का वासी 4. सेना का पति **(ङ)** 1. भूतकाल 2. वर्तमानकाल 3. भूतकाल 4. वर्तमानकाल 5. भविष्यत्काल **(च)** 1. विमाता 2. बेईमान 3. खलनायक 4. अवगुण 5. विनाश 6. प्रतिध्वनि **(छ)** 1. योगरूढ़ 2. यौगिक 3. यौगिक 4. योगरूढ़ 5 योगरूढ़ 6. योगरूढ़ 7. योगरूढ़ 8. यौगिक

7. केसर वाले देश में (यात्रा वृत्तांत)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत पाठ के लेखक कन्हैयालाल नंदन हैं। 2. जम्मू कश्मीर भारत का केंद्र शासित प्रदेश है। जम्मू-कश्मीर के अधिकांश लोग जीवन-निर्वाह के लिए कृषि में लगे हैं और चावल, मक्का, गेहूँ, जौ, दालें, तिलहन तथा तंबाकू सीढ़ीनुमा कृषि ढलानों पर उगाते हैं। कश्मीर की घाटी में बड़े-बड़े बागों में सेब, नाशपाती, आड़ू, शहतूत, अखरोट और बादाम उगाए जाते हैं। कश्मीर की घाटी भारतीय उपमहाद्वीप के लिए एकमात्र केसर उत्पादक है। 3. 'रोप वे' एक सार्वजनिक परिवहन प्रणाली है जहाँ केबल की मदद से केबिन या खुली कुरसियों को ज़मीन से ऊपर ले जाया जाता है। 4. कश्मीर के दो प्रसिद्ध बाग 'निशात बाग' व 'शालीमार बाग' हैं। 5. अमरनाथ

बरफ़ के बने हुए हैं, जो चाँद के घटने-बढ़ने के हिसाब से घटते-बढ़ते रहते हैं। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) **(ख)** 1. रघुनाथ जी मंदिर का गुंबद सोने से जड़ा है और दूर से ही चमकता है। 2. अत्यधिक टेड़ा-मेढ़ा रास्ता पटनीटॉप के रामबन स्थान में बताया गया है। 3. अमरनाथ यात्रा के मार्ग में पिस्सूटॉप स्थान पर सबसे कठिन चढ़ाई है। 4. शेषनाग झील का पानी नीला है। 5. शेषनाग झील के आगे अमरनाथ गुफा है। 6. नसीम बाग को अकबर ने बनवाया था। इसे ठंडी हवाओं का बाग जानकर सही ढंग से समझा जा सकता है। **(ग)** 1. रक्षाबंधन को लोग बाबा अमरनाथ के दर्शन करने के लिए देश-विदेश से आते हैं। ये बाबा अमरनाथ बरफ़ के बने हुए हैं, जो चाँद के घटने-बढ़ने के हिसाब से घटते-बढ़ते रहते हैं। अमरनाथ के आगे लद्दाख की सीमाएँ हैं। 2. चार चिनार चार बड़े-बड़े चिनार के पेड़ों वाला एक छोटा-सा टापू है, जो आस-पास डल के पानी से घिरा हुआ बहुत खूबसूरत लगता है। 3. 'चश्मेशाही' एक सोता है, जिसका पानी दवा का काम करता है। चश्मेशाही यानी बादशाही सोता शाहजहाँ की देन है। 4. अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण कश्मीर को 'भारत का स्वर्ग' कहा जाता है। कश्मीर प्राकृतिक सुंदरता से पूर्ण एक पहाड़ी क्षेत्र है। यहाँ के सुंदर मनोरम दृश्य और बरफ़ीली पहाड़ियाँ सुंदरता की अद्भुत छटा बिखेरते हैं। 5. केसरवाला देश कहने से लेखक का अभिप्राय है कि भारत में केसर केवल कश्मीर में ही होती है। **(घ)** 1. जवाहर सुरंग के निर्माण के विषय में एक सज्जन ने बताया कि इस डेढ़ मील लंबी सुरंग को दोनों तरफ़ से तोड़ा गया। सुरंग बनाते समय जब बीच में पहुँचे और आर-पार नहीं हुए, तो काम करने वालों में निराशा छाने लगी। कहते हैं कि उसका इंजीनियर अपने काम पर इतना विश्वास रखता था कि उसने बारूद लगवाई और कहा कि तोड़ दो, इस बार आर-पार हो जाएगी। 'अगर न हुई तो?' कइयों के मन ने पूछा। 'तो फिर अपने को इंजीनियर नहीं कहेंगे,' इंजीनियर ने सोचा। बारूद के गोलों में आग लगा दी गई और पहाड़ की छाती दहल गई। सुरंग का मुँह आर-पार हो गया। 2. वेरीनाग हरियाली के कटोरे में स्थित बस्ती है, वहाँ एक खूबसूरत बगीचा और एक जलकुंड है, जिसे जहाँगीर ने चारों ओर से पक्का, मेहराबदार बनवा दिया था। कहते हैं यह झेलम नदी का उद्गम स्थल है। 3. सड़क के नीचे लिद्दर नदी का लगातार हाहाकार, मैंने इतनी खूबसूरत नदी अपनी याद में कभी देखी नहीं थी। यूरोप की कुछ मशहूर नदियों को देखकर हाल में ही लौटा था और उन नदियों की गंदगी देखकर लिद्दर की खूबसूरती सचमुच ऐसी लगी जैसी स्वर्ग की नदियों की होती होगी। तेज़ी ऐसी कि साँप भी पीछे रह जाए। स्वच्छता ऐसी कि बार-बार छूने को मन ललचाए। लेकिन ठंडी ऐसी कि पानी छुआ न जाए। 4.निशात बाग डल के किनारे ही चबूतरे जैसे बगीचों पर सीढ़ी-दर-सीढ़ी ऊपर चढ़ता हुआ एक खूबसूरत बाग है। बाग के सबसे ऊपरी हिस्से में खड़े होकर डल की तरफ़ देखिए तो ऐसा लगता है, मानो एक खूबसूरत स्त्री एक खूबसूरत आईने में अपना चेहरा झाँक रही हो। 5. शालीमार बाग जहाँगीर ने लगवाया था। चिनार के दरख़्तों की गोद में जहाँगीर का यह प्यारा-सा बाग करीब चार सौ साल पुराना है। इसके चबूतरे, संगमरमरी मेहराबों वाले छोटे-छोटे सैरगाह, बरामदे, चश्मे और झरने रात की रोशनी में इस दुनिया से ज़्यादा खूबसूरत लगते हैं। अब वहाँ रोज़ शाम को ध्वनि और प्रकाश के जरिए इतिहास को उतारा जाता है। वह दृश्य तो देखने काबिल होता है, जब पेड़ों की टहनियों और फूलों की क्यारियों के बीच से घुँघरुओं की आवाज़ें आती सुनाई देती हैं। पूरा इतिहास जैसे शालीमार में उतरकर खड़ा हो जाता है। 6. गुलमर्ग साढ़े छब्बीस सौ मीटर ऊँचा एक खूबसूरत चरागाह है, जहाँ हर मौसम में मोटर से पहुँचा जा सकता है। गोल्फ़ लिंक और बरफ़ पर स्कीइंग के लिए यह बहुत मशहूर है। स्कीइंग के लिए तो भयंकर सरदी के दिनों में जाना होता है लेकिन स्कीइंग करने वालों के ऊपर चढ़ने के लिए 'रोप वे (रज्जुमार्ग)' बनाया गया है। **(ङ)** 1. वेरीनाग 2. तवी 3. मंदिरों 4. अकबर

5. गुलमर्ग **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. धीरे-धीरे 2. जल्दी 3. अचानक, तेज़ 4. प्रतिदिन 5. बिलकुल **(ख)** 1. और 2. या 3. फिर भी 4. ताकि 5. फलत: **(ग)** 1. नावें 2. झीलें 3. चोटियाँ 4. घाटियाँ 5. चबूतरे 6. लहरें 7. सुरंगें 8. आईने **(घ)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग 7. पुल्लिंग 8. स्त्रीलिंग 9. पुल्लिंग 10. स्त्रीलिंग **(ङ)** 1. करण कारक 2. अधिकरण कारक 3. अपादान कारक 4. संप्रदान कारक 5. कर्ता कारक **(च)** 1. लिखी (सकर्मक) 2. सो गया (अकर्मक) 3. सहायता की (सकर्मक) 4. हो गया। (अकर्मक) 5. उड़ रही थी (अकर्मक) **(छ)** 1. दयालु 2. गरीब 3. तपस्वी 4. चमकीला 5. कृपालु 6. खिलाड़ी **(ज)** 1. ऊँचाई 2. गहराई 3. घबराहट 4. हरियाली 5. पीलापन 6. निराशा **(झ)** 1. देवता स्वर्ग में रहते हैं। 2. यात्रा करने से मानसिक सुख मिलता है। 3. दिल्ली भारत का मशहूर शहर है। 4. काँच पारदर्शी वस्तु है। 5. हमें अपने मित्र पर भरोसा करना चाहिए। 6. पर्वत पर चढ़ाई करना बहुत कठिन कार्य है।

8. भगतसिंह के पत्र (पत्र)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. भगतसिंह भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। 2. भगतसिंह का जन्म 27 सितंबर, 1907 को फैसलाबाद जिले के जरांवाला तहसील के बंगा गाँव में हुआ था। 3. देश के लिए कुछ कर गुज़रने की बात भगत सिंह के मन में जलियाँवाला हत्याकांड की घटना के बाद बचपन में ही बैठ गई थी। 4. भगतसिंह ने केंद्रीय संसद में बम लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के लिए फेंका था। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब) **(ख)** 1. प्रस्तुत पाठ में भगतसिंह द्वारा कैदी साथियों, पिता व भाई कुलबीर सिंह को लिखे गए पत्रों का वर्णन है। 2. भगतसिंह को कैदी और पाबंदी का जीवन पसंद नहीं था। 3. भगतसिंह केंद्रीय संसद में बम फेंकने के कारण जेल में बंद थे। 4. भगतसिंह के साथियों के नाम हैं–सुखदेव, राजगुरु। **(ग)** 1. भगतसिंह के अनुसार माँ अपने बच्चों को भगतसिंह (क्रांतिकारी) बनाने की आरज़ू करेंगी। 2. भगतसिंह ने देश और मानवता की सेवा करने की अधूरी हसरतों का वर्णन किया है। 3. अधूरी हसरतें स्वतंत्र जीवित रहकर पूरी की जा सकती थीं। 4. भगतसिंह ने अपने पिता द्वारा उनके बचाव पक्ष के लिए स्पेशल ट्रिब्यूनल को एक आवेदन भेजना यातनामय बताया। 5. भगतसिंह के विचार राजनैतिक क्षेत्र में अपने पिता से अलग थे क्योंकि वे स्वतंत्रतापूर्वक देश के लिए काम करते थे। **(घ)** 1. भगत सिंह निडर, देशभक्त स्वतंत्रता सेनानी थे। वे देश के लिए अपने प्राणों की चिंता नहीं करते थे। वे सच्चे देशभक्त थे। वे कैद होकर या पाबंद होकर नहीं जीना चाहते थे। वे स्वतंत्र रहकर देश व मानवता की सेवा करना चाहते थे। वे मातृ-पितृभक्त व भ्राता प्रेमी थे। 2. भगतसिंह ने भाई से माँ को साथ लेकर आने और मुलाकात का आदेश नहीं मिलने से निराश होकर वापस लौटने का दु:ख व्यक्त किया। उन्होंने अपने भाई को यह कहकर तसल्ली दी–सभी साहस से हालात का मुकाबला करें। आखिरकार दुनिया में दूसरे लोग भी तो हज़ारों मुसीबतों में फँसे हुए हैं और फिर अगर लगातार एक बरस तक मुलाकातें करके भी तबीयत नहीं भरी, तो और दो-चार मुलाकातों से भी तसल्ली न होगी। मेरा ख़्याल है कि फ़ैसले और चालान के बाद मुलाकातों से पाबंदी हट जाएगी। लेकिन माना कि इसके बावजूद मुलाकात की इजाज़त न मिले, तो--------इसलिए घबराने से क्या फ़ायदा? **(ङ)** इस पंक्ति का आशय यह है कि मुझे बड़ी बेताबी से अपनी फाँसी के समय की प्रतीक्षा है और मेरी इच्छा है कि फाँसी का वह समय और शीघ्र आ जाए। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (स) **(ख)** 1. संबंधबोधक 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया **(ग)** 1. वर्तमानकाल 2. भूतकाल 3. भविष्यत्काल 4. वर्तमानकाल 5. भूतकाल **(घ)** 1. वह प्रसन्नतापूर्वक बोला, ''मैं तुम्हें निराश नहीं करूँगा।'' 2. छि:! चोरी करते हो। क्या माँ-बाप ने यही सिखाया है? 3.

वाह! तुम तो पहले ही आ गए। अब मैं जाकर क्या करूँगा? 4. वह परिश्रमी, ईमानदार, स्वस्थ और अनुशासित है। 5. जो झूठ बोले, चोरी करे, बातबात पर गुस्सा करे, क्या तुम्हें उसका साथ पसंद है? **(ङ)** 1. स्त्रीलिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. पुल्लिंग 6. स्त्रीलिंग 7. पुल्लिंग 8. स्त्रीलिंग 9. स्त्रीलिंग 10. पुल्लिंग **(च)** 1. इच्छाएँ 2. कमज़ोरियाँ 3. हसरतें 4. परीक्षाएँ 5. नीतियाँ 6. चिट्ठियाँ 7. पाबंदियाँ 8. मुसीबतें 9. भावनाएँ 10. गोलियाँ **(छ)** मुकाबला, बदला, फाँसी, सज़ा, शर्त, ज़िंदा, कैद, पाबंद, कुर्बानियों, हरगिज़, कमज़ोरियाँ, ज़ाहिर, दिलेराना, आज़ादी, आरज़ू, तादाद, तमाम, शैतानी, ताकतों, बूते, हसरतें, हज़ारवाँ, शायद, बेताबी, इंतज़ार, नज़दीक, हैरानी, खबर, खामोशी, बर्दाश्त, काफ़ी, ख़्याल, यकीन, कोशिश, मुकदमा, संज़ीदगी, कदम, संगीन, बावजूद, बर्दाश्त, खुदगर्ज़ी, ज़िंदगी, कीमती, कुर्बान, उलझनें, पैदा, असलियत, मुलाकात, निराश, इजाज़त, परेशानी, फ़ायदा, नुकसान, ज़रूर, हालात, मुकाबला, दुनिया, हज़ारों, मुसीबतों, तबीयत, तसल्ली, फ़ैसले, पाबंदी **(ज)** 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–चरित्र-निर्माण 2. जीवन की सफलता की कुंजी चरित्र-निर्माण को बताया गया है। 3. अपने चरित्र-निर्माण की ओर ध्यान देकर जीवन के क्षेत्र में विजयी हुआ जाता है। 4. चरित्र-निर्माण से मनुष्य के भीतर ऐसी शक्तियाँ जाग्रत होती हैं, जो उसे जीवन-संघर्ष में विजयी बनाती हैं। 5. चरित्र-निर्माण से व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। वह जहाँ कहीं भी जाता है, अपने चरित्र की शक्ति से अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है।

9. हमारी दिनचर्या और पर्यावरण प्रदूषण (पर्यावरणीय लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. पर्यावरण प्रदूषण से तात्पर्य मानव गतिविधियों के कारण पर्यावरण में किसी भी अवांछित सामग्री के सम्मिलित होने से है जो पर्यावरण में अवांछनीय परिवर्तन का कारण बनता है, जिससे मानव के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। 2. पर्यावण प्रदूषण में मानवीय क्रियाएँ अत्यधिक उत्तरदायी हैं। 3. घर के आस-पास चूल्हे व कूड़े के ढेर में आग लगाने से और नगर में कारखानों व वाहनों के धुएँ से पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ावा मिल रहा है। 4. नगरवासियों की पर्यावरण प्रदूषण के प्रति धारणा है कि पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण करना सरकार का कार्य है। वे पर्यावरण प्रदूषण की रोक थाम के प्रति सचेत व जागरूक नहीं हैं। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) **(ख)** 1. आस-पड़ोस का पर्यावरण ऐसे लोगों द्वारा प्रदूषित है जिनमें सूझ-बूझ व पर्यावरण के प्रति प्रेम का अभाव है। 2. हमारे पड़ोस में फैलने वाले पर्यावरण प्रदूषण का एक कारण है नालियों में कूड़ा-करकट फेंकना। 3. स्वयं करें। 4. स्वयं करें। 5. हाँ, हमारे पड़ोस के लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता है। 6. स्वयं करें। 7. पर्यावरणीय प्रदूषण निम्नलिखित प्रकार का होता है–जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, नाभिकीय प्रदूषण, तापीय प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण, ठोस अपशिष्ट प्रदूषण, प्लास्टिक प्रदूषण, कीटनाशक प्रदूषण आदि। **(ग)** 1. वायु कूड़े के ढेर में आग लगाने, कारखानों व वाहनों के धुएँ तथा रोगाणुओं से प्रदूषित हो जाती है। 2. प्राकृतिक स्रोतों से जल बहकर जहाँ जाता है, वहाँ यदि खनिजों की मात्रा अधिक होती है, तो वे खनिज जल में मिल जाते हैं। इनकी मात्रा में वृद्धि हो जाने से जल प्रदूषित हो जाता है। औद्योगिक अपशिष्ट, कीटनाशक, नाभिकीय ऊर्जा का प्रयोग, ईंधनों का जलना, डिटरजेंट, साबुन तथा सीवेज आदि से भी जल प्रदूषित हो जाता है। 3. प्रदूषित वायु के कारण होने वाली चार हानियाँ हैं–(1) प्रदूषित वायु से दमा, फेफड़ों का कैंसर जैसी बीमारियाँ होती हैं। (2) प्रदूषित वायु (मोटर वाहनों के धुएँ) से केंद्रीय तंत्रिका प्रभावित होती है। (3) प्रदूषित वायु से ओजोन परत घट रही है। (4) प्रदूषित वायु ग्रीन हाउस प्रभाव के लिए उत्तरदायी है। 4. प्रदूषित जल के सेवन

से भिन्न प्रकार की बीमारियाँ फैलती हैं; जैसे-पक्षाघात, हैजा, क्षयरोग, पेचिश, जोंडिस आदि। **(घ)** 1. प्राकृतिक रूप से प्राप्त जल में अशुद्धि होती है। यह प्रदूषण धीमी गति से होता रहता है। प्राकृतिक स्रोतों से जल बहकर जहाँ जाता है, वहाँ यदि खनिजों की मात्रा अधिक होती है, तो वे खनिज जल में मिल जाते हैं। इनकी मात्रा में वृद्धि हो जाने से जल प्रदूषित हो जाता है। 2. जल प्रदूषण के मानवीय कारण हैं-कूड़े-करकट का नालियों में बहाना, औद्योगिक कचरा नदियों में बहाना, तालाबों में मवेशियों को नहलाना आदि। 3. जल प्रदूषण की रोकथाम के कुछ प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं-(1) प्रत्येक घर में सेप्टिक टैंक होना चाहिए। (2) शोधन द्वारा औद्योगिक अपशिष्टों को दूर करके ही उद्योगों द्वारा जल बहाना चाहिए। (3) समय-समय पर जल-स्रोतों से हानिकारक पदार्थों को निकालते रहना चाहिए। (4) खतरनाक कीटनाशकों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगना चाहिए। (5) नगरों का पानी शोधन के पश्चात् ही नगर से बाहर बहाना चाहिए। (6) पशुओं के प्रयोग के लिए अलग जल स्रोत का प्रयोग करना चाहिए। (7) कुछ मछलियाँ हानिकारक जंतुओं के लार्वा तथा अंडों को खाकर उनकी संख्या को कम करती हैं। इन्हें जल-स्रोतों में पालना चाहिए। (8) जल प्रदूषण के कारणों व दुष्परिणामों से जनमानस को अवगत कराना चाहिए। (9) प्रदूषित जल के शोधन के उपायों पर निरंतर शोध करते रहना चाहिए। 4. पर्यावरण में संतुलन स्वत: स्थापित होता रहा है। पृथ्वी सतह के ताप वायुमंडलीय गैसीय तत्वों, सूर्य विकिरण आदि जलवायु को प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्वों को प्रकृति अपने आप ही संतुलित करती रहती है किंतु इस कार्य की भी एक सीमा होती है। **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) **(ख)** 1. विशेषण 2. संज्ञा 3. विशेषण 4. संज्ञा 5. विशेषण 6. विशेषण 7. संज्ञा 8. संज्ञा 9. विशेषण 10. संज्ञा **(ग)** 1. खूब 2. ध्यानपूर्वक 3. परसों 4. चुपचाप 5. ऊपर-नीचे 6. कभी-कभी **(घ)** 1. यानी 2. पर 3. इसलिए 4. तो 5. या **(ङ)** 1. के साथ 2. के बिना 3. के मारे 4. के आगे 5. की ओर **(च)** 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. पुल्लिंग **(छ)** 1. तरंगिणी 2. नीर 3. समीर 4. नभ **(ज)** 1. अपादान कारक 2. कर्ता कारक 3. अधिकरण कारक 4. अधिकरण कारक 5. संबोधन कारक

10. न्याय (एकांकी)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत एकांकी के रचनाकार विष्णु प्रभाकर हैं। 2. उद्यान में राजकुमार सिद्धार्थ व उनके सखा के बैठने के समय वातावरण सुहावना था। 3. राजकुमार सिद्धार्थ व उनका सखा शाम के समय पशु-पक्षियों द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलापों के विषय में बातें कर रहे थे। 4. प्रस्तुत पाठ की प्रमुख घटना देवदत्त द्वारा बाण से हंस को घायल करना है, जिसके कारण कहानी आगे बढ़ती है। 5. प्रस्तुत पाठ से हमें यह संदेश मिलता है कि किसी को मारने वाले से उसे बचाने वाले का अधिकार अधिक होता है। **लिखित-(क)** 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) **(ख)** 1. सिद्धार्थ को योगी उनके गुरु ने बताया। 2. घायल हंस सिद्धार्थ की गोद में गिर पड़ा था। 3. तीर निकाल दिए जाने पर हंस सुख मानता है और बड़े अनुराग से कुमार की गोद में चिपक जाता है। 4. सिद्धार्थ ने धर्म की बात पर सखा को यह उत्तर दिया-यह धर्म किसने बनाया? शक्ति तो मनुष्य के हाथ में है, वह अपने स्वार्थ के लिए जो चाहे कर लेता है। **(ग)** 1. घायल हंस को देखते हुए सिद्धार्थ करुणा से कहते हैं-किस निर्दयी ने इस भोले-भाले हंस को घायल किया है? इसने किसी का क्या बिगाड़ा है? 2. देवदत्त ने हंस के विषय में सिद्धार्थ से कहा-अभी मैंने एक उड़ते हुए हंस को तीर मारकर नीचे गिराया था। मैंने अपनी आँखों से उसे गिरते देखा है। वह इधर कहीं आया है। (हँसकर) कुमार, लक्ष्य पूर्णतया सध गया है। कल मैं गुरु जी से कहूँगा, वह कितने प्रसन्न होंगे। तुम मेरी गवाही दोगे न? 3. सिद्धार्थ ने देवदत्त द्वारा निर्दोष पक्षी (हंस) की हत्या करने की गवाही देने की बात की।

(घ) 1. **देवदत्त :** अहा! मेरा हंस तुम्हारे पास है। लाओ, पहले इसे मुझे दो, विवाद पीछे होगा। **सिद्धार्थ :** क्यों दूँ? **देवदत्त :** क्योंकि यह मेरा है। **सिद्धार्थ :** इसका प्रमाण? **देवदत्त :** प्रमाण! अरे क्या? इसे मैंने मारा है। इसके शरीर में मेरा तीर लगा है। **सिद्धार्थ :** तुमने मारा है, परंतु मैंने बचाया है इसलिए यह हंस मेरा है। मैं इसे तुम्हें नहीं दूँगा। **देवदत्त :** तुम्हें देना होगा सिद्धार्थ। **सिद्धार्थ :** मैं नहीं दूँगा, देवदत्त। **देवदत्त :** तुम राजकुमार हो इसलिए धौंस जमाना चाहते हो, पर यह न भूलना कि मैं भी राजकुमार हूँ। **सिद्धार्थ :** (मुसकराकर) मैं कब कहता हूँ कि तुम राजकुमार नहीं हो, पर इससे क्या होता है? मैं हंस तुम्हें कभी नहीं दूँगा। 2. अंत में हंस सिद्धार्थ को उसके प्राणों की रक्षा करने के लिए दिया गया। जब सिद्धार्थ व देवदत्त हंस के अधिकार के निर्णय के लिए राजा के दरबार में गए। तो मंत्री ने हंस को आसन पर बैठाने के लिए कहा। तब मंत्री ने देवदत्त से हंस को अपने पास बुलाने को कहा। उसके बुलाने पर हंस डरकर अपने पंख फड़फड़ाता है तब मंत्री सिद्धार्थ से हंस को अपने पास बुलाने को कहता है। सिद्धार्थ के बुलाने पर हंस उड़कर उसकी गोद में बैठ जाता है। तब राजा हंस सिद्धार्थ को दे देता है। **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है कि क्षत्रिय का धर्म और कर्म शरणागत की रक्षा करना है। मैं हंस को तुम्हें (देवदत्त को) देकर इसे धोखा नहीं दे सकता। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. (अ) तुमने (ब) देवदत्त (स) पक्षी (द) की है (य) कर्ता कारक (र) निर्दोष 2. (अ) मैं (ब) चाहता हूँ (स) वर्तमानकाल (द) मैं, आपसे **(ख)** 1. शिकारी 2. राजपुत्र 3. शरणागत 4. न्यायाधीश 5. दयालु **(ग)** 1. आ 2. ई 3. आलु 4. आई 5. आऊ 6. इत **(घ)** 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग 6. पुल्लिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग 9. स्त्रीलिंग 10. पुल्लिंग **(ङ)** 1. शत्रु 2. रंक 3. निंदा 4. अहिंसा 5. दयालु 6. प्रेम 7. अनुचित 8. विषाद 9. अन्याय 10. अस्वस्थ **(च)** 1. पक्षीवृंद 2. गउएँ 3. समस्याएँ 4. मित्रगण 5. परदे 6. शीशियाँ 7. तलवारें 8. विकृतियाँ 9. राशियाँ 10. पगडंडियाँ **(छ)** 1. आओ मित्र, हम चलें, महाराज ही इसका निर्णय करेंगे। 2. प्रतिहारी कुमार से कहो, तुम्हें महाराज याद करते हैं। 3. महाराज, पहले हंस को मैंने मारा है, इसलिए यह मेरा है। 4. महाराज, मैं आपसे न्याय चाहता हूँ। राजकुमार मेरा हंस नहीं देते। 5. कुमार मैं हंस लेकर ही छोड़ूँगा, यह मेरा है। **(ज)** 1. शीघ्रता 2. निकटता 3. क्रोध 4. सुंदरता 5. बचाव 6. लिखावट 7. बहाव 8. कठोरता **(झ)** 1. समय का मूल्य 2. सही समय पर सही चुनाव करने वाले व्यक्ति को जीवन का सफल कलाकार बताया गया है। 3. यहाँ चुनाव से अभिप्राय अपने हित के लिए अच्छी वस्तुओं व बातों का चयन है। 4. चुनाव में सावधानी न बरतने से व्यक्ति सफलता की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ पाता। 5. सामान्य और विशेष क्रियाओं में सही चुनाव न करने से लोगों में न कोई सुरुचि विकसित हो पाती है और न ही वे अपने समय के मूल्य को समझ पाते हैं। 6. (अ) सु (ब) स 7. (अ) संज्ञा (ब) संज्ञा (स) विशेषण 8. (अ) उलटा-सीधा (ब) बहुत अधिक खाने वाला

11. प्राणी वही प्राणी है (कविता)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता के रचयिता भवानी प्रसाद मिश्र हैं। 2. व्यक्ति प्रसन्न रहकर कार्य करते हुए तथा असहायों की सहायता करके अपने अस्तित्व को मुखर कर पाता है। 3. सच्चा व्यक्ति मनुष्य के प्रति मनुष्यता व भाईचारे का भाव रखता है। 4. विपरीत परिस्थितियों में सच्चे व्यक्ति का व्यवहार मानवीय रहता है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता में मानवता के कार्य करने का संदेश निहित है। 2. कवि ने दूसरों के काम आते हुए मरने को अच्छा बताया है। 3. प्राणियों के विषय में कवि ने कहा है कि कोई प्राणी बड़ा या छोटा नहीं है। **(ग)** 1. निर्धनों व असहायों की सहायता इसलिए करनी चाहिए क्योंकि हँसने- मुसकराने व सुखी जीवन जीने का अधिकार सभी को है। 2. मनुष्य को कायर व लालची इसलिए नहीं होना चाहिए

क्योंकि इन दुर्गुणों के कारण मनुष्य मानवता के कार्य नहीं कर पाता और कोई भी उसे पसंद नहीं करता। **(घ)** 1. इस पंक्ति का अर्थ है कि जो व्यक्ति बैचेन को प्रेम से परिपूर्ण करे और प्यासे की प्यास शांत करे। 2. इस पंक्ति का अर्थ है कि निर्धनों व असहायों की सहायता करें। 3. इस पंक्ति का अर्थ है व्यक्ति को कभी सत्य से पीछे नहीं हटना चाहिए। 4. इस पंक्ति का अर्थ है कि मनुष्य अपने परोपकारी कार्यों से असहाय लोगों की सहायता कर उनकी उन्नति करे। 5. इस पंक्ति का अर्थ है कि सभी प्राणी समान हैं। **(ङ)** स्वयं करे। **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. प्रफुल्लित 2. रचित 3. शासित 4. इच्छित 5. प्रतिबिंबित 6. चिह्नित **(ख)** 1. जल तापित को तृप्त करता है। 2. कोई भी प्राणी जल के बिना जीवित नहीं रह सकता। 3. जल पीकर व्यक्ति स्निग्ध हो जाता है। 4. हमें सबसे अच्छा व्यवहार करना चाहिए। **(ग)** 1. के बिना 2. के निकट 3. के मारे **(घ)** 1. धीरे-धीरे 2. जल्दी 3. अचानक 4. थोड़ा, अधिक 5. कभी **(ङ) सम्मुख**-सम् + मुख, **उच्चारण**-उत् + चारण, **स्वागत** -सु + आगत, **ऐश्वर्य**-ईश्वर + य, **सम्मान**-सम् + मान, **गायक**-गै + अक, **नायक**-नै + अक, **सूक्ति**-सु + उक्ति

12. हार की जीत (कहानी)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत पाठ के लेखक सुदर्शन हैं। 2. 'हार की जीत' का अर्थ है कि अच्छे प्रयास व कार्य हमेशा सकारात्मक परिणाम देते हैं। 3. प्रस्तुत कहानी में खड्गसिंह की हार हुई और बाबा भारती की जीत। 4. घोड़ा पास न रहने पर बाबा भारती के व्यवहार और दिनचर्या में काफ़ी अंतर आ गया था। वे काफ़ी उदास व निष्क्रिय रहने लगे थे और केवल भगवान का भजन करते थे। **लिखित-(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) **(ख)** 1. खड्गसिंह कुख्यात डाकू था। 2. बाबा भारती घोड़े की चाल पर लट्टू थे। 3. घोड़ा ऐसा चलता था जैसे घटा देखकर मोर नाच रहा हो। 4. घोड़े की चाल देखकर खड्गसिंह को बाबा भारती से ईर्ष्या होने लगी। **(ग)** 1. बाबा भारती को घोड़ा इतना प्यारा इसलिए था क्योंकि वह घोड़ा बड़ा सुंदर था और बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। 2. माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद प्राप्त होता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। 3. घोड़ा देखकर खड्गसिंह सोचने लगा, 'भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या मतलब?' 4. जब खड्गसिंह ने जाते समय बाबा भारती से कहा कि ''बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।'' बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात में नींद न आती थी। प्रति क्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता इसलिए बाबा भारती रात-भर घोड़े के पास पहरा देते थे। 5. बाबा भारती ने खड्गसिंह से प्रार्थना की थी कि मुझसे घोड़ा छीनने की घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। **(घ)** 1. खड्गसिंह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, ''खड्गसिंह क्या हाल है?'' खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, ''आपकी दया है।'' ''कहो, इधर कैसे आ गए?'' ''सुलतान की चाह खींच लाई।'' ''विचित्र जानवर है, देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।'' ''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'' ''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।'' ''कहते हैं, देखने में बहुत सुंदर है।'' ''क्या कहना जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।'' ''बहुत दिनों से अभिलाषा थी आज उपस्थित हो गया हूँ।'' 2. एक दिन संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता थी। कभी घोड़े को देखते, कभी रंग को और मन में फूले न समाते । सहसा एक ज़ोर से आवाज़ आई, ''ओ बाबा, इस कँगले की बात भी सुनते जाना।'' आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को घुमा लिया। देखा, एक अपाहिज पेड़ की छाया में पड़ा कराह रहा है। वे बोले, ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?'' अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा,

''बाबा, मैं दुखिया हूँ, मुझ पर रहम करो। रामवाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है, घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।'' ''वहाँ तुम्हारा कौन है?'' ''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।'' बाबा भारती ने उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और हाथ से लगाम छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुँह से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज खड्गसिंह डाकू था। 3. बाबा भारती के जाने के बाद उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, 'कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, 'इसके बिना मैं रह न सकूँगा।' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दु:ख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख़्याल था कि कहीं लोग दीन-दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है। रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूरी पर गाँव के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक तक पहुँचा। फाटक खुला हुआ था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे। **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. मुँह मोड़ लिया 2. साँप लोटने लगा 3. दिल टूट जाएगा 4. सिर मारा **(ख)** 1. सुलतान से बिछड़ जाने पर बाबा भारती का दिल टूट गया। 2. बाबा भारती ने सुलतान की ओर से मुँह मोड़ लिया। 3. बाबा भारती सुलतान की चाल पर लट्टू थे। 4. सुलतान की चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोटने लगा। **(ग)** 1. अश्व, तुरंग, घोटक 2. निशा, रजनी, विभावरी 3. नभ, व्योम, गगन **(घ)** 1. संज्ञा 2. विशेषण 3. संज्ञा 4. विशेषण 5. संज्ञा 6. विशेषण 7. संज्ञा 8. विशेषण 9. विशेषण 10. संज्ञा **(ङ)** 1. सुता 2. पुत्री 3. मोरनी 4. बुढ़िया 5. कर्त्री 6. ठकुराइन **(च)** 1. महा+इंद्र 2. सु+इच्छा 3. सुर+इंद्र 4. महा+ ऋषि **(छ)** 1. पंख, ओर 2. पत्ता, चिट्ठी 3. पहले, एक दिशा 4. पेड़ का फल, परिणाम 5. लक्ष्मी, चमक 6. दिन, प्रहार 7. भारी, शिक्षक 8. कानून, ढंग

13. साहब महत्वाकांक्षी (हास्य कथा)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत पाठ के लेखक हरिशंकर परसाई हैं। 2. भाषण के विषय 'देश की वर्तमान दशा' और वक्ताओं की संख्या चार थी। 3. लेखक का ध्यान एक व्यक्ति के इस कार्य ने आकर्षित किया-वह अपनी अधकटी मूँछ के किनारे के एक बाल को पकड़कर खींचने की लगातार कोशिश कर रहा था। 4. जब-जब दुर्दशा ज़्यादा मार्मिक हो जाती, तब श्रोता ताली बजाते। **लिखित-(क)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) **(ख)** 1. देश की दुर्दशा का वर्णन क्लब के महत्वाकांक्षी लोग कर रहे थे। 2. लेखक ने एक वक्ता की मुसकराहट को बताया है कि मुसकराहट के सच्ची होने का धोखा हो जाता था। 3. वक्ताओं ने देश की दुर्दशा का मार्मिक ढंग से वर्णन किया। 4. कॉफ़ी हाउस में मिलने पर मूँछ का बाल खींचने वाले व्यक्ति ने लेखक से कहा, ''परसों रेडियो पर आपकी कविता सुनी। बहुत अच्छी थी।'' 5. लेखक द्वारा पत्ते खुलवाने पर यह भेद प्रकट हुआ कि वह व्यक्ति सांसद का चुनाव लड़ना चाहता था। **(ग)** 1. लेखक के अनुसार बड़े भ्रष्टाचारी को बाइज़्ज़त अलग कर देने की विधि को कंपल्सरी रिटायरमेंट कहते हैं। 2. चपरासी या बाबू का भ्रष्टाचार पकड़ा जाए, तो वह 'डिसमिस' होता है। जेल में भी भेजा जा सकता है क्योंकि वह

सिर्फ़ दस-पाँच रुपये ही खाता है। 3. लेखक ने साहब महत्वाकांक्षी मूँछ का बाल खींचने वाले व्यक्ति को बताया है और उसकी महत्वाकांक्षा सांसद का चुनाव लड़कर मंत्री बनने की थी। 4. साहब महत्वाकांक्षी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति अच्छी बताई गई है वह पहले एक सरकारी प्रतिष्ठान का मैनेजर था। वह बड़े ठाठ से और बाइज़्ज़त ज़िंदगी गुज़ार रहा था–उसके पास बँगले, कारें और बेहिसाब रुपया था। 5. कोट, पैंट, टाई छूट गए थे। कुरता, धोती, जाकेट पहने हुए था क्योंकि वह चुनाव लड़कर नेता बनना चाहता था। **(घ)** 1. लेखक के अनुसार बड़े भ्रष्टाचारी को बाइज़्ज़त अलग कर देने की विधि को कंपल्सरी रिटायरमेंट कहते हैं। चपरासी या बाबू का भ्रष्टाचार पकड़ा जाए, तो वह 'डिसमिस' होता है। जेल में भी भेजा जा सकता है क्योंकि वह सिर्फ़ दस-पाँच रुपये ही खाता है। मगर बड़ा अफ़सर दस-पाँच लाख दबा लेता है और सरकार इस पर ध्यान देने के लिए मजबूर हो जाती है, तब उससे हाथ जोड़कर कहती है, ''हुज़ूर, आशा है आप अब तक काफ़ी खा चुके हैं। अब आप अगर उचित समझें तो बाकी ज़िंदगी चैन से गुज़ारें।'' 2. लेखक के अनुसार 'महत्वाकांक्षी' ने सांसद का चुनाव लड़ने का निर्णय सांसद बनकर भ्रष्टाचार से धन कमाने के लिए किया था। 3. प्रस्तुत व्यंग्य रचना वर्तमान स्थिति पर भ्रष्टाचारी लोगों द्वारा जनता को बेवकूफ़ बनाने की नीति पर कटाक्ष करती हुई अपने शीर्षक 'साहब महत्वाकांक्षी' की सार्थकता सिद्ध करती है। **(ङ)** स्वयं करें। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. भ्रष्टाचारी 2. सेवक 3. देशप्रेमी 4. याचक 5. दाता **(ख)** दुर्बल, दुर्गति, दुर्लभ, दुर्भाग्य, दुर्जन, दुर्गम **(ग)** 1. मित्रता 2. मुसकराहट 3. भाईचारा 4. व्याकुलता 5. भयंकरता **(घ)** 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. पुल्लिंग 6. स्त्रीलिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग 9. पुल्लिंग 10. स्त्रीलिंग **(ङ)** 1. पलकें 2. पंक्तियाँ 3. नहरें 4. कहानियाँ 5. कविताएँ 6. खुशियाँ 7. सफलताएँ 8. श्रेणियाँ 9. सभाएँ 10. श्रोतागण **(च)** 1. कर्म कारक 2. कर्ता कारक 3. अपादान कारक 4. संप्रदान कारक 5. करण कारक **(छ)** 1. भाववाचक संज्ञा 2. विशेषण 3. विशेषण 4. भाववाचक संज्ञा 5. विशेषण 6. भाववाचक संज्ञा 7. विशेषण 8. भाववाचक संज्ञा 9. विशेषण 10. भाववाचक संज्ञा **(ज) प्रविशेषण**–1. अत्यंत 2. बड़े 3. बहुत **विशेषण**–1. रूपवती 2. साहसी 3. बुद्धिमान **(झ)** 1. मैंने कहा, ''सारे पत्ते खोल दीजिए। क्या है आपका इरादा?'' 2. मैंने कहा, ''देश को फिलहाल बिलकुल छोड़ दीजिए। अपनी बात कहिए।'' 3. उसने कहा, ''देश परिवर्तन माँगता है। वह हमसे कुछ अपेक्षा करता है।'' 4. उसके पास जवाब था, बोला, ''देश इस वक्त बड़ी जल्दी में है।'' 5. मैंने रोका, ''आगे बिलकुल मत चलिए, आपने प्रजातंत्र की नस पकड़ ली है।'' **(ञ)** 1. सूक्ष्म 2. दीर्घ 3. अनुकूल 4. दुर्बल 5. असुविधा 6. मलिन 7. निर्गुण 8. निर्जीव 9. असुविधा 10. अहिंसा **(ट)** 1. निषेधवाचक वाक्य 2. विधानवाचक वाक्य 3. प्रश्नवाचक वाक्य 4. आज्ञावाचक वाक्य 5. संदेहवाचक वाक्य 6. संकेतवाचक वाक्य 7. विस्मयवाचक वाक्य 8. इच्छावाचक वाक्य

14. अनमोल भेंट (कहानी)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कहानी के रचयिता रवींद्रनाथ टैगोर हैं। 2. कहानी के प्रमुख पात्र रायचरण, अनुकूल बाबू, उनकी पत्नी, रायचरण का पुत्र फलन हैं। 3. रायचरण को अनुकूल बाबू के बच्चे के नदी के पानी में डूबने के कारण दोषी माना गया। 4. रायचरण ने अपना बच्चा अनुकूल बाबू को इसलिए सौंप दिया क्योंकि वह उसका खर्च उठाने में असमर्थ था। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) **(ख)** 1. रायचरण 12 वर्ष की आयु से जज साहब के यहाँ नौकरी करता रहा था। 2. रायचरण बच्चे को गाड़ी में बैठा छोड़कर उसके लिए खेतों से फूल तोड़ने लगा था। 3. बच्चे के गायब होने का बच्चे की माँ ने अनुमान लगाया था कि रायचरण ने कहीं बच्चे को निर्वासितों के हाथों न बेच दिया हो। 4. बच्चे के गायब हो जाने के विषय में लोगों की

शंकाएँ थीं कि छोटे बच्चे को पद्मा नदी ने अपने आँचल में छिपा लिया। **(ग)** 1. संध्या का समय था। बच्चे ने बाहर जाने का आग्रह किया। रायचरण उसे गाड़ी में बैठाकर बाहर ले गया। खेतों में खूब पानी भरा था। बच्चे ने फूलों का गुच्छा देखकर ज़िद की। रायचरण ने उसे बहलाना चाहा किंतु वह न माना। विवश रायचरण बच्चे का मन रखने के लिए घुटनों तक पानी में उतर गया और फूल तोड़ने लगा। बच्चा तनिक देर गाड़ी में मौन बैठा रहा, फिर उसका ध्यान लहराती हुई नदी की ओर गया। वह चुपके-से गाड़ी में से उतरा। पास ही एक लकड़ी पड़ी थी, वह उसने उठा ली और भयानक नदी के तट पर पहुँकर उसकी लहरों से खेलने लगा और लहरों में गायब हो गया। 2. बच्चा खो जाने पर उसकी माँ ने क्रोध और आवेश की दशा में रायचरण को घर से बाहर निकाल दिया। अनुकूल बाबू ने पत्नी को बहुत समझाया, परंतु माता के हृदय की शंकाएँ दूर न हुईं। इसलिए रायचरण नौकरी छोड़कर अपने गाँव वापस लौट गया। 3. जब बच्चा घुटनों के बल चलने लगा, वह घर वालों की नज़र बचाकर बाहर निकल जाता। रायचरण जब दौड़कर उसे पकड़ता, तो वह चंचलता से उसे मारता था। उस समय रायचरण के नेत्रों के सामने उस नन्हे मालिक की सूरत फिर आ जाती, जो पद्मा नदी की लहरों में लुप्त हो गया था। बच्चे की ज़बान खुली तो वह पिता को 'बाबा' और बुआ को 'मामा' इस ढंग से कहता था कि जिस ढंग से रायचरण का नन्हा मालिक बोलता था। इसलिए उसे पूर्ण विश्वास था कि नन्हे मालिक ने उसके घर में जन्म लिया है। 4. रायचरण का बच्चा जब सयाना हो गया तो लाड़-प्यार में वह बहुत बिगड़ गया था। किसी से सीधे मुँह बात न करता और बहुत पैसा खर्च करता था। जब लड़का पढ़ने योग्य हुआ, तो रायचरण अपनी थोड़ी-सी ज़मीन बेचकर 'कोलकाता' आ गया। **(घ)** 1. फलन को बनाव-शृंगार की बहुत चिंता रहती। जब देखो दर्पण हाथ में लिए बाल बना रहा होता। वह अपव्ययी भी बहुत था। पिता की सारी आय व्यर्थ की विलास-सामग्री में व्यय कर देता। रायचरण उससे प्रेम तो पिता की भाँति करता किंतु प्राय: उसका बर्ताव लड़के के साथ ऐसा ही था, जैसे मालिक के साथ नौकर का होता है। उसका फलन भी उसे पिता न समझता था और रायचरण स्वयं को फलन का पिता न प्रकट करता था। छात्रावास के विद्यार्थी रायचरण के गँवारपन का उपहास करते और फलन भी उन्हीं के साथ सम्मिलित हो जाता। 2. जब रायचरण ने अनुकूल बाबू के घर जाकर फलन के विषय में बात की तो अनुकूल बाबू व उनकी पत्नी को बहुत आश्चर्य व प्रसन्नता हुई कि उनका पुत्र जीवित है। उन्होंने रायचरण से उसे अपने पर लाने को कहा और रायचरण को भी अपने घर में रहने की अनुमति दे दी। **(ङ)** इस पंक्ति का आशय यह है कि बच्चे की आयु इतनी ही थी उसे परमात्मा ने अपने पास बुला लिया। **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. पीड़ित 2. पथरीला 3. बाज़ारू 4. रक्षक 5. महान 6. रोगी 7. सुखी 8. रंगीन **(ख)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (अ) **(ग)** 1. अपादान कारक 2. संप्रदान कारक 3. कर्ता कारक 4. संप्रदान कारक 5. अधिकरण कारक **(घ)** 1. सहकर्मी, सहपाठी 2. परमार्थ, परजीवी 3. समकालीन, समाचार 4. कमअक्ल, कमउम्र 5. लाजवाब, लाइलाज 6. अनीति, अविवेकी 7. अवस्थित, अवमानना 8. आकंठ, आजन्म **(ङ)** 1. लिखना, पढ़ना 2. सूखा, भूखा 3. सूँघनी, ओढ़नी 4. पढ़ाई, लड़ाई

15. राखी का मूल्य (एकांकी)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत एकांकी के रचयिता हरिकृष्ण प्रेमी हैं। 2. राखी का त्योहार बहनों की रक्षा का वचन देने हेतु मनाया जाता है। 3. राणा साँगा मेवाड़ के राजा थे। 4. हुमायूँ बाबर का पुत्र और मुगल शासक था। 5. बहादुरशाह मेवाड़ का शत्रु था। **लिखित-(क)** 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (स) **(ख)** 1. राणा साँगा की पत्नियों के नाम कर्मवती व जवाहर बाई था। 2. बाघ सिंह मेवाड़ का सेनापति था। 3. कर्मवती ने हुमायूँ को राखी उसे आपना भाई बनाने और बहादुरशाह से

मेवाड़ की रक्षा करने के लिए भेजी थी। 4. कर्मवती को हुमायूँ से आशा थी कि वह उन्हें बहन मानकर मेवाड़ की रक्षा करेगा। 5. मेवाड़ के राजपूत बहादुरशाह के विरुद्ध युद्ध लड़ रहे थे। **(ग)** 1. कर्मवती के सामने यह कठिनाई आ खड़ी हुई थी कि राणा साँगा मेवाड़ में नहीं थे और बहादुरशाह ने मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया था। राजपूत सैनिकों की संख्या कम थी और शत्रुओं का तोपखाना बहुत क्षति पहुँचा रहा था। 2. बाघ सिंह ने कर्मवती को स्मरण करवाया कि क्या हुमायूँ पुराने बैर भूल सकेगा? सीकरी के युद्ध के ज़ख्मों के निशान क्या आसानी से मिट सकेंगे? 3. राजपूत वीरता से लड़ रहे थे, किंतु एक तो उनकी संख्या बहुत कम थी दूसरे शत्रुओं का यूरोपियन तोपख़ाना आग उगल रहा था। उसका मुकाबला तलवारों से नहीं हो सकता था। इन कारणों से राजपूतों की हार निश्चित थी। 4. कर्मवती का पत्र पढ़कर हुमायूँ खुश होकर कहता है–हिंदूबेग, उन्होंने सचमुच जादू का पिटारा भेजा है। मेरे सूने आसमान में उन्होंने मुहब्बत का चाँद चमकाया है। उन्होंने मुझे राखी भेजी है। मुझे अपना भाई बनाया है। (दूत से) बहन कर्मवती से कहना, हुमायूँ तुम्हारी माँ के पेट से पैदा नहीं हुआ तो क्या है, वह तुम्हारे सगे भाई से बढ़कर है। कह देना मेवाड़ की इज़्ज़त मेरी इज़्ज़त है। **(घ)** 1. हुमायूँ कर्मवती की राखी मिलने पर उसका भाई बनकर उसकी रक्षा करता है और उनके राज्य से अपनी दुश्मनी भुला देता है। 2. हुमायूँ के अनुसार हम सब एक परवरदिगार की औलाद हैं। हिंदुओं के अवतारों ने और हमारे पैगंबरों ने एक ही रास्ता बताया है। कुरान-शरीफ़ में साफ़ लिखा है कि ''हमने एक गिरोह के लिए इबादत का एक खास रास्ता मुकर्रर कर दिया है, जिस पर वह अमल करता है। इसलिए उस पर झगड़ा न करो।'' तुम्हें साफ़ बताया गया है कि नेकी यह नहीं कि तुमने इबादत के वक्त मुँह मशरिक की तरफ़ किया या मगरिब की तरफ़ या इसी तरह की कोई ज़ाहिरा रस्मो-रिवाज कर ली। नेकी की राह तो उसकी राह है, जो ख़ुदा पर, आखलत के दिन पर, सारी ख़ुदारात किताबों पर और सारे पैगंबरों पर ईमान लाता है। अपना प्यारा धन रिश्तेदारों, गरीबों, ज़्यारत के करने वालों, माँगने वालों की राह में और गुलामों को आज़ाद करने में खर्च करता है। जो बात का पक्का है, जो डर और घबराहट, तंगी और मुसीबत के वक्त धीरज रखता है, ऐसे ही लोग हैं, जो बुराइयों से बचने वाले हैं। यही बात हिंदुओं की मज़हबी किताबें कहती हैं। फिर मज़हब दोनों की दोस्ती के बीच में दीवार कैसे बन सकता है? **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. (1) रवि पत्र लिखता है। (2) छात्र पढ़ रहे हैं। (3) नम्रता भोजन कर रही है। 2. (1) संभवत: आज वर्षा होगी। (2) हो सकता है वह कल आए। (3) शायद मेहमान परसों आएँगे। 3. (1) वह खेल रहा होगा। (2) रजत सो रहा होगा। (3) राम पढ़ता होगा। 4. (1) वे क्रिकेट खेले होंगे। (2) उसने खाना खाया होगा। (3) बस छूट गई होगी। 5. (1) यदि समय पर वर्षा होती, तो फसल न सूखती। (2) वह आगरा जाता, तो ताजमहल देखता। (3) यदि शिक्षक बाज़ार जाता, तो बच्चे शोर मचाते। **(ख)** 1. कर्ता कारक 2. संबंध कारक 3. अधिकरण कारक 4. संबोधन कारक 5. संप्रदान कारक **(ग)** 1. शक्तिशाली 2. अगला 3. भीतरी 4. घृणित 5. वीर 6. विनम्र **(घ)** खुदा, काफ़िले, ताकत, खिदमत, लफ़्ज, फ़ौज, फ़ौलाद, नज़र, कयामत, किस्मत! **(ङ)** 1. पश्चिम 2. पूरब 3. दास 4. बलिदान 5. मौका 6. सेवा-सत्कार 7. भाग्य 8. धर्म 9. निमंत्रण 10. शत्रु **(च)** 1. विशेषण 2. संज्ञा 3. संज्ञा 4. संज्ञा 5. विशेषण 6. विशेषण 7. संज्ञा 8. संज्ञा 9. संज्ञा 10. विशेषण

16. कबीर के दोहे (दोहे)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. कबीर ने 'पारस और लोहे के स्पर्श द्वारा होने वाले परिवर्तन' पर संदेश दिया है कि सज्जन के साथ रहने पर व्यक्ति कभी असफल नहीं होता। 2. कबीर ने धर्म का स्थान दया में तथा पाप का स्थान लोभ में बताया है। 3. कबीर ने ऐसी वाणी बोलने को कहा है जिसे बोलकर स्वयं को व सुनने वाले को प्रसन्नता हो। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4.

(अ) **(ख)** 1. कबीर के गुरु का नाम रामानंद था। 2. कबीर ने गुरु को ईश्वर से श्रेष्ठ बताया है। 3. जहाँ दया होती है वहाँ धर्म होता है। **(ग)** 1. कुमति से अभिप्राय अज्ञान है तथा वह गुरु के ज्ञान से जाती है। 2. कबीर ने गुरु शिष्य के संबंध की व्याख्या इस प्रकार की है कि गुरु कुम्हार व शिष्य घड़े की तरह है। जिस प्रकार कुम्हार घड़े को गढ़कर उसके दोष दूर करता है, उसी प्रकार गुरु शिष्य की कमियों को दूर करके उसे योग्य व्यक्ति बनाता है। 3. कबीर ने वाणी के विषय में कहा है कि हमें मधुर वाणी में बोलना चाहिए जिससे बोलने वाले व सुनने वाले दोनों को प्रसन्नता का अनुभव हो। **(घ)** स्वयं करें। **भाषा-ज्ञान–(क)** सूर्य-सूरज, सोना-स्वर्ण, अंधकार-अँधेरा, ईश्वर-भगवान **(ख)** 1. ज्ञानी 2. लोभी 3. क्रोधी 4. भूखा 5. ऊँचा 6. दयालु 7. धार्मिक 8. संतोषी **(ग)** 1. राजा + ऋषि 2. विद्या + अभ्यास 3. सूर्य + उदय 4. रवि + इंद्र **(घ)** 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) **(ङ)** 1. कोमलता 2. शीतलता 3. मनुष्यता 4. निम्नता 5. गुरुता 6. कायरता 7. वीरता 8. ऐश्वर्य 9. पितृत्व 10. देवत्व **(च) मूल शब्द–**रख, सज, चल, मिल, खर्च, बरफ़, बन, मोटा **प्रत्यय–**वाला, आवट, ता, आवट, ईला, ईला, आवट, आपा **(छ)** 1. अजय ने पूछा, ''क्या हुआ किशोर?'' 2. नम्रता, सुकर्म और परोपकार मनुष्य के आभूषण हैं। 3. कौन आया, कौन गया? मुझे पता नहीं चला। 4. छात्र ने उत्तर दिया, ''पृथ्वी गोल है और सूर्य की परिक्रमा करती है।'' 5. डॉ० राजेंद्र प्रसाद हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति थे।

हिंदी–8

1. विद्रोह करो (कविता)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. कविता के माध्यम से कवि वीरोचित कर्म करने व दूसरों की अधीनता का विद्रोह करने का आह्वान कर रहा है। 2. कविता में कवि दूसरों की अधीनता का जीवन जीने हेतु शर्म करना दर्शाता है। 3. 'शर्म' शब्द पराधीन लोगों पर आरोपित किया गया है। 4. पराधीनता के जीवन के प्रति विद्रोह करने को कहा जा रहा है। **लिखित–(क)** 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) **(ख)** 1. शोषण के विरुद्ध विद्रोह न करना कायरता है। 2. दूसरों के अधीन रहकर जीवन जीना परवशता है। 3. विद्रोह करने से अभिप्राय अन्याय का विरोध करना है। **(ग)** 1. 'विरोचित कर्म' से अभिप्राय है प्रत्येक बुरे कार्य और शोषण के विरुद्ध आत्मसम्मान प्रिय लोगों द्वारा उचित वीरतापूर्ण कार्य करना। 2. कवि ने 'वीरोचित कर्म' करने का संदेश शोषण का विरोध करके आत्मसम्मान का जीवन जीने व दूसरों को उनका अधिकार दिलाने के लिए दिया। 3. मानव को स्वार्थ व कायरता का जीवन जीने पर शर्म आनी चाहिए। 4. विद्रोह करने से परतंत्रता, शोषण का अंत होगा तथा मनुष्य का जीवन सार्थक होगा। **(घ)** 1. स्वयं करें। 2. जीवन की सार्थकता स्वतंत्रता का जीवन जीने और असहायों को उनके अधिकार दिलाने में है। **(ङ)** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि हे मनुष्य वीरतापूर्ण उचित कार्य करो इस प्रकार पराधीनता का जीवन जीने से कोई लाभ नहीं है। यदि मनुष्य हो तो कुछ शर्म करो। आखिर कब तक दूसरों के अत्याचारों को सहते जाओगे। अपने आत्मसम्मान, स्वंत्रतता का जीवन जीने के लिए अत्याचारियों के विरुद्ध विद्रोह करो। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. वीरता 2. कायरता 3. अभिमान **(ख)** 1. धरा, वसुंधरा, धरती 2. सुरलोक, देवलोक, वैकुंठ **(ग)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) **(घ)** कायर-वीर, स्वर्ग-नरक, मानव- दानव, पराधीनता-स्वाधीनता, जीवन-मरण, सुख-दुःख

2. महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन (जीवन-परिचय)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. मद्रास को वर्तमान में 'चेन्नई' नाम से जाना जाता है। 2. रामानुजन को पाँच वर्ष की आयु में पढ़ने के लिए गाँव की पाठशाला में भेजा गया। 3. रामानुजन में

गणित विषय की नैसर्गिक प्रतिभा थी। 4. रामानुजन को उच्च शिक्षा पाने हेतु प्रेरणा विद्वान शूब्रिजकार की पुस्तक के गणित के प्रश्नों को हल करने पर मिली। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) **(ख)** 1. पोर्ट ट्रस्ट कार्यालय का अचानक निरीक्षण चेयरमैन सर फ्रांसिस स्प्रिंग ने किया था। 2. चेयरमैन ने फ़र्श पर गिरे कागज़ पर गणित के कठिन प्रश्नों का हल लिखा पाया था। 3. चेयरमैन ने रामानुजन को कुछ लिखते-पढ़ते पाया था। 4. रामानुजन का जन्म मद्रास प्रांत के इरोद नामक गाँव में सन् 1887 में हुआ था। **(ग)** 1. पोर्ट ट्रस्ट कार्यालय के चेयरमैन ने अचानक कार्यालय का निरीक्षण इसलिए किया क्योंकि उसे सूचना मिली थी कि कार्यालय का एक कर्मचारी किसी भी समय अपनी कुरसी नहीं छोड़ता है और अवकाश में भी बैठे-बैठे न जाने क्या लिखा करता है। 2. बाल्यावस्था में ही रामानुजन पेड़ों की सही ऊँचाई बता देते थे, भेड़ों के झुंड को देखकर पलक झपकते ही उनकी सही संख्या बता देते थे। 3. गणित के क्षेत्र में इनकी महान सेवाओं से प्रभावित होकर इंग्लैंड की विख्यात विद्वत् सभा 'रॉयल सोसाइटी' ने इन्हें ससम्मान अपना फेलो नियुक्त किया। 4. रामानुजन के मन में यह प्रबल अभिलाषा थी कि गणित के क्षेत्र में अब तक के समस्त असाध्य सूत्रों को हल करके अध्ययन के अग्रिम क्षेत्र का विस्तार किया जाए। 5. रात-दिन गणित के किसी सूत्र के चिंतन में खोए रहना और अपने आराम तथा खाने-पीने की चिंता भी नहीं करना, इंग्लैंड की प्रतिकूल जलवायु आदि बातों ने रामानुजन के स्वास्थ्य को प्रभावित किया था। **(घ)** 1. रामानुजन के एक मित्र ने उन्हें गणित की एक पुस्तक अध्ययन के लिए दी। इस पुस्तक के लेखक सुप्रसिद्ध विद्वान शूब्रिजकार महाशय थे। उनकी इस पुस्तक में अंकगणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति के साथ उच्च गणित के कठिन-से-कठिन सूत्रों का समावेश था। उन सूत्रों के साथ लेखक ने नए-नए प्रश्न भी लिख दिए थे। 'शूब्रिजकार' की इस पुस्तक के प्रश्न उन दिनों संसार के बड़े-बड़े विद्वानों के लिए भी पहेली बने हुए थे। रामानुजन को यह पुस्तक जैसे किसी अमूल्य निधि के रूप में प्राप्त हो गई थी। इस पुस्तक में दिए गए सूत्रों का हल निकालने में रामानुजन तन्मय हो गए। कुछ ही दिनों में उन्होंने उस पुस्तक के एक-एक प्रश्न का हल निकाल दिया। रामानुजन ने यह दुरुह कार्य बिना सहायता, सहयोग और साधना के ही पूरा करके अपनी नैसर्गिक प्रतिभा का परिचय दिया। रामानुजन की इसी प्रतिभा से प्रभावित होकर 'पोर्ट ट्रस्ट कार्यालय' के चेयरमैन 'सर फ्रांसिस स्प्रिंग' तथा एक अन्य सहृदय विद्वान अधिकारी डॉ० जी० टी० वाकट ने इन्हें गणित की उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया। 2. रामानुजन ने अपनी ज्ञान-पिपासा की शांति के लिए इंग्लैंड के तत्कालीन सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो० हार्डी को एक भावपूर्ण पत्र लिखा। उस पत्र के साथ उन्होंने गणित के अत्यंत दुरुह और असाध्य सूत्रों के मौलिक हल भी लिखकर भेजे। 3. रामानुजन का पत्र पाकर प्रो० हार्डी को अत्यंत सुखद आश्चर्य हुआ। उन्हें यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि गुलाम भारत में जन्मे गरीबी में पले तथा एफ० ए० अनुत्तीर्ण एक सामान्य व्यक्ति में ऐसी महान प्रतिभा हो सकती है? अब तक जिन सूत्रों का वास्तविक हल गणित के बड़े-बड़े विद्वान भी नहीं कर पाए थे, उनका मौलिक हल एक सामान्य भारतीय नवयुवक ने अपनी मौलिक सूझ-बूझ से प्रस्तुत करके प्रो० हार्डी जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को आश्चर्य में डाल दिया था। 4. स्वदेश लौटने पर रामानुजन का भावपूर्ण स्वागत किया गया। अनेक विश्वविद्यालयों ने इन्हें 'डॉक्टरेट' की उपाधि प्रदान करके अपने को गौरवान्वित समझा। देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में इनकी प्रशस्ति में अनेक लेख छपे। **(ङ)** 1. छोटे से कार्यालय में कार्यरत रामानुजन द्वारा हल किए गए गणित के कठिन प्रश्नों के उत्तरों को देखकर विद्वान अधिकारी ने कहा कि तुम इस छोटे से कार्यालय में कार्य करने के लिए नहीं बल्कि गणित के विद्वानों के प्रमुख बनने योग्य हो। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. **(अ)**-व्यक्तिवाचक संज्ञा **(ब)**-विशेषण **(स)**-विशेषण **(द)**-विशेषण 2.

(अ) सर्वनाम (ब) संज्ञा (स) संज्ञा (द) क्रिया **(ख)** 1. प्रेम 2. पढ़ाई 3. लिखाई 4. चाल 5. निम्नता 6. महानता 7. मूल 8. शिक्षा 9. उच्चता 10. निर्धनता **(ग)** 1. प्रतिभावान 2. साहसी 3. बुद्धिमान 4. स्वस्थ 5. अहंकारी 6. विकारी 7. सम्मानित 8. परिश्रमी **(घ)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग 6. पुल्लिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग **(ङ)** 1. बचपन 2. बदकिस्मती से 3. सबसे अधिक 4. समय की कमी 5. फेल 6. रुकावट डालने वाला

3. महादेव सोनार (कहानी)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कहानी के लेखक प्रेमचंद हैं। 2. महादेव का व्यवसाय सोने के आभूषण बनाने का था। 3. महादेव अपने सायबान में प्रात: से संध्या तक अँगीठी के सामने बैठा हुआ खट–खट किया करता था। वह नित्य एक बार प्रात:काल अपने तोते का पिंजरा लिए कोई भजन गाता हुआ तालाब की ओर जाता था। 4. एक दिन संयोगवश किसी लड़के ने पिंजरे का द्वार खोल दिया। तोता उड़ गया। तोता उड़ा और गाँव के बाहर जाकर एक पेड़ पर जा बैठा। आधी रात गुज़र गई थी। सहसा वह कोई आहट पाकर चौंका। देखा, एक दूसरे वृक्ष के नीचे एक धुँधला दीपक जल रहा था और कई आदमी बैठे हुए कुछ बातें कर रहे थे। वे सब चिलम पी रहे थे। तंबाकू की महक ने उसे अधीर कर दिया। उच्च स्वर में बोला–'सत्त गुरुदत्त, शिवदत्त दाता' और उन आदमियों की ओर चिलम पीने चला गया। किंतु उसे आते देख सब–के–सब उठकर भागे। महादेव दीपक के पास गया, तो उसे एक कलसा रखा हुआ मिला, जो मोर्चे से काला हो रहा था। उसने कलसे में हाथ डाला, कलसे में मोहरें थीं। वह मोहरें व तोता लेकर घर आ गया। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) **(ख)** 1. महादेव का पारिवारिक जीवन सुखमय न था। 2. महादेव की बढ़ती आयु में उसकी काया जर्जर हो गई थी। 3. महादेव के परिवार में तीन पुत्र, तीन बहुएँ व दर्जनों नाती–पोते थे। 4. महादेव के लड़कों का मानना था कि जब तक दादा जीते हैं, हम जीवन का आनंद भोग लें, फिर तो यह बूढ़ा गले पड़ेगा ही। 5. महादेव प्राय: इस मंत्र का उच्चारण करता था 'सत्त गुरुदत्त, शिवदत्त दाता। 6. एक दिन संयोगवश किसी लड़के ने पिंजरे का द्वार खोल दिया इसलिए तोता उड़ गया। **(ग)** 1. महादेव अपने सायबान में प्रात: से संध्या तक अँगीठी के सामने बैठा हुआ गहने बनाने के लिए खट–खट किया करता था। वह ध्वनि सुनने के लोग इतने अभ्यस्त हो गए थे कि जब किसी कारण से बंद हो जाती, तो जान पड़ता था कोई चीज़ गायब हो गई। 2. तोते के पिंजरे से निकल जाने पर महादेव की दशा बुरी हो गई थी। उसका कलेजा सन्न–सा हो गया था। 3. महादेव बाग में तोते के पीछे दौड़ता– दौड़ता पहुँच गया था। 4. महादेव बाग में एक वृक्ष के नीचे चिलम पीते हुए लोगों की आहट पाकर चौंका। 5. महादेव तंबाकू की महक पाकर चिलम पीने के लिए अधीर हो गया था। 6. महादेव चिलम पीने की सोचकर चिलम पीने वाले आदमियों की ओर गया। **(घ)** 1. महादेव दीपक के पास गया, तो उसे एक कलसा रखा हुआ मिला, जो मोर्चे से काला हो रहा था। महादेव का हृदय उछलने लगा। उसने कलसे में हाथ डाला, तो मोहरें थीं। उसने एक मोहर बाहर निकाली और दीपक के उजाले में देखा। उसने तुरंत कलसा उठा लिया, दीपक बुझा दिया और पेड़ के नीचे छुपकर बैठ गया। उसे फिर शंका हुई, ऐसा न हो चोर लौट आएँ और मुझे अकेला देखकर मोहरें छीन लें। उसने कुछ मोहरें कमर में बाँधीं, फिर सूखी लकड़ी से मिट्टी हटाकर गड्ढे बनाए, उन्हें मोहरों से भरकर मिट्टी से ढक दिया। अकस्मात् उसे ध्यान आया, कहीं चोर आ जाएँ, तो मैं भागूँगा कैसे? उसने परीक्षा करने के लिए कलसा उठाया और दो सौ पग तक बेतहाशा भागा हुआ चला गया। 2. मोहरें प्राप्त होने पर महादेव उदार इसलिए हो गया था क्योंकि अब उसे धन कमाने की कोई चिंता नहीं थी और उसने अपनी उदारता सभी का उधार धन व बेईमानी से कमाया धन वापस करके, साधु व मेहमानों की सेवा

करके प्रकट की। **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है जब वह (महादेव सोनार) बुरे कार्य करता था तो कोई उसका सम्मान नहीं करता था परंतु उसने अच्छे कार्य किए तब सभी उसके साथ अच्छा व्यवहार करने लगे। **भाषा-ज्ञान–(क) सोना**-स्वर्ण, कंचन, हेम **तोता**-शुक, सुग्गा, कीर **(ख)** 1. मौका 2. पीड़ा 3. निश्चित 4. अचानक 5. ध्वनि 6. दुनिया 7. हिम्मत 8. डर 9. उजाला 10. भरोसा **(ग)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग 9. पुल्लिंग 10. पुल्लिंग **(घ)** 1. मादा तोता/तोती 2. मादा मच्छर 3. मादा कौआ 4. मादा चीता 5. मादा भालू 6. मादा खटमल 7. मादा बाज 8. मादा उल्लू **(ङ)** 1. अपादान कारक 2. कर्ता कारक 3. अधिकरण कारक 4. कर्म कारक।

4. पूर्वी सीमांत असम (ज्ञानवर्धक लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. असम हरा-भरा वन्य व ऊँचे पर्वतों का प्रदेश है। 2. असम में मनाए जाने वाले उत्सव हैं–काते बिहु, कंगाली बिहु, माघ बिहु, भोगाली बिहु, चतर बिहु, रंगाली बिहु, गुरु बिहु, मानुहर बिहु। 3. असम में सबसे अधिक चाय की खेती होती है। देशभर में जितनी चाय पैदा होती है, उसका आधा भाग असम में होता है। चावल, जूट, ईख, मकई, तंबाकू, कपास, राई और सरसों यहाँ की मुख्य फसलें हैं। अनन्नास, आड़ू, केले, नारंगी, आलू और सुपारी भी यहाँ खूब होते हैं। 4. ग्रामोद्योग की दृष्टि से असम प्रदेश बहुत संपन्न है। चादरें, थैले, टोकरियाँ, पंखे और टोपे इत्यादि अनेक कलापूर्ण वस्तुएँ यहाँ तैयार होती हैं। हथकरघा, हाथीदाँत, ताड़ के पत्ते, बाँस और बेंत के काम तथा मधुमक्खी पालन में भी काफ़ी लोग लगे हुए हैं। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब) **(ख)** 1. असम की प्राकृतिक भू-रचना हरे-भरे वनों से युक्त है। 2. पौराणिक कथाओं में असम का नाम प्राग्ज्योतिष मिलता है। 3. कालिदास ने रघुवंश में असम को नीललोहित नाम दिया था। 4. असम के निवासी इसके नाम का उच्चारण 'अहोम' करते हैं। 5. अहोम जाति ने असम पर छह सौ वर्षों तक शासन किया। **(ग)** 1. असमिया साहित्य का उदय तेरहवीं सदी में हेम सरस्वती के 'प्रह्लाद चरित' से माना जाता है। 2. ऐतिहासिक युग में असम की चर्चा गुप्त सम्राटों के समय में आती है। 3. असम के लोगों का मुख्य भोजन दाल-भात और मछली है। तंबाकू के ये बहुत शौकीन हैं। पान ये लोग बहुत खाते हैं पर बिना कत्थे का। सुपारी खाते हैं और खूब चबाते हैं। पुरुष केवल धोती पहनते हैं और सरदियों में केवल चादर डालते हैं। 4. असम के वनों में एक सींग वाले गैंडे, हाथी, जंगली भैंसे, सुअर, चीते, रीछ, हिरन और नाना प्रकार के पक्षी देखे जा सकते हैं। 5. असम के दक्षिण में मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम हैं, पूर्व में नागालैंड और मणिपुर हैं। पश्चिम में बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल हैं। अरुणाचल प्रदेश असम के उत्तर-पूर्व में है। **(घ)** 1. असम का प्रमुख त्योहार 'बिहु' है, जो यहाँ की संस्कृति का प्रतीक है। बिहु उत्सव तीन तरह के होते हैं-'काते बिहु' या 'कंगाली बिहु', 'माघ बिहु' या 'भोगाली बिहु', 'चतर बिहु' या 'रंगाली बिहु'। 'रंगाली बिहु' इन तीनों में प्रमुख है। यह बसंत के अवसर पर मनाया जाता है। यह पुराने वर्ष को विदा करके नए वर्ष का स्वागत करता है। इसके तीन भाग हैं। 'गौ सेवा', 'आमोद-प्रमोद' और 'ईश्वर सेवा'। शेष भारत की तरह असम भी कृषि प्रधान है इसलिए गायों व बैलों की सेवा करना स्वाभाविक है। गौ सेवा के पर्व का नाम है 'गुरु बिहु'। नव वर्ष के पहले दिन 'मानुहर बिहु' होता है। इसमें सब छोटे अपने बड़ों को नमस्कार करते हैं और मंदिर में इकट्ठे होकर कीर्तन करते हैं। 2. गुवाहाटी से 200 किलोमीटर पर काजीरंगा में एक अत्यंत सुंदर पशु विहार है। यह 440 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसमें एक सींग वाले गैंडे, हाथी, जंगली भैंसे, सुअर, चीते, रीछ, हिरन और नाना प्रकार के पक्षी देखे जा सकते हैं। 3. 1857 ई॰ के स्वाधीनता संग्राम में यहाँ के पीयली बरफूकन जैसे व्यक्तियों ने ब्रिटिश शक्ति को

चुनौती दी। मणिराम और महेशचंद्र बरुआ हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ गए। इन लोगों को दबाने के लिए अंग्रेज़ों ने जितनी शक्ति खर्च की उतनी पठान कबीलों को अधीन रखने के लिए भी नहीं की थी। गाँधी युग में तरुण राम फूकन, नवीनचंद्र बरदलोई, गोपीनाथ बरदलोई आदि नेताओं का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। 1942 ई॰ के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भी यह प्रदेश पीछे नहीं रहा। पुरुषों के साथ-साथ कनकलता जैसी युवतियाँ भी अपने प्राणों की बलि देने से नहीं चूकीं। 4. ह्वेनसाँग ने असम की भूमि व जलवायु के विषय में लिखा है- ''यहाँ की भूमि उर्वरा है। जलवायु आर्द्र और उष्ण है 5. एशिया में पेट्रोलियम का पहला कुआँ असम में माकम स्थान पर 1867 ई॰ में खोदा गया था। लखीमपुर और कछार में पेट्रोल और डिगबोई में केरोसिन तेल खूब निकलता है। कोयले की खानें भी काफ़ी मात्रा में पाई जाती हैं। **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. पुल्लिंग 6. स्त्रीलिंग 7. स्त्रीलिंग 8. स्त्रीलिंग **(ख)** 1. संज्ञा 2. संज्ञा 3. विशेषण 4. सर्वनाम 5. क्रिया 6. विशेषण 7. संज्ञा 8. क्रियाविशेषण **(ग)** 1. मकान 2. पर्वत 3. मार्ग 4. लोग 5. नदी 6. नगर **(घ)** 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. भाववाचक संज्ञा 3. समूहवाचक संज्ञा 4. भाववाचक संज्ञा 5. पदार्थवाचक संज्ञा 6. जातिवाचक संज्ञा

5. गंगा की महिमा (आस्था आधारित लेख)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. हम गंगा का माँ के रूप में स्मरण करते हैं। 2. गंगा को धार्मिक अवधारणाओं में देवी माना जाता है। 3. हिंदुओं के घर में गंगाजल इसलिए रखा जाता है क्योंकि हिंदू इसे पवित्र मानते हैं। इसका घर में छिड़कान करने से घर शुद्ध हो जाता है। 4. पूजापाठ में पूजा की शुद्धता बनाए रखने में गंगाजल सहायक है। पूजापाठ शुरू होने से पहले गंगाजल छिड़ककर ही उस स्थान को स्वच्छ व पवित्र किया जाता है। **लिखित-(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) **(ख)** 1. अलकनंदा व भागीरथी नदियों के मिलन से गंगा अपने स्वरूप को प्राप्त करती है। 2. देवप्रयाग में दो नदियों के मिलन से गंगा अपने स्वरूप में आती है। 3. गंगा इन पाँच राज्यों से होकर बहती है-उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल। 4. गंगा पश्चिम बंगाल में प्रवेश करके 'हुगली' बन जाती है। 5. गंगा की 'भागीरथी' नामक धारा बांग्लादेश में पद्मा के नाम से जानी जाती है। **(ग)** 1. महर्षि चरक ने गंगा के विषय में कहा है कि गंगाजल पथ्य है। 'औषधि जाह्नवी तोयं' अर्थात् गंगाजल औषधि है। इसकी समता संसार की कोई औषधि नहीं कर सकती। 2. चक्रपाणि दत्त ने गंगा की महिमा को इन शब्दों में बताया है-गंगाजल स्वास्थ्यवर्धक है। गंगाजल श्वेत, स्वादु, स्वच्छ, रुचिकर, पथ्य, भोजन पकाने योग्य, पाचक, शक्तिवर्धक और बुद्धि को बढ़ाने वाला है। 3. नगरों से होकर बहती गंगा के जल में नगरों का कूड़ा-करकट, कारखानों का विषैला जल मिल जाता है और इसका जल दूषित हो जाता है। 4. शहरों का कूड़ा-करकट, कारखानों का विषैला जल लेकर गंगा आगे बढ़ती है। फिर भी यह पाया गया कि गंगाजल में कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता है। ऐसा कहा जाता है कि गंगाजल में रेडियम के समान वस्तु है, जिसमें दुष्ट कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है। 5. फ्रांसीसी यात्री टैवरनियर ने गंगा के विषय में कहा है-गंगाजल में जो विशेषताएँ पाई जाती हैं, उनके कारण अनादि काल से जनमानस में इसका प्रयोग होता आया है; चाहे वह राजा हो या रंक, धनी हो अथवा निर्धन। **(घ)** 1. गंगा का जल साधारण जल से कई गुना स्वास्थ्यप्रद होता है। गंगाजल अनुपम पेय है। संसार में इसकी समता कहीं नहीं। शहरों का कूड़ा-करकट, कारखानों का विषैला जल लेकर गंगा आगे बढ़ती है। फिर भी यह पाया गया कि गंगाजल में कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता है। ऐसा कहा जाता है कि गंगाजल में रेडियम के समान वस्तु है, जिसमें दुष्ट कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है। फ्रांसीसी यात्री टैवरनियर

अपने यात्रा-विवरण में लिखते हैं कि गंगाजल में जो विशेषताएँ पाई जाती हैं, उनके कारण अनादि काल से जनमानस में इसका प्रयोग होता आया है। 2. गंगा की महिमा पर समय-समय पर कहा गया है-नमामि गंगे। तव पादपंकजम् सुरसुरैर्वन्दितदिकरूपम्। मुक्तिं च मुक्तिं च ददाति नित्यम् भावानुसारेण सदा नराणाम्। हे गंगा जी! मैं देव व दैत्यों द्वारा पूजित आपके दिव्य पादपद्मों को प्रणाम करता हूँ। आप मनुष्यों को सदा उनके भावानुसार भोग एवं मोक्ष प्रदान करती हैं। वेदव्यास लिखते हैं कि दर्शन से, स्पर्श से, जलपान करने से तथा नाम कीर्तन से सैकड़ों, हज़ारों पापियों को गंगा पवित्र कर देती है। लक्ष्मीनारायण मिश्र कहते हैं कि गंगा की पवित्रता में कोई विश्वास करने नहीं जाता। गंगा के निकट पहुँच जाने पर अनायास वह विश्वास पता नहीं कहाँ से आ जाता है। **भाषा-ज्ञान-(क)** सबल, सहर्ष, सरस, सशस्त्र **(ख)** सुपुत्र, सुयोग, सुपात्र, सुव्यवस्थित **(ग) उपसर्ग**-1. अ 2. उप 3. वि 4. अन् 5. अ 6. कु 7. भर 8. चौ **मूल शब्द**-1. शिष्ट 2. स्थित 3. शेष 4. उत्साह 5. भागा 6. चक्र 7. पेट 8. पाया **(घ)** 1. सब्ज़ीवाला, रखवाला 2. पेटू, गँवारू 3. पढ़ाई, चढ़ाई 4. घबराहट, चिल्लाहट **(ङ)** 1. पाप 2. विष 3. मलिन 4. अपवित्र 5. अनुपयोग 6. सरल 7. एक 8. अयोग्य 9. असमान 10. मूर्ख **(च)** 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. भाववाचक संज्ञा 5. व्यक्तिवाचक संज्ञा **(छ)** 1. वर्तमानकाल 2. भविष्यत्काल 3. भूतकाल 4. वर्तमानकाल 5. भविष्यत्काल **(ज)** 1. गंगा की बूँद-बूँद औषध है, अमृत है। 2. गंगाजल श्वेत, स्वादु, स्वच्छ, रुचिकर और शक्तिवर्धक है। 3. राकेश ने कहा, ''तुमने जो कुछ कहा, ठीक था।'' 4. हानि-लाभ, सुख-दु:ख, यश-अपयश सब भाग्य पर निर्भर हैं।

6. माँ कह एक कहानी (कविता)

मौखिक-(क) 1. स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं। 2. कविता का विषय निर्जीव प्राणी (हंस) की रक्षा है। 3. प्रस्तुत कविता में सिद्धार्थ की पत्नी अपने पुत्र राहुल को कहानी सुना रही हैं। 4. कविता का संदेश है कि हमें प्राणियों पर दया करनी चाहिए। **लिखित-(क)** 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) **(ख)** 1. कविता में कहानी सुनाने वाली सिद्धार्थ की पत्नी यशोधरा हैं। 2. कविता में कहानी सुनने वाला सिद्धार्थ का पुत्र राहुल है। 3. 'हाँ माँ, यही कहानी' से अभिप्राय है हाँ, यही कहानी सुनाइए। बालक कहानी से पूर्व परिचित नहीं है। 4. 'करुणा भरी कहानी' से अभिप्राय है दया व दूसरे की विपत्ति के दुख की कहानी। **(ग)** 1. कविता में उपवन में प्रात:काल का यह वर्णन किया गया है कि सुबह सुहावनी हवा चल रही थी, अनेक रंगों के फूल खिले हुए थे, घास पर ओस के कण चमक रहे थे और तालाब में पानी लहरा रहा था। 2. आखेटक द्वारा हंस को बाण मारने पर हंस घायल होकर नीचे गिर गया। तब यह कहानी करुणा भरी हो गई। 3. पक्षी को सिद्धार्थ ने उठाया और उसने नया जन्म-सा अनुभव किया। 4. खग-भक्षी हंस को प्राप्त करके उसे खाना चाहता था। 5. सिद्धार्थ और शिकारी (देवदत्त) के बीच विवाद हुआ और बात न्यायालय तक जा पहुँची। **(घ)** 1. कविता में उपवन में प्रात:काल सुहावनी हवा चल रही थी, अनेक रंगों के फूल खिले हुए थे, घास पर ओस के कण चमक रहे थे और तालाब में पानी लहरा रहा था। 2. माता ने राहुल से पूछा कि तू निर्णय कर कि तू रक्षक व भक्षक में से किसका पक्ष लेता है। राहुल ने कहानी पर यह प्रतिक्रिया दी कि यदि कोई निर्दोष प्राणी को मारे तो रक्षक को उसकी रक्षा करनी चाहिए। न्याय को भक्षक को दंड देकर रक्षक को पुरस्कृत करना चाहिए। 3. स्वयं करें। **(ङ)** इसका आशय है कि राहुल, तूने कहानी का भाव सही प्रकार से समझा। **(च)** 1. **संदर्भ**-प्रस्तुत कविता 'माँ कह एक कहानी' पाठ से उद्धृत है। इसके रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं। **प्रसंग**-इन पंक्तियों में उपवन के सौंदर्य का वर्णन है। **भावार्थ**-कविता में उपवन में अनेक रंगों के फूल खिले हुए थे, घास

पर ओस के कण चमक रहे थे, तालाब में पानी लहरा रहा था। 2. **प्रसंग**–इन पंक्तियों में हंस के घायल होने का वर्णन किया गया है। **भावार्थ**–प्रस्तुत पंक्तियों में बताया गया है कि उपवन में पक्षी मधुर स्वर में चहचहा रहे थे। तभी एक हंस बाण से घायल होकर ऊपर से नीचे गिरा। उसका पंख बाण से घायल हो गया था। 3. **प्रसंग**–इन पंक्तियों में बताया गया है कि रक्षक भक्षक से महान होता है। **भावार्थ**–माता ने राहुल से पूछा कि लू निर्णय कर कि तू रक्षक व भक्षक में से किसका पक्ष लेता है। राहुल ने कहानी पर यह प्रतिक्रिया दी कि यदि कोई निर्दोष प्राणी को मारे तो रक्षक को उसकी रक्षा करनी चाहिए। न्याय को भक्षक को दंड देकर रक्षक को पुरस्कृत करना चाहिए। तब माँ कहती हैं, 'न्याय दया का दानी है'। तूने कहानी का भाव सही समझा। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. खग, विहग, परिंदा 2. हवा, वायु, समीर 3. नृप, भूपति, महीप 4. जल, वारि, नीर **(ख)** 1. सभय/भयभीत 2. अपराधी 3. कठोर 4. भक्षक 5. संकुचित 6. विपक्ष 7. अन्याय 8. लाभ **(ग)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) **(घ)** 1. घायल 2. बाण 3. पंख 4. तेज़ नोकवाला 5. रक्षा करने वाला 6. खाने वाला 7. रंग 8. पक्षी

7. फाह्यान की भारत-यात्रा (ज्ञानवर्धक लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. फाह्यान चीनी यात्री था। 2. फाह्यान बौद्ध धर्म का अनुयायी था। 3. फाह्यान बौद्ध तीर्थ स्थानों का दर्शन करने और बौद्ध धर्म की पुस्तकों का संग्रह करने के लिए भारत आया था। 4. गोबी रेगिस्तान की भयावह परिस्थितियों के विषय में फाह्यान ने लिखा है-उसमें अनेक दुष्ट आत्माएँ रहती थीं और गरम हवाएँ चलती थीं। जो किसी को नहीं छोड़ती थीं। न ऊपर आकाश में कोई चिड़िया दिखाई पड़ती थी और न नीचे धरती पर कोई पशु। मार्ग का पता लगाने के लिए चारों ओर दृष्टि डालने पर भी कुछ दिखाई नहीं देता था, सिवाय मरे हुए मनुष्यों की हड्डियों के। केवल उन हड्डियों से मार्ग का अनुमान लगाना पड़ता था। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) **(ख)** 1. फाह्यान मध्य चीन का निवासी था। 2. फाह्यान ने भारत-यात्रा पर अपने देश से सन् 400 ई० में प्रस्थान किया था। 3. फाह्यान की यात्रा का उद्देश्य था-बौद्ध तीर्थ स्थानों का दर्शन और बौद्ध धर्म की पुस्तकों का संग्रह करना। 4. फाह्यान लंका तथा जावा के मार्ग से होकर अपने देश को लौटा। 5. फाह्यान दो महीने में खुतूननगर पहुँच गया था। 6. उस काल में खुतून नगर हरा-भरा और संपन्न बौद्ध राज्य था। 7. फाह्यान लंका तथा जावा के मार्ग से होकर अपने देश को लौटा। **(ग)** 1. भारत की जलवायु के विषय में फाह्यान ने लिखा है कि इस देश की जलवायु न बहुत गरम है और न बहुत ठंडी। बरफ़ या कोहरे की अधिकता नहीं है। 2. मथुरा से चलकर फाह्यान ने कन्नौज, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कुशीनगर, पाटलिपुत्र, राजगृह, गया, काशी आदि विभिन्न स्थानों की यात्रा की। 3. कपिलवस्तु को फाह्यान ने बुरी दशा में पाया। नगर उजड़ा था। कुशीनगर, जहाँ बुद्ध ने अपनी इहलीला समाप्त की, बुरी दशा में था। वैशाली नगर में बौद्ध धर्म की पुस्तकों का संग्रह करने के लिए बौद्धों का दूसरा सम्मेलन हुआ। इस स्थान की दशा अच्छी थी। 4. स्वदेश छोड़े फाह्यान को बहुत समय हो गया था इसलिए उसे अपने देश का स्मरण होने लगा। अंत में उसने एक जहाज़-यात्रा की। वह अनेक कठिनाइयाँ उठाता हुआ अपने देश को चल पड़ा और आठ दिन की लंबी यात्रा के उपरांत दक्षिणी चीन में समुद्री तट पर सकुशल पहुँच गया। **(घ)** 1. खुतूननगर पहुँचने के लिए लाप का जंगल पार करना पड़ता था। इस जंगल में फाह्यान और उसके साथियों को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। कोसों पानी का नाम तक न था। सूर्य अपने प्रचंड ताप से तप रहा था। प्यास और गरमी के मारे यात्रियों का कंठ सूख रहा था। कहीं-कहीं रास्ता भूल जाने से उन्हें और भी अधिक कष्ट उठाना पड़ा। 2. उस काल में खुतूननगर हरा-भरा और संपन्न बौद्ध राज्य था। आज तो यह राज्य उजाड़ हो गया है; परंतु प्राचीन महलों, स्तूपों, बागों और विहारों के खंडहरों के रूप में उस राज्य की समृद्धि के चिह्न आज

भी पाए जाते हैं। 3. फाह्यान ने लिखा-प्रजा सुखी है। लोगों को कर अधिक नहीं देना पड़ता। शासक लोग अत्याचार नहीं करते। किसानों को अपनी उपज का एक निश्चित भाग राजा को देना पड़ता है। लोग इच्छानुसार जहाँ चाहें घूमने-फिरने के लिए स्वतंत्र हैं। अपराधी को उसके अपराध के अनुसार भारी या हलका दंड दिया जाता है। देश भर में जीवहत्या नहीं होती। बाज़ारों में कसाईखाने और मांस बेचने की दुकानें नहीं हैं। बुद्ध भगवान के समय से इस देश के राजा-महाराजा तथा अमीर लोगों में दान से विहार-निर्माण करने की प्रथा चली है, वे लोग भूमि आदि का दान-पत्र लिख देते हैं, जिसकी आय से विहारों का काम चलता रहता है। विहारों में रहने वाले साधु-संतों को भोजन मुफ़्त मिलता है।'' 4. पाटलिपुत्र के विषय में फाह्यान ने वर्णन किया है-''पाटलिपुत्र का पुराना राजमहल बहुत अद्भुत है। उसके निर्माण में बड़े-बड़े पत्थरों से काम लिया गया है। मनुष्य के हाथों से वह न बना होगा। उसमें लगभग छह-सात सौ साधु रहते थे। दूसरे महीने के आठवें दिन यहाँ एक उत्सव होता है। उस अवसर पर चार पहियों का एक रथ बनाया जाता है। रथ पर पाँच खंडों का बना हुआ एक मंदिर रखा जाता है। मंदिर बहुत सजा हुआ रहता है। उसमें भगवान बुद्ध की एक मूर्ति रखी जाती है। इसी प्रकार से तीस रथ तैयार किए जाते हैं। यह उत्सव बड़े समारोह से मनाया जाता है। धनी लोगों ने नगर में असहाय रोगियों की चिकित्सा के लिए औषधालय खोल रखा है।'' **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

भाषा-ज्ञान-(क) समुद्र-सिंधु, रत्नाकर, जलधि **वन**-अरण्य, कानन, जंगल **(ख)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (स) **(ग)** 1. कर्ता कारक 2. संबंध कारक 3. करण कारक **(घ)** 1. दौड़ रहा है (अकर्मक क्रिया) 2. भरती है (सकर्मक क्रिया) 3. हँस रही है (अकर्मक क्रिया) 4. तोड़े (सकर्मक क्रिया) **(ङ)** 1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत्काल 4. भूतकाल 5. भविष्यत्काल **(च)** 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-सद्गुण। 2. संसार के महापुरुष वही लोग बन पाए जिन्होंने अपने दोषों पर चिंतन किया और उन्हें त्यागकर सद्गुणों को ग्रहण किया। साथ ही दूसरों को सद्गुणों के आधार पर अपनाकर उन्हें मार्ग दिखाया। 3. दुर्जन लोगों में दोष-दर्शन की प्रवृत्ति होती है। 4. सज्जन लोग दूसरों के गुणों को देखकर प्रशंसा करते हैं और यदि कोई त्रुटि दिखाई भी देती है तो उसे मधुर तथा संयमित भाषा में सुधार की दृष्टि से कहते हैं। 5. पराए दोषों को देखने की प्रवृत्ति के कारण मानव किसी को अपना नहीं बना सकता। 6. सभी को बुरा मानने से घृणा का प्रसार होगा। 7. घृणा के कारण फूट और फूट के कारण लड़ाई-झगड़ा और फिर विनाश होगा। 8. केवल उत्तम विचार और सबके प्रति उदार भावना से दोष-दर्शन की प्रवृत्ति में सुधार लाया जा सकता है। 9. **उत्तम विचार**-उत्तम (विशेषण), विचार (विशेष्य) **पराए दोष**-पराए (विशेषण), दोष (विशेष्य), **उदार भावना**-उदार (विशेषण), भावना (विशेष्य) **मधुर भाषा**-मधुर (विशेषण), भाषा (विशेष्य) 10. **संसार**-सांसारिक, **दोष**-दोषी, **झगड़ा**-झगड़ालू, **दुःख**-दुःखी **(छ)** 1. नवीन 2. रंक 3. आखिरी 4. विपन्न 5. अच्छी 6. निर्धन **(ज)** 1. फाह्यान ने भारत की यात्रा की। 2. फाह्यान ने भारत-यात्रा में बहुत कष्ट सहे। 3. हमें संकट के समय धैर्य रखना चाहिए। 4. हमें आय से अधिक खर्च नहीं करना चाहिए। 5. हमें महापुरुषों की शिक्षाएँ स्मरण रहनी चाहिए। 6. प्राचीन भारतीय शासक महान थे। 7. हमें अपने उद्देश्य के अनुसार कार्य करने चाहिए।

8. चंद्रशेखर आज़ाद (जीवन-परिचय)

मौखिक-(क) 1. स्वयं करें **(ख)** 1. आज़ादी सभी को अच्छी लगती है। चाहे पिंजरे में बंद पक्षी हो, चाहे रस्सी में बँधा हुआ पशु; सभी परतंत्रता के बंधनों को तोड़ फेंकना चाहते हैं। 2. मनुष्य पशुओं की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और संवेदनशील होता है। उसे गुलामी की जंजीर सदा खटकती रहती है। 3. चंद्रशेखर के पिता का नाम पंडित सीताराम और माता का नाम श्रीमती जगरानी देवी था। 4. ब्रिटिश

युवराज एडवर्ड भारत आने को थे। काशी आने का भी उनका कार्यक्रम था। कांग्रेस ने तय किया कि उनका बहिष्कार किया जाए। इस संबंध में जब गाँधी जी ने आंदोलन चलाया, तो आज़ाद भी उसमें कूद पड़े। यद्यपि वे अभी बालक ही थे, फिर भी पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। मजिस्ट्रेट ने उनसे कुछ प्रश्न पूछे। उनके उत्तरों से खीजकर मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दी, ''इसे ले जाओ और पंद्रह बेंत लगाकर छोड़ दो।'' बेंत एक-एक कर उनकी पीठ पर पड़ते और उनकी चमड़ी उधेड़ डालते, पर वह हर बेंत के साथ चिल्लाते, 'भारत माता की जय।' वह तब तक नारा लगाते रहे, 'जब तक वह बेहोश न हो गए।' इस घटना के बाद ही चंद्रशेखर 'आज़ाद' के नाम से विख्यात हो गए। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) **(ख)** 1. चंद्रशेखर आज़ाद पढ़ने के लिए काशी भेजे गए थे। 2. जब चंद्रशेखर संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेजे गए उनका मन वहाँ नहीं लगा। वे भागकर अपने बाबा के घर अलीपुर स्टेट पहुँच गए। यहाँ पर वे भीलों से मिले 3. भीलों से उनकी खूब घनिष्ठता हो गई। उन्होंने उनसे धनुष-बाण चलाना सीखा और थोड़े ही दिनों में वे अच्छे निशानेबाज़ हो गए। 4. चंद्रशेखर आज़ाद अपने दोस्त के साथ इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में बैठे थे। **(ग)** 1. शिक्षा प्राप्ति में चंद्रशेखर आज़ाद मन इसलिए नहीं लगा पाते थे क्योंकि स्वभाव से उन्हें एक जगह टिककर बैठना अच्छा नहीं लगता था। इस कारण वे कभी-कभी गंगा में घंटों तैरते, तो कभी कथा बाँचने वालों के पास बैठकर रामायण, महाभारत और भागवत की कथा सुनते थे। वीरों की गाथाएँ उन्हें बहुत पसंद थीं। 2. ब्रिटिश युवराज एडवर्ड भारत आने को थे। काशी आने का भी उनका कार्यक्रम था। कांग्रेस ने तय किया कि उनका बहिष्कार किया जाए। इस संबंध में जब गाँधी जी ने आंदोलन चलाया, तो आज़ाद भी उसमें कूद पड़े। यद्यपि वे अभी बालक ही थे, फिर भी पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। मजिस्ट्रेट द्वारा उन्हें बेंत की सजा मिली। 3. सरदार भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने सरकार की दमन नीति का विरोध करने के लिए 7 अप्रैल, 1929 को केंद्रीय विधान सभा में बम फेंका। 4. चंद्रशेखर आज़ाद द्वारा अंग्रेज़ पुलिस के साथ मुकाबले का अंत आज़ाद द्वारा स्वयं को गोली मारने पर हुआ क्योंकि आज़ाद के पास केवल एक ही गोली बची थी। **(घ)** 1. एक बार चंद्रशेखर आज़ाद लाल रोशनी देने वाली दियासलाई से खेल रहे थे। उन्होंने साथियों से कहा कि एक सलाई (तीली) से जब इतनी रोशनी होती है, तो सब सलाइयों के एक साथ जलाने से न मालूम कितनी रोशनी होगी। सब साथी इस प्रस्ताव पर खुश हुए पर किसी की हिम्मत नहीं हुई कि सारी सलाइयों को एक साथ जलाए, क्योंकि रोशनी के साथ सलाई में तेज़ आँच भी होती है। एक सलाई की आँच झेलना तो कोई बात नहीं थी, पर सब सलाइयों को एक साथ झेलने का खतरा कौन मोल लेता? इस पर चंद्रशेखर सामने आए और उन्होंने कहा कि मैं सब सलाइयों को एक साथ जलाऊँगा। उन्होंने ऐसा ही किया। तमाशा तो खूब हुआ। उनका हाथ भी जल गया पर उन्होंने उफ़ तक न की। जब साथियों ने उनके हाथ को देखा, तो मालूम हुआ कि उनका हाथ बहुत जल गया है। सब साथी उपचार के लिए दौड़ पड़े पर चंद्रशेखर के चेहरे पर पीड़ा का कोई प्रभाव न था और वह खड़े-खड़े मुसकरा रहे थे। 2. चंद्रशेखर जब बारह वर्ष के थे, तब जलियाँवाला बाग का भयंकर हत्याकांड हुआ, जिसमें सैकड़ों निरपराध भारतीयों को गोलियों का शिकार होना पड़ा। जलियाँवाला बाग चारों ओर से ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरा हुआ एक मैदान था। इसका रास्ता बहुत ही सँकरा था। एक दिन जलियाँवाला बाग में सभा हो रही थी। उसमें ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भाषण हो रहे थे। सभा चल रही थी कि सेना की एक टुकड़ी के साथ अंग्रेज़ जनरल डायर वहाँ आया और उसने बिना कुछ कहे सुने निहत्थी भीड़ पर गोलियाँ चलवानी शुरू कर दीं। लगभग एक हज़ार आदमी मारे गए और कई घायल हो गए। 3. उन दिनों भारत के क्रांतिकारी अपना संगठन बना रहे थे। चंद्रशेखर आज़ाद उनसे अधिक प्रभावित हुए और वे भी क्रांतिकारी दल के सदस्य बन

गए। चंद्रशेखर आज़ाद जिस क्रांतिकारी दल के सदस्य बने, वह दल बड़ा था और सारे भारत में उसकी शाखाएँ फैली थीं। क्रांतिकारी दल के सामने बहुत-सी व्यावहारिक समस्याएँ थीं। सबसे बड़ी समस्या यह थी कि संगठन के लिए धन कहाँ से मिले? इसलिए दल की ओर से 1925 ई० में उत्तर प्रदेश में 'काकोरी' स्टेशन के निकट चलती रेलगाड़ी को रोककर सरकारी खज़ाना लूट लिया गया। 4. क्रांतिकारियों द्वारा साइमन कमीशन का विरोध करने का यह परिणाम हुआ कि पुलिस ने क्रांतिकारियों पर लाठीचार्ज किया जिसमें वयोवृद्ध नेता लाला लाजपतराय को लाठी की खतरनाक चोटें आईं। इन्हीं चोटों के कारण कुछ ही दिनों बाद उनका प्राणांत हो गया। इससे देश का वातावरण बहुत विक्षुब्ध हो गया। 5. 1931 ई० की 27 फरवरी की बात है। दिन के दस बजे थे। आज़ाद और सुखदेव राजा इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में बैठे थे। इतने में दो पुलिस अधिकारी वहाँ आए। उनमें से एक आज़ाद को पहचानता था। उसने दूर से आज़ाद को देखा और लौटकर खुफ़िया पुलिस के सुपरिंटेंडेंट नाट बावर को इसकी खबर दी। नाट बावर इस खबर को पाते ही तुरंत मोटर द्वारा अल्फ्रेड पार्क पहुँचा और आज़ाद से दस गज के फासले पर उसने मोटर रोक दी। पुलिस की मोटर देखकर आज़ाद का साथी तो बच निकला किंतु वे स्वयं वहीं रह गए। नाट बावर 'आज़ाद' की ओर बढ़ा। दोनों तरफ़ से एक साथ गोलियाँ चलीं। नाट बावर की गोली आज़ाद की जाँघ पर लगी, तो आज़ाद की गोली नाट बावर की कलाई पर, जिससे उसकी पिस्तौल हाथ से छूटकर गिर गई। उधर और भी पुलिस वाले आज़ाद पर गोली चला रहे थे। हाथ से पिस्तौल छूटते ही नाट बावर एक पेड़ की ओट में छिप गया। आज़ाद के पास हमेशा काफ़ी गोलियाँ रहती थीं, जिनका इस अवसर पर उन्होंने खूब प्रयोग किया। नाट बावर जिस पेड़ की ओट में था, आज़ाद मानो उस पेड़ को छेदकर नाट बावर को मार डालना चाहते थे। पूरे एक घंटे तक दोनों ओर से गोलियाँ चलती रहीं। जब आज़ाद के पास एक गोली बची तो वह गोली उन्होंने स्वयं अपने आपको मार ली। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. शाखाएँ 2. दियासलाइयाँ 3. मोमबत्तियाँ 4. गोलियाँ 5. रुचियाँ 6. गाड़ियाँ 7. नारियाँ 8. शिक्षिकाएँ 9. नृत्यांगनाएँ 10. बालिकाएँ **(ख)** 1. अपराधी 2. गुलाम 3. चिरायु 4. प्राचीन 5. दुराग्रह 6. परतंत्रता 7. सम्मान 8. अवनत 9. चौड़ा 10. मंडन **(ग)** 1. भाववाचक संज्ञा 2. विशेषण 3. संज्ञा 4. संज्ञा 5. विशेषण 6. विशेषण 7. संज्ञा 8. विशेषण **(घ) विशेषण**–1. साहसी 2. कठोर 3. निरपराध 4. घनिष्ठ 5. पंद्रह 6. ऊँची **विशेष्य**–1. व्यक्ति 2. परिश्रम 3. लोग 4. मित्र 5. बेंत 6. दीवारें **(ङ) उद्देश्य**–1. अध्यक्ष 2. अंग्रेज़ों 3. ब्रिटिश सरकार 4. क्रांतिकारी 5. आज़ाद **विधेय**–1. भाषण देकर चला गया। 2. स्वतंत्रता सेनानियों पर लाठीचार्ज किया। 3. कठोर कानून बनाए 4. संघर्ष करते रहे। 5. पढ़ने के लिए काशी गए।

9. बिन पानी सब सून (ज्ञानवर्धक लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. जल का उपयोग पीने, नहाने, कपड़े व बरतन धोने, खेतों की सिंचाई करने में किया जाता है। 2. जल की अनुपस्थिति में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। 3. पीने के लिए शुद्ध जल नदियों, कुँओं व वर्षा से प्राप्त होता है। 4. नहीं 5. शुद्ध जल की निरंतर आपूर्ति के लिए नदियों, तालाबों को गंदा नहीं करना चाहिए तथा जल को व्यर्थ नहीं बहाना चाहिए। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (अ) **(ख)** 1. धरती पर 71% प्रतिशत भाग पर जल पाया जाता है। 2. प्राणियों के शरीर में जल रक्तादि के रूप में पाया जाता है। 3. प्रदूषित जल पीने योग्य इसलिए नहीं होता है क्योंकि उसमें विषैले तत्व व रोगाणु मिले होते हैं। 4. प्रदूषित जल पीने से पेट व यकृत की बीमारियाँ हो जाती हैं। 5. जल नदियों में कारखानों का कूड़ा-कचरा, कीटनाशक मिलने से प्रदूषित होता है। **(ग)** 1. सामान्य रूप से व्यक्ति प्रातः बिस्तर त्यागने से लेकर रात्रि बिस्तर ग्रहण करने तक नहाने, पीने, कपड़े धोने तक में लगभग दो-तीन बालटी जल उपयोग में लाता है। 2.

जनाधिक्य का किसी स्थान पर यह प्रभाव पड़ता है कि उस स्थान के जल का अधिक से अधिक उपयोग होता है व लोगों के क्रियाकलापों से जल प्रदूषण फैलता है और उसका परिमाण भी कम होता जाता है। 3. पूर्व काल में लोग पुण्य लाभ अर्जित करने हेतु कुँए खुदवाकर लोगों को जल प्रदान करते थे। 4. पूर्व काल में जल उचित मात्रा में उपलब्ध था, जनसंख्या कम थी इसलिए न जल प्रदूषित था और न ही मूल्य देकर प्राप्त किया जाता था। स्थान-स्थान पर प्याऊ लगे रहते थे। कुएँ व हैंडपंप बड़ी सामान्य-सी वस्तुएँ थीं; परंतु फ़ैशन और प्रदूषण ने कुएँ पाट दिए, हैंडपंप उखाड़ दिए अथवा चोरों की भेंट चढ़ गए और हाथ में बीस-तीस रुपए की पानी की बोतल आ गई। पीने का पानी एक बड़ा उद्योग बन गया और जो नि:शुल्क बल्कि पुण्यप्राप्ति हेतु जल की व्यवस्था करते थे, उनकी नई पीढ़ियों ने जल का बड़ा मूल्य वसूलना प्रारंभ कर दिया। **(घ)** 1. हमें अब बेचने और खरीदने की आदत पड़ गई है। सरकार हो या व्यापारी, अब वस्तुएँ और सेवाएँ शुल्क देकर प्राप्त की जाती हैं। मंदिर में देव दर्शन पर भी कई स्थानों पर शुल्क देना पड़ता है, पानी की तो बात ही क्या है। जिस देश के लोग गंगा को देवी और माता मानकर श्रद्धा से दीप-पुष्प अर्पित करने की परंपरा से आते थे, आज उसमें स्त्री-पुरुष मिलकर जल-क्रीड़ाएँ करते हैं। जल एक उपभोग की वस्तु बन गया है, जिसका व्यापारी और उपभोक्ता के बीच छलकते रहने का स्वभाव पाया जाने लगा है। 2. स्वयं करें। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय है कि प्राचीन काल से ही जल को कल्याणकारी माना गया है। 2. इस पंक्ति का आशय है कि पानी के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (अ) **(ख)** 1. असीमित 2. सामान्य 3. उष्ण 4. अधर्म 5. मूल्यहीन 6. मरण 7. विशाल 8. उच्च 9. उद्दंड 10. आध्यात्मिक **(ग)** 1. लोटे 2. डोरियाँ 3. पीढ़ियाँ 4. बोतलें 5. कुएँ 6. नाले 7. मछलियाँ 8. बिस्तरों/बिस्तरे 9. नदियाँ 10. कामनाएँ **(घ)** 1. भूमि, धरा, वसुंधरा 2. पानी, उदक, वारि 3. निशा, रजनी, यामिनी 4. मत्स्य, मीन, शफरी 5. तटिनी, सरिता, तरंगिणी

10. नीड़ का निर्माण फिर-फिर (कविता)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता के रचयिता डॉ० हरिवंशराय बच्चन हैं। 2. प्रस्तुत कविता का विषय नए सृजन कार्य में व्यस्त होना है। 3. कविता में चिड़िया परिश्रमी व सृजनकर्ता (मनुष्य) का प्रतीक है। 4. कविता में नीड़ सृजन (निर्माण) का प्रतीक है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) **(ख)** 1. कवि ने जीवन की समस्याओं के प्रति कहा है कि समस्याओं से घबराना नहीं चाहिए। 2. जीवन की समस्याओं के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण होना चाहिए कि वह समस्याओं को दूर करके अपने कार्य में सफलता प्राप्त करे। 3. प्रत्येक निराशा के उपद्रव के अंत में कवि पाता है कि नाश के दुख से कभी निर्माण का सुख नहीं दबता। 4. 'नेह का आह्वान फिर-फिर' से कवि कहना चाहता है कि स्नेह से युक्त होकर नए सृजन कार्य में व्यस्त होना। **(ग)** 1. आँधी और घोर वर्षा से चिड़ियों के घोंसले की बुरी दशा हो जाती है। वह क्षत-विक्षत हो जाता है। 2. कवि जब चिड़िया को तेज़ चलती आँधी/हवा में भी तिनकों को मुँह में दबाए उड़ते हुए देखता है तो कहता है कि ऐसा दृश्य देखकर प्रतीत होता है कि छोटी-सी चिड़ियाँ ने पवन को भी हरा दिया। यह देखकर निराशा में आशा का संचार होता है। 3. कवि आशारूपी पक्षी से पूछ रहा है कि तू किस जगह छिपा था जो गगन पर चढ़ अपना निज वक्ष गर्व से बार-बार उठा रहा है। 4. प्रस्तुत कविता से शिक्षा मिलती है कि हमें जीवन में बाधाओं व समस्याओं के आने पर घबराना नहीं चाहिए, निराश नहीं होना चाहिए बल्कि अपने निर्माण-कार्यों में निरंतर लगे रहना चाहिए। **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** इस पंक्ति का भाव है कि प्राकृतिक बाधाओं के आने पर मनुष्य को सृजन कार्य में स्नेह युक्त होकर व्यस्त रहना चाहिए। **(च)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. नभ, व्योम, गगन 2.

खग, विहग, खेचर 3. निशा, यामिनी, रजनी 4. तरु, विटप, पेड़ 5. सूरज, दिनकर, भानु **(ख)** 1. सुदृढ़, बहुत मज़बूत 2. सुपात्र, योग्य व्यक्ति 3. सुप्रसिद्ध, बहुत अधिक प्रसिद्ध 4. सुरम्य, बहुत सुंदर **(ग)** 1. सूर्य + उदय 2. पर + उपकार 3. प्रेम + उपहार 4. भाग्य + उदय **(घ)** 1. सत्यता 2. कोमलता 3. निर्भरता 4. भावुकता 5. सुंदरता 6. स्वतंत्रता **(ङ)** 1. भीरुता 2. धरा 3. अनिश्चित 4. परतंत्रता **(च) 'त्व'**- पितृत्व, मातृत्व, अपनत्व, स्वत्व **'ता'**-स्वतंत्रता, भव्यता, भावुकता, वाचालता

11. उत्तम स्वास्थ्य (ज्ञानवर्धक लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. स्वस्थ व्यक्ति प्रसन्नचित रहकर अपने कार्य रुचिपूर्वक करता है जबकि अस्वस्थ व्यक्ति चिड़चिड़ा रहता है तथा अपने कार्य सही प्रकार नहीं कर पाता है। 2. स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोगों का जीवन सकारात्मक, सक्रिय व प्रफुल्लित होता है। 3. अस्वस्थ व्यक्तियों का जीवन निराशापूर्ण व कष्टप्रद होता है। 4. संतुलित आहार ग्रहण कर, व्यायाम तथा प्राणायाम करके शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। 5. विद्यार्थी को स्वास्थ्य व शिक्षा के प्रति सचेत रहने के लिए जल्दी सोना चाहिए, सुबह जल्दी उठना चाहिए तथा पौष्टिक भोजन करना चाहिए। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) **(ख)** 1. उत्तम स्वास्थ्य को जीवन का सबसे बड़ा धन बताया गया है। 2. कोई व्यक्ति किसी कार्य को रुचिपूर्वक स्वस्थ रहने की स्थिति में कर सकता है। 3. किशोरों के लिए खेलकूद, जिम्नास्टिक, आसन, दौड़ना और तैरना आदि लाभकारी व्यायाम हैं। 4. प्रत्येक बालक-बालिका को सामूहिक खेलों में भाग इसलिए लेना चाहिए क्योंकि इससे न केवल शरीर फुर्तीला और सशक्त होता है अपितु इसमें परस्पर सहयोग से काम करने की भावना का विकास भी होता है। 5. प्राथमिक एवं पूर्व-माध्यमिक विद्यालयों में सामूहिक व्यायाम इसलिए कराए जाते हैं क्योंकि इन व्यायामों से न केवल स्वास्थ्य बनता है अपितु समूह में रहकर कार्य करने की भावना का भी विकास होता है। 6. शारीरिक और मानसिक थकान से बचने के लिए मनोरंजन के साधनों की आवश्यकता होती है। **(ग)** 1. उत्तम स्वास्थ्य से आशय स्वस्थ विचार, सामान्य व्यवहार, निहित ऊर्जा शक्ति का अपनी योग्यता व क्षमता के अनुरूप उपयोग एवं आचरण उत्तम स्वास्थ्य की पहचान है। स्वास्थ्य उत्तम होगा, तो हमारे विचार भी उत्तम बनेंगे। हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा, तो मन भी प्रफुल्लित और उत्साह से पूर्ण रहेगा, इससे कार्य पूर्ण मनोयोग से हो पाएँगे। इस प्रकार उत्तम स्वास्थ्य से जीवन सरल व निर्दोष बना रहेगा। 2. प्राणायाम का उद्देश्य अपनी श्वसन प्रक्रिया को इस प्रकार विकसित करना है कि यह तन और मन दोनों को शुद्ध करे। प्राणायाम करने से न केवल फेफड़ों को बल मिलता है बल्कि इससे उदरस्थ सभी नसों का रक्त-प्रवाह सुधरता है, आँतें सक्रिय एवं मज़बूत होती हैं। प्राणायाम से मस्तिष्क स्वस्थ रहता है। 3. गरिष्ठ भोजन के विषय में बताया गया है कि गरिष्ठ भोजन शरीर के लिए ज़हर है। 4. तैरना भी एक प्रकार का खेल है। इससे मनोरंजन के साथ-साथ शरीर के सभी अंगों का व्यायाम भी हो जाता है। 5. खेल हमारी शारीरिक, मानसिक दक्षता व क्षमता को बढ़ाते हैं। ये हमारे हृदय को मज़बूत बनाते हैं, रक्त परिसंचरण को बढ़ाते हैं। खेलों से हमारे शरीर की मांसपेशियाँ व हड्डियाँ मज़बूत होती हैं और हमारा ऊर्जा स्तर बढ़ता है। इनसे हमारा मानसिक विकास होता है। **(घ)** 1. हमारा शरीर एक यंत्र के समान है। इसमें अनेक प्रकार के कल-पुर्ज़े लगे हैं। हृदय एक प्रकार का स्वचालित पंप है, जो बिना हमारी जानकारी के हमारे खून को दिन-रात सारे शरीर में प्रवाहित करता रहता है। इसी प्रकार हमारे फेफड़े निरंतर श्वास लेने और श्वास छोड़ने का कार्य करते रहते हैं। हृदय, तिल्ली, गुर्दे और आँतें आदि शरीर के अन्य अंग भी इसी प्रकार निरंतर अपना-अपना कार्य करते रहते हैं, जिनके कार्य करते रहने का हमें ज्ञान भी नहीं होता है। शरीर के बहुत-से अंग ऐसे भी हैं, जो तभी काम करते हैं, जब हम उनसे कार्य लेना चाहते हैं। इन अंगों की

ऐच्छिक गति मांसपेशियों के द्वारा होती है, जिन्हें हम इच्छानुसार सिकोड़ या फैला सकते हैं। 2. शरीर की मांसपेशियों को सक्रिय बनाने के लिए व्यायाम व आसन आदि क्रियाएँ नित्य करते रहना चाहिए। ऐसा करने से शरीर की समस्त मांसपेशियों का रक्त प्रवाह संतुलित रहता है। उनकी अशुद्धियाँ दूर होती हैं और उनमें नई शक्ति या अवचेतना आ जाती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी इच्छा, अवस्था व रुचि के अनुसार खेल, आसन, व्यायाम, प्राणायाम आदि में से किसी एक को चुनकर नियमित अभ्यास करे। **(ङ)** इस पंक्ति का भाव यह है कि जिस व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य व चरित्र अच्छा होता है और साथ ही साथ वह संयमी भी हो तो ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य उत्तम होता है। **भाषा-ज्ञान– (क)** 1. संबंध कारक 2. कर्ता कारक 3. अपादान कारक **(ख)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. पुल्लिंग 6. पुल्लिंग **(ग)** 1. धर्म से विमुख 2. रोग से मुक्त 3. धन से हीन 4. देश से निकाला **(घ)** 1. अपयश 2. विदेश 3. अपमान 4. विषम 5. विराग 6. विक्रम

12. मित्रता (प्रेरणाप्रद लेख)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. मित्रता दो व्यक्तियों के बीच पारस्परिक लगाव है। मित्रता दो व्यक्तियों का वास्तव में एक हो जाना है। 2. मित्र बनाते समय व्यक्ति के सही आचरण व सद्व्यवहार का ध्यान रखना चाहिए। 3. हम अपने मित्र में ईमानदारी, सत्यवादिता, निस्वार्थ भाव आदि गुणों का होना चाहेंगे। 4. अपने मित्र में हम बेईमानी, छल-कपट, स्वार्थपरकता आदि अवगुणों की अपेक्षा नहीं करेंगे। **लिखित–(क)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) **(ख)** 1. प्रस्तुत पाठ के लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल हैं। 2. प्रस्तुत पाठ का शीर्षक 'मित्रता' है। 3. प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य जीवन में सच्चे मित्र का महत्व व उपयोगिता दर्शाना है। 4. किसी युवा पुरुष के लिए घर से बाहर निकलकर पहली कठिनाई मित्र के चुनाव की बताई गई है। 5. मित्र के चुनाव की उपयुक्तता पर जीवन की सफलता निर्भर होती है। 6. ऐसे लोगों का साथ बुरा बताया गया है, जो हमसे अधिक दृढ़-संकल्प हैं; और जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं। **(ग)** 1. मित्रता से अभिप्राय है दो व्यक्तियों के बीच पारस्परिक लगाव, दो व्यक्तियों का परस्पर एक हो जाना। एक-दूसरे के हितों का ध्यान रखना, सुख-दुख में साथ देना। 2. मित्र बनाने में लोग उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी-ही-अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा लेते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस, ये ही दो-चार बातें किसी में देखकर लोग झटपट उसे अपना बना लेते हैं। 3. ऐसे लोगों का साथ लेखक ने बुरा बताया है, जो हमसे अधिक दृढ़-संकल्प हैं; क्योंकि हमें उनकी ही बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है पर ऐसे लोगों का साथ करना और भी बुरा बताया है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं। 4. लेखक ने इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं, तो उसके सौ गुण-दोष को परखकर लेते हैं; पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी-ही-अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा लेते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस, ये ही दो-चार बातें किसी में देखकर लोग झटपट उसे अपना बना लेते हैं। 5. हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकेतों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब हमें उत्साहित करेंगे। 6. सच्ची मित्रता के विषय में लेखक ने बताया है कि सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। **(घ)** 1. मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना

सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। 2. कुसंग केवल नीति और सद्‌वृत्ति का ही नाश नहीं करता बल्कि बुद्‌धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी जो उसे दिन-रात अवनति के गड्‌ढे में गिराती जाएगी। इंग्लैंड के एक विद्‌वान को युवावस्था में राज-दरबारियों में जगह नहीं मिली। इस प्रकार ज़िंदगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। बहुत-से लोग इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता, जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। 3. युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है। उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें पर जिससे हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे-छोटे काम ही हम निकालते जाएँ पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय है कि विश्वासपात्र मित्र हमारी तब सहायता करता है जब हम जीवन के किसी गहरे संकट से गुज़र रहे होते हैं, तब वह तन-मन-धन से हमारे जीवन के संकट से हमें उबारता है। 2. इस पंक्ति का आशय है कि बुरी संगति व्यक्ति के चरित्र का पतन कर देती है जिस प्रकार घातक बुखार व्यक्ति के शरीर व स्वास्थ्य को नष्ट कर देता है। **(च)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(छ)** 1. खज़ाने 2. छात्रावस्था 3. चिंताशील 4. क्षय **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. पथरीला 2. ठंडा 3. पौराणिक 4. चमकीला 5. गौरवशाली 6. आकर्षक 7. ऐतिहासिक 8. पौराणिक **(ख)** 1. चतुरता 2. कठोरता 3. निम्नता 4. मित्रता 5. सफलता 6. चोरी 7. मज़दूरी 8. विफलता 9. मधुरता 10. सभ्यता **(ग)** 1. ठंड 2. कुसंग 3. बुद्‌धि 4. मिट्‌टी 5. कुंठित **(घ)** 1. प्रश्नवाचक सर्वनाम 2. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 3. निजवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम 4. प्रश्नवाचक सर्वनाम 5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम **(ङ)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग 7. पुल्लिंग 8. स्त्रीलिंग 9. स्त्रीलिंग 10. पुल्लिंग **(च)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (अ) **(छ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ) **(ज)** 1. हमें स्थिति के अनुसार कार्य करने चाहिए। 2. बातचीत करते समय हमें अपनी भाषा पर नियंत्रण रखना चाहिए। 3. हमें सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्न करना चाहिए। 4. योग्य व्यक्ति का सभी जगह सम्मान होता है। 5. हमें दूसरों के लाभ के कार्य करने चाहिए 6. हमें अपने से छोटों से स्नेह करना चाहिए। 7. परिश्रमी व कर्मशील व्यक्तियों का भाग्य साथ देता है।

13. अनंत आकाश (ज्ञानवर्धक लेख)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. प्रस्तुत पाठ के लेखक डॉ० कैलाशनाथ उपाध्याय हैं। 2. आकाश अत्यंत विशाल है। हम इसकी विशालता इसमें उपस्थित आकाशगंगाओं, असंख्य तारों (जो आकार में सूर्य से भी विशाल हैं) से स्पष्ट करेंगे। 3. मनुष्य अंतरिक्ष में असंख्य तारावलियों के सौंदर्य को देखकर मुग्ध होता है। 4. आकाश में फैले रजकण वास्तव में धूल के कण हैं। 5. असंख्य रजकणों के कारण सूर्य के प्रकाश में हमारी पृथ्वी का सारा वायुमंडल आलोकित हो जाता है। **लिखित-(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (स) **(ख)** 1. आकाश में छोटी-छोटी ज्योति की चिंगारियाँ विशाल सूर्य हैं। 2. आकाश में छोटी-छोटी ज्योति की चिंगारियों का आकार इतना विशाल है जिनमें हमारे सूर्य जैसे सहस्रों सूर्य समा जाएँ। 3. तारे हमें दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण नहीं दिखाई पड़ते। 4. पृथ्वी से 160 किलोमीटर ऊपर जाने पर आकाश में तारे अधिक चमकदार दिखाई देते हैं। 5. पारसेक्स नक्षत्रीय माप की इकाई है। 6. सेस्टार नामक नक्षत्र से प्रकाश 43 वर्ष में पृथ्वी पर पहुँचता है। 7. सूर्य से पृथ्वी तक

प्रकाश आने में 8 मिनट 52 सैकेंड का समय लगता है। **(ग)** 1. एक पारसेक्स पृथ्वी और सूर्य की दूरी का लगभग 207 हज़ार गुना बड़ा होता है और इकतीस अरब किलोमीटर के बराबर होता है। 2. करोड़ों सूर्य और महान पिंडों के बीच हमारी पृथ्वी एक छोटे-से बिंदु से भी छोटी है। 3. प्रकाश की गति लगभग तीन लाख (3,00,000) किलोमीटर प्रति सैकेंड है। 4. रात्रि में तीव्र प्रकाश की रेखा बनाते हुए तारे टूटते हुए-से दिखाई पड़ते हैं। ये तारे नहीं बल्कि उल्काएँ हैं। 5. उल्काएँ जलती हुई इसलिए दिखाई देती हैं क्योंकि वायुमंडल में आ जाने से उनमें आग लग जाती है। **(घ)** 1. यदि हम ध्यान से देखें, तो आकाश में टिमटिमाते हुए तारों की धूमिल-सी एक धारा दिखाई पड़ेगी। इसे आकाशगंगा कहते हैं। आकाशगंगा में एक-दूसरे से सटे हुए प्रकाश के छोटे-छोटे मेघ-खंडों को यदि हम दूरवीक्षण यंत्र से देखें, तो इनमें अलग-अलग असंख्य नक्षत्र दिखाई पड़ेंगे। ये नक्षत्र सूर्य हैं। हमारा सौरमंडल इसी आकाशगंगा के एक छोर पर स्थित है। पूरी आकाशगंगा हमें दिखाई नहीं देती। कहीं-कहीं इसमें शाखाएँ भी निकली दिखाई देती हैं। 2. आकाश की अनंतता आकाशगंगाओं, असंख्य तारावलियों से सिद्ध होती है। 3. असंख्य रजकणों के कारण सूर्य के प्रकाश में हमारी पृथ्वी का सारा वायुमंडल आलोकित हो जाता है। इस कारण तारागण के क्षीण प्रकाश को हमारी आँखें नहीं देख पातीं। यदि हम पृथ्वी से 160 किलोमीटर ऊपर उठ जाएँ, तो काले आकाश में यही तारे अधिक चमकदार रूप से दिखाई पड़ेंगे क्योंकि वहाँ सूर्य होते हुए भी रजकणों के अभाव में चारों ओर अँधेरा-ही-अँधेरा रहता है। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का आशय यह है कि यदि व्यक्ति जीवन में सकारात्मक सोच के साथ सकारात्मक कार्य करे तो उसमें अनंत साहस व असीम शक्ति है। 2. इस पंक्ति का आशय है कि आकाश की भाँति मनुष्य की जानने की इच्छा भी अंतरहित है जिससे वह असंभव कार्य कर देता है। **(च)** 1. आकाश 2. से परे 3. एक छोर पर 4. असीम 5. पृथ्वी **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. विशेषण 2. विशेषण 3. संज्ञा 4. संज्ञा 5. संज्ञा 6. विशेषण 7. संज्ञा 8. संज्ञा **(ख)** 1. किरणें 2. रेखाएँ 3. शाखाएँ 4. आकाशगंगाएँ 5. ज्योतियाँ 6. इकाइयाँ 7. उल्काएँ 8. चिंगारियाँ **(ग)** 1. भार में कमी 2. तेज़ 3. हज़ार 4. धुँधला 5. बहुत तीव्र गति 6. मिला हुआ **(घ) उद्देश्य-**1. आकाश 2. मनुष्य 3. उल्कापिंड 4. कवियों 5. वैज्ञानिक **विधेय-**1. अनंत है। 2. की इच्छाएँ असीम हैं। 3. पृथ्वी पर गिरते रहे हैं। 4. आकाश के सौंदर्य पर काव्य रचे हैं। 5. निरंतर खोज करते रहते हैं। **(ङ)** 1. चिरकाल, चिरायु 2. सुपुत्र, सुपात्र 3. सम्मुख, सम्मान 4. प्रबल, प्रयोग 5. प्रतिवाद, प्रतिकार 6. अवस्थित, अवमानना 7. आकंठ, आयुक्त 8. विशेष, वियोग **(च)** 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग 6. पुल्लिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग 9. स्त्रीलिंग 10. पुल्लिंग **(छ)** 1. असंख्यता 2. भारहीनता 3. अनंतता 4. साहस 5. परिश्रम 6. दूरी 7. उष्णता 8. विशालता

14. नेता जी का पत्र (पत्र)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. नेता जी सुभाषचंद्र बोस एक महान स्वतंत्रता सेनानी व क्रांतिकारी थे। 2. प्रस्तुत पत्र का मुख्य विषय लोकमान्य तिलक को जेल में दी गई भयंकर यातनाओं के विषय में जानकारी देना है। 3. लोकमान्य तिलक ने मांडले जेल में 'गीताभाष्य' ग्रंथ की रचना की थी। 4. मांडल जेल में बंदी बन जाने पर सुभाषचंद्र बोस की प्रमुख पीड़ा लोकमान्य तिलक द्वारा इस जेल में कष्टप्रद जीवन जीने के प्रति थी। **लिखित-(क)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (स) **(ख)** 1. सुभाषचंद्र बोस ने लोकमान्य की तुलना शंकर व रामानुज जैसे महान भाष्यकारों से की। 2. वार्ड लकड़ी के तख़्तों से बना है; जिसमें गरमी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सरदी से तथा सभी ऋतुओं में धूल भरी हवाओं से बचाव नहीं हो पाता। 3. लोकमान्य को जेल में सामान्य बंदियों के साथ रखा गया था। 4. जेल में लोकमान्य को सांत्वना देने वाली वस्तुएँ पुस्तकें थीं। 5. उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर दिया जाता था।

(ग) 1. मांडले की जलवायु को सुभाषचंद्र बोस ने शिथिल कर देने वाली, मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देने वाली और धीरे-धीरे पर अटूट रूप में व्यक्ति की जीवनशक्ति को सोख लेने वाली बताया। 2. लोकमान्य ने जेल की कठोर यातनाओं को पुस्तकों के पठन व गीताभाष्य के लेखन के सहारे सहन किया। 3. समय-समय पर वे इस सोच में डूबते रहे थे कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था और हर बार उन्होंने अपने आप से पूछा कि 'अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है, तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी? जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं होगा।' **(घ)** 1. लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग मांडले जेल में गुज़ारा था। चारदीवारी में यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देने वाले परिवेश में स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीताभाष्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था इसलिए सुभाषचंद्र बोस लोकमान्य का स्थान शंकर और रामानुज जैसे प्रकांड भाष्यकारों व महापुरुषों की पंक्ति में चाहते थे। 2. अपनी आत्मा के ह्रास के बिना बंदी-जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान काम नहीं है। इससे अभिप्राय है हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है, सभी तरह के नियमों के आगे नत होना होता है और फिर भी आंतरिक प्रफुल्लता अक्षुण्ण रखनी होती है। दास-वृत्ति ठुकरानी होती है और फिर भी मानसिक संतुलन अडिग बनाए रखना होता है। **भाषा-ज्ञान-(क)** 1. अकेला **वाक्य-प्रयोग**-तिलक को एकाकी रहना पसंद था। 2. कारागार में वास करना **वाक्य-प्रयोग**-तिलक ने कारावास में छह वर्ष बिताए। 3. कैदी का जीवन **वाक्य-प्रयोग**-किसी भी व्यक्ति को बंदी जीवन पसंद नहीं होता। 4. न हटने की स्थिति **वाक्य-प्रयोग**-चंद्रशेखर आज़ाद कुछ शर्तों पर अडिग थे। 5. पीड़ा **वाक्य-प्रयोग**-तिलक ने जेल में शारीरिक यंत्रणा सहन की। **(ख)** 1. मुख्य 2. बलपूर्वक 3. सकुशल 4. निष्क्रिय 5. वातावरण 6. याद 7. हालत 8. गौरव 9. जिसे दबाया न जा सके 10. तीव्र **(ग)** 1. असंरक्षित 2. गौण 3. तुच्छ 4. सुखद 5. सौभाग्य 6. पुरस्कार 7. असंतोष 8. असंतुलन 9. शक्तिहीन 10. भक्षक **(घ)** 1. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक 'चार सत्य' है। 2. पहला आर्य सत्य यह है कि संसार दु:खों से परिपूर्ण है। जरा, व्याधि व मरण संसार के महादु:ख हैं। 3. दूसरा आर्य सत्य यह है कि दु:खमय संसार मानव की भोगलिप्सा, तृष्णा व लालच से उत्पन्न होता है। 4. तीसरा आर्य सत्य यह है कि दु:खों से बचने का उपाय संभव है। 5. चौथा आर्य सत्य यह है कि इन दु:खों को दूर करने के लिए सत्यज्ञान का अनुसरण करना चाहिए। 6. अष्टांगिक मार्ग हैं-सत्य दृष्टि, सत्य संकल्प, सत्य भाषण, सत्यानुष्ठान, सत्य आजीविका, सत्यश्रम (कर्म), सत्य चिंतन तथा सत्य ध्यान। 7. अष्टांग मार्ग पर चलने से मानव निर्वाण प्राप्त कर बंधन से मुक्त हो सकता है। इसी मार्ग का अनुसरणकर्ता सदा विजयी होता है। 8. उचित व सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति को सत्य के मार्ग पर चलाकर एक चरित्रवान व्यक्ति बना सके। 9. **जरा**-बुढ़ापा, **व्याधि**-पीड़ा, **तृष्णा**-तीव्र इच्छा, **लालसा**-इच्छा, **अनुसरण**-अनुकूल आचरण, **मार्ग**-रास्ता 10. **सत्य**-असत्य, **मरण**-जीवन, **चरित्रवान**-चरित्रहीन, **सदा**-यदा-कदा, **विजयी**-पराजित, **उचित**-अनुचित

15. भक्ति के पद (पद)

मौखिक-(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. सूरदास भगवान कृष्ण के उपासक व भक्तिकाल के महाकवि थे। 2. मीराबाई बचपन से ही कृष्ण ही आराधिका थीं। गोपियों की भाँति मीरा माधुर्य भाव से कृष्ण की उपासना करती थीं। वे कृष्ण को ही अपना पति कहती थीं और लोक-लाज खोकर कृष्ण के प्रेम में लीन रहती थीं। 3. सूरदास के पदों का विषय 'कृष्ण भक्ति' व 'कृष्ण लीला' का वर्णन रहा है। 4. मीरा ने कृष्ण जी की भक्ति में गीत गाए हैं। 5. सूरदास के पद में गोपियाँ श्रीकृष्ण को संबोधित कर

रही हैं। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) **(ख)** 1. सूरदास की आँखें श्रीकृष्ण के दर्शन को प्यासी हैं। 2. रामनाम रूपी धन को खर्च नहीं किया जा सकता। 3. मीरा को रामनाम रूपी धन प्राप्त हो गया है। 4. मीरा को अमोलक धन सतगुरु के द्वारा प्राप्त हुआ है। **(ग)** 1. गोपियाँ उदास इसलिए रहती हैं क्योंकि श्रीकृष्ण गोकुल छोड़कर वृंदावन चले गए हैं और गोपियों को उनके दर्शन नहीं हो पा रहे हैं। 2. मीरा ने संसार में अपना घर–परिवार, धन–दौलत आदि सब खोकर रामनाम रूपी धन पाया है। 3. मीरा ने गुरु की प्रशंसा में कहा है कि सद्गुरू ने मुझे अपना बनाया है और मुझे रामनाम रूपी अमूल्य धन प्रदान किया है। इस प्रकार सद्गुरु ने मुझ पर बहुत कृपा की है। **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. इस पंक्ति का भाव यह है कि मीरा ने संसार में अपना घर–परिवार, धन–दौलत आदि सब खोकर रामनाम रूपी धन पाया है। 2. इस पंक्ति का भाव है कि रामनाम रूपी धन खर्च करने से घटता नहीं है और इसे चोर लूट नहीं सकता है। यह धन हर दिन सवा गुना बढ़ जाता है। **(च)** 1. (द) 2. (य) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) **भाषा–ज्ञान–(क)** 1. राघव, रघुपति, कौशल्यानंदन 2. गोविंद, मुरलीधर, कन्हैया 3. तरणी, नैया, बेड़ा 4. नेत्र, नयन, लोचन 5. विष्णु, जगदीश, जनार्दन **(ख)** 1. चंद्र के समान मुख वाली 2. कमल के समान चरण **(ग)** 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग **(घ)** 1. अनुदार 2. अनिश्चित 3. परलोक 4. चेतन 5. निकृष्ट 6. अनुपयुक्त 7. घृणा 8. अमर्यादित **(ङ)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) **(च)** 1. परि+छेद 2. सत्+गति 3. जगत्+नाथ 4. चित्+ मय 5. गै+अक 6. दिक्+अंबर **(छ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (स) **(ज)** 1. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक 'मदिरापान से हानियाँ' है। 2. परिवार के मुखिया द्वारा शराब पीने से परिवार के निर्वाह में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। 3. निर्धन शराबी का परिवार इन संकटों से गुज़रता है–धन का अपव्यय, स्वास्थ्य की हानि और घर में क्लेश। 4. बच्चे डरे–सहमे से एक कोने में खड़े रहते हैं, बिलकुल बेबस। माता के साथ दुर्व्यवहार देखकर उन्हें बहुत मानसिक पीड़ा होती है। उनका भविष्य जैसे अंधकारमय बना रहता है। 5. ऐसी शराब पीकर शराबी मर जाते हैं और उनका परिवार बड़े संकटों में घिर जाता है। 6. मदिरापान को विवेकीजन निकृष्ट कार्य मानते हैं। 7. **अपव्यय**–व्यय, **अनिवार्य**– ऐच्छिक, **निर्धन**–धनी, **हानि**–लाभ, **निकृष्ट**–उत्कृष्ट, **दुर्व्यवहार**–सद्व्यवहार 8. **बच्चा**–संज्ञा, **परिवार**–संज्ञा, **कठिनाई**–संज्ञा, **पीड़ा**–संज्ञा, **पीड़ित**–विशेषण, **बेबस**–विशेषण

16. राम और सुग्रीव की मित्रता (पौराणिक कथा)

मौखिक–(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. राम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र थे और सुग्रीव वानरों के राजा बालि के छोटे भाई थे। 2. सीता को रावण हरण करके ले गया था। 3. राम ने सुग्रीव के बड़े व क्रूर भाई बालि का वध करके उसका राज्य व परिवार वापस दिलाया। 4. सुग्रीव ने मित्रता का निर्वहन सीता की खोज कराकर व लंका पर विजय प्राप्त करने में राम की सहायता करके किया। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (स) **(ख)** 1. हनुमान जी वेश बदलकर राम–लक्ष्मण के पास उनका परिचय प्राप्त करने गए। 2. हनुमान जी ने समझ लिया कि श्री राम और सुग्रीव दोनों की दशा समान है। दोनों को एक–दूसरे की मदद चाहिए। इसलिए दोनों में मित्रता हो सकती है। 3. जब राम ने एक बाण से सात वृक्षों का काट गिराया तो सुग्रीव को भरोसा हुआ कि राम बालि का वध कर सकते हैं। 4. राम ने सुग्रीव को नागपुष्पी की माला पहनाकर बालि से लड़ने को इसलिए भेजा ताकि वे सुग्रीव को पहचान सकें क्योंकि बालि व सुग्रीव दोनों का चेहरा व कद–काठी समान थी। **(ग)** 1. बालि की स्त्री तारा बड़ी बुद्धिमती थी। उसने सोचा कि अभी–अभी सुग्रीव हारकर भागा है, इतनी जल्दी फिर कैसे ललकार रहा है? ज़रूर कोई–न–कोई बलवान योद्धा उसके

पीछे है इसलिए उसने बालि को सुग्रीव से लड़ने को मना किया था। 2. बालि ने तारा को डाँटते हुए कहा, ''सुग्रीव भाई नहीं, बैरी है। बैरी की ललकार मैं नहीं सह सकता। श्री राम अकारण मुझे क्यों मारेंगे? इतना वचन मैं तुझे भी देता हूँ कि मैं सुग्रीव को जान से नहीं मारूँगा। बस उसका अहंकार चूर करके छोड़ दूँगा।'' 3. राम को बालि पर रोष इसलिए आ गया था क्योंकि उसने अपने छोटे भाई की पत्नी को उसके जीते जी अपने घर में रख लिया था। उसकी पत्नी उसके लिए बेटी के समान थी। 4. राम ने बालि के प्रश्न का उत्तर दिया, ''मेरा काम धर्म के अनुसार हुआ है। तुमने अपने छोटे भाई की पत्नी को उसके जीते जी अपने घर में रख लिया है। उसकी पत्नी तुम्हारे लिए बेटी के समान है। तुम्हें मारकर मैंने धर्म की रक्षा की है और मित्र की सहायता की है। तुम्हारे काम पशुओं जैसे थे। पशु को आड़ में से मारने में कोई दोष नहीं।'' 5. सुग्रीव ने राम से कहा था कि मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि वर्षा समाप्त होते ही वानर सीता जी की खोज में लग जाएँगे। वर्षाकाल बीतने पर भी सुग्रीव श्री राम के पास नहीं आया तो उन्हें बड़ा क्रोध आया और वे उससे अप्रसन्न हो गए। **(घ)** 1. जब राम ने लक्ष्मण को सुग्रीव के पास भेजा और किष्किंधा पहुँचकर लक्ष्मण ने धनुष की टंकार की तो सुग्रीव भयभीत हो गया। सुग्रीव ने अनुभव किया कि मित्र को दिया हुआ वचन भूलकर उसने बड़ा भारी अपराध कर डाला। उसने हनुमान जी को बुलाकर कहा कि दूत भेजकर सब वानरों को बुलवाओ। जो दस दिन के भीतर नहीं आएगा, उसे कठोर दंड मिलेगा। तब सुग्रीव लक्ष्मण के साथ राम से मिलने गया। श्री राम के चरणों में गिरकर उसने क्षमा माँगी। 2. बालि ने श्रीराम से प्रश्न किया, ''मैंने आपका क्या बिगाड़ा था? न तो मैंने आपका अपमान किया और न आपके राज्य पर चढ़ाई ही की। आपने यह अधर्म क्यों किया? लड़ना ही था, तो सामने आकर लड़ते।'' श्री राम को बालि की बातों पर रोष आ गया। वे बोले, ''मेरा काम धर्म के अनुसार हुआ है। तुमने अपने छोटे भाई की पत्नी को उसके जीते जी अपने घर में रख लिया है। उसकी पत्नी तुम्हारे लिए बेटी के समान है। तुम्हें मारकर मैंने धर्म की रक्षा की है और मित्र की सहायता की है। तुम्हारे काम पशुओं जैसे थे। पशु को आड़ में से मारने में कोई दोष नहीं।'' बालि ने श्री राम से हाथ जोड़कर क्षमा माँगी और कहा, ''मुझे पर-स्त्री हरण का दंड मिल गया। मेरी पत्नी तारा अनाथ हो गई और मेरा इकलौता बेटा अंगद भी अनाथ हो गया। इन पर कृपा कीजिए।'' **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है कि तुम अधर्मी हो इसलिए मैंने तुम्हारा वध करके धर्म की रक्षा की है।

भाषा-ज्ञान–(क) 1. राघव, रघुपति, कौशल्यानंदन 2. बजरंगबली, पवनपुत्र, महावीर 3. बंदर, कपि, शाखामृग 4. रत्नाकर, सागर, सिंधु 5. पहाड़, शैल, गिरि **(ख)** 1. राम धर्मात्मा थे। 2. राम ने अधर्म के विरुद्ध युद्ध किया। 3. सीता हरण से राम शोक-सागर में डूब गए। 4. सीता हरण से सभी वानरों में रोष था। 5. सीता के बिना सभी वानर अनाथ हो गए। 6. राम-रावण युद्ध विधि का विधान था। 7. ऋषियों ने विधिपूर्वक अनुष्ठान किया। **(ग)** 1. अशिष्ट 2. रंक 3. अर्थ 4. वरदान 5. मित्र 6. निरपराधी 7. नरम 8. पुरस्कार **(घ)** 1. शिष्ट 2. बलवान 3. अपमानित 4. अपराधी 5. वीर 6. धार्मिक **(ङ)** 1. कर्ता कारक 2. संबंध कारक 3. अधिकरण कारक **(च)** 1. हनुमान जी, राम-लक्ष्मण के पास गए। उन्होंने पूछा, ''आप इस वन में क्यों घूम रहे हैं?'' 2. बालि ने तारा को डाँट दिया और कहा, ''सुग्रीव भाई नहीं, बैरी है। बैरी की ललकार मैं नहीं सह सकता। श्री राम अकारण मुझे क्यों मारेंगे?''

17. भारतेंदु हरिश्चंद्र (जीवन-परिचय)

मौखिक–(क) स्वयं करें **(ख)** 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र का झुकाव यात्रा व काव्य की ओर था। 2. भारतेंदु हरिश्चंद्र को गरीबी और दूसरों की लाचारी, अंग्रेज़ों द्वारा भारतीयों पर अत्याचार की घटनाएँ व्यथित करती थीं। 3. भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रमुख रचनाओं के नाम हैं–वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, चंद्रावली, विषस्य विषमौषधम्, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अंधेर नगरी, प्रेमयोगिनी। 4. फ़िज़ूलखर्ची करने

के कारण घरवालों ने पैसा देना बंद कर दिया था इसलिए वह बीमार रहने लगे। इन्हें तपेदिक रोग हो गया था, जिससे इनकी मृत्यु हो गई। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) **(ख)** 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र के पिता का नाम गोपालचंद्र था। 2. उनका नियम था कि जब तक वे भक्ति के पाँच पद नहीं बना लेते थे, तब तक खाना नहीं खाते थे। 3. भारतेंदु हरिश्चंद्र के पिता की मृत्यु अत्यधिक भाँग पीने के कारण जलोदर रोग से हो गई थी। 4. भारतेंदु हरिश्चंद्र का अधिकांश समय कवि सम्मेलन, साहित्य गोष्ठी और नाटक-मंडली में व्यतीत होता था। 5. भारतेंदु हरिश्चंद्र के विषय में दानशीलता और उदारता की कहानियाँ प्रचलित हैं। **(ग)** 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की। उन्होंने हिंदी भाषा की डूबती हुई नौका को मानो केवट बनकर उबारा और अनेक प्रकार की पुस्तकें लिखकर हिंदी साहित्य के भंडार को बढ़ाया। कविता, लेख सभी कुछ उन्होंने लिखे। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन' नाम की एक मासिक पत्रिका निकाली, जिसका नाम कुछ समय के बाद 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' हो गया। 2. हरिश्चंद्र की दयालुता के कारण जनता उन्हें बहुत चाहती थी। अत: जब राजा शिवप्रसाद को सितारे हिंद की पदवी मिली, तो उसने सोचा कि अपने हरिश्चंद्र को भी कोई उपाधि दी जाए इसलिए सब लोगों ने यह तय किया कि उन्हें भारतेंदु अर्थात् देश के चाँद की उपाधि दी जाए और तभी से वह भारतेंदु हरिश्चंद्र कहलाने लगे। 3. अपनी आँखों से अंग्रेज़ों के अत्याचार देखकर उनके मन में अंग्रेज़ों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई थी। उन्होंने अपने जीवनकाल में अंग्रेज़ों के विरुद्ध अपनी कविताओं के माध्यम से आवाज़ उठाई। उन्होंने अंग्रेज़ों की नाक में दम कर दिया था। वे अपनी कविताओं में स्पष्ट तौर पर दर्शाया करते थे कि अंग्रेज़ भारत की संपदा लूटकर भारत की जनता को गरीब बना रहे हैं। 4. भारतेंदु जी ने अपनी रचनाओं में हिंदी की खड़ी बोली को अपनाया व उनके द्वारा निकाली जाने वाली पत्रिका हरिश्चंद्र मैगज़ीन थी। **(घ)** 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने प्रतिष्ठा को बढ़ाया किंतु धन को बराबर घटाया। कहीं अपनी छपी हुई पुस्तकों को मुफ़्त में बँटवाया, कहीं अपने खर्चे से स्कूल खोल दिया, कहीं कवियों, लेखकों तथा विद्यार्थियों को पुरस्कार स्वरूप धन दिया तथा किसी दीन-दुखी को देखा तो भोजन एवं वस्त्रादि से उसकी सहायता कर दी। जितना रुपया उन्होंने खर्च किया, उसमें से अधिकतर उन्होंने अच्छे कार्यों में ही किया। रुपये से उन्हें मोह नहीं था। 2. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जन-कल्याण के लिए साहित्य रचा। बाल-विवाह से हानि, अंधविश्वास का थोथापन, पर्दे से बुराई, छुआछूत के ढोंग, फ़ैशनपरस्ती आदि की बुराइयाँ दिखाते हुए उन्होंने ऐसे गीत रचे जो गाँव-गाँव तक उनका संदेशा लेकर पहुँच गए। समाज-सुधार की आवश्यकता, स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार से देश को लाभ–ये विषय उन्होंने लोकप्रिय गीतों की शैली में लिखे तथा अन्य कवियों को भी लिखने के लिए उत्साहित किया। उन्होंने विवाह, डोली तथा तीज-त्योहारों पर गाने के लिए सुंदर गीत लिखे। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. संज्ञा 2. विशेषण 3. संज्ञा 4. संज्ञा 5. विशेषण 6. संज्ञा **(ख)** 1. **विशेषण**–पाँच, मनोरंजक, रेशमी, बहुमूल्य, नई, रोगी, स्वदेशी, मासिक, रसिक, वार्षिक **विशेष्य**–पद, चुटकुले, वस्त्र, दुशाला, कविता, शरीर, वस्तुएँ, पत्रिका, हृदय, व्यय **(ग)** 1. चचेरा 2. लकड़हारा 3. भारतीय 4. दिखावट 5. भूखा 6. भड़ास **(घ)** 1. अभिमान 2. विशेष 3. प्रतिरोध 4. अनुकूल 5. अधिकार 6. परिस्थिति 7. उनसठ 8. अयोग्य 9. उपस्थित **(ङ)** 1. किसी ने सच ही कहा है, ''एक तंदुरुस्ती हज़ार नियामत।'' 2. मनुष्य स्वभावत: सुख चाहता है इसलिए उसकी खोज वह जीवन के आरंभ से ही करने लगता है। 3. मन के सुख-दु:ख, क्रोध, हर्ष और विस्मयादि भावों को आप किस प्रकार व्यक्त करते हैं? 4. जिसके पास धैर्य नहीं, सहनशक्ति नहीं, बुद्धि नहीं, वह कभी सफल नहीं हो सकता। 5. क्यों शोर मचा रखा है, चुपचाप बैठ क्यों नहीं जाते? **(च)** 1. लघुता 2. अनुत्साहित 3. निर्जीव 4. मूर्ख 5. वाचाल 6. अयोग्य 7. असंतोष 8. अपवित्र 9. पाप 10. प्राचीन **(छ)**

1. मन:+हर 2. दुर्+उपयोग 3. निर्+गुण 4. पुनर्+ अवलोकन **(ज)** 1. के बाद 2. के समान 3. के निकट 4. अपेक्षा **(झ)** 1. यहाँ, बाहर 2. दाएँ, उधर 3. अवश्य 4. कम, अधिक 5. हाथों-हाथ **(ञ)** 1. कर्ता कारक 2. करण कारक 3. संप्रदान कारक 4. संबंध कारक 5. अपादान कारक

18. पृथ्वी का स्वर्ग (एकांकी)

मौखिक–(क) स्वयं करें **(ख)** 1. प्रस्तुत एकांकी के रचयिता डॉ० राजकुमार वर्मा हैं। 2. एकांकी के प्रमुख पात्रों के नाम हैं–बोझेवाला, दुलीचंद, केशव, अचल, मंगल, भिखारिन 3. दुलीचंद सेठ है। 4. दुलीचंद कंजूस व्यक्ति है। 5. एकांकी का आदर्शवादी पात्र अचल है। **लिखित–(क)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) **(ख)** 1. अचल के पूछने पर दुलीचंद ने संदूक में पुराने गरम कपड़े होना बताया। 2. दुलीचंद ने नोटों के बंडल संदूक में छिपाकर इसलिए रखे थे ताकि किसी को इनके बारे में पता न लगे। 3. अचल को संसार में निर्धनता दिखाई पड़ती है। 4. अचल ने दुलीचंद के पैसे अनजाने में भिखारिन को देकर उसे संकट में डाल दिया था। **(ग)** 1. दुलीचंद ने अचल को पुराने कपड़ों का सदुपयोग करने के पीछे गरीबों की मदद करने की बात बताई। 2. भिखारिन ने अचल को रुपए इसलिए लौटा दिए थे क्योंकि वह ईमानदार थी और अचल का एहसान मानती थी। 3. अचल ने पृथ्वी पर स्वर्ग गरीबों की मदद के रूप में माना। **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** स्वयं करें। **(च)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. कृष्ण 2. व्यक्ति 3. संसार 4. कपड़ा 5. चित्र 6. हमदर्दी 7. जल्दी 8. शुभ **(ख)** 1. धरा, वसुंधरा, भूमि 2. वैकुंठ, देवलोक, सुरलोक 3. श्री, कमला, रमा 4. अग्नि, अनल, पावक **(ग)** 1. जान-बूझकर किसी बात पर ध्यान न देना। **वाक्य-प्रयोग**–सुमन ने अपने बेटे के मोह में अंधी होकर व्यवहार किया। 2. मौके की तलाश में रहना। **वाक्य प्रयोग**–पुलिस चोर को पकड़ने के लिए ताक लगाकर बैठ गई। 3. पागल हो जाना। **वाक्य-प्रयोग**–सुनील आज उल्टी-सीधी हरकतें कर रहा है मानो उसका दिमाग फिर गया हो। **(घ)** 1. उदारमना 2. क्रूर 3. निर्दय 4. दयावान 5. परमार्थी 6. समद्रष्टा **(ज)** 1. उदारता 2. कृपणता 3. बचपन 4. अच्छाई

19. महाभारत (पौराणिक कथा)

मौखिक–(क) स्वयं करें **(ख)** 1. कौरव धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे। 2. पांडव महाराज पांडु के पाँच पुत्र थे। 3. कौरव-पांडव के मध्य हुआ युद्ध 'महाभारत' नाम से जाना जाता है। 4. यह युद्ध दुर्योधन द्वारा पांडवों का राज्य न देने के कारण हुआ था। 5. श्रीकृष्ण ने इस युद्ध में अर्जुन के सारथी बनकर व पांडवों का साथ देकर मार्गदर्शक की भूमिका निभाई थी। **लिखित–(क)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (स) **(ख)** 1. पितामाह भीष्म ने दस दिनों तक कौरव सेना का नेतृत्व किया। 2. युद्ध में भीष्म पितामह ने प्रतिदिन दस हज़ार सैनिकों का संहार करने की प्रतिज्ञा की थी। 3. भीष्म ने अर्जुन को अपनी मृत्यु का यह उपाय बताया, ''तुम्हारी सेना में शिखंडी नाम का जो महारथी है, मैं उस पर बाण नहीं चलाऊँगा। यदि उसकी ओट से मेरे ऊपर बाण चलाओ तो मेरा अंत हो सकता है।'' 4. शिखंडी पूर्वजन्म में स्त्री था। 5. क्योंकि उनके शरीर में बिंधे हुए बाण उनकी शैया बन गए थे। **(ग)** 1. ग्यारहवें दिन द्रोणाचार्य कौरवों के सेनापति बने। अपने सेनापति बनने के तीसरे दिन द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह का निर्माण किया, जिसमें अभिमन्यु का नृशंसतापूर्ण वध हुआ। यह पांडव-पक्ष की बहुत बड़ी क्षति थी। युद्ध के पंद्रहवें दिन दोपहर तक द्रोण ने पांडव-पक्ष के अन्य अनेक महारथियों का संहार कर डाला। 2. युद्ध के पश्चात् युधिष्ठिर राजा हुए। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। धर्मानुकूल आचरण करते हुए वे प्रजा का पालन करने लगे। बहुत दिनों तक शासन करने के बाद पांडवों ने अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को राजा बनाया और स्वयं हिमालय की ओर चल पड़े। 3. युद्ध से भागा दुर्योधन एक सरोवर में छिप गया था और एक शिकारी ने उसका पता बता दिया था। 4. पांडवों की सेना में अश्वत्थामा नामक एक हाथी

था। भीम ने उसे मार डाला और द्रोण के पास जाकर उच्च स्वर में कहा, ''अश्वत्थामा मारा गया, अश्वत्थामा मारा गया।'' द्रोण को सहसा भीम की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। वे जानते थे कि अश्वत्थामा को मारना हँसी-खेल नहीं। अत: उन्होंने युधिष्ठिर से पूछा, ''क्या भीम की बात सच है?'' युधिष्ठिर हिचकते हुए बोले, ''हाँ, अश्वत्थामा मारा गया किंतु हाथी।'' अंतिम दो शब्द उन्होंने धीरे-से कहे और तभी श्रीकृष्ण ने अपना शंख बजा दिया, जिससे द्रोणाचार्य युधिष्ठिर का अंतिम शब्द न सुन सके। युधिष्ठिर सदा सच बोलते थे। अत: द्रोणाचार्य को उनकी बात पर विश्वास हो गया। पुत्र के वध का समाचार उनके लिए असह्य हो गया। वे युद्ध से विरत होकर ईश्वर का ध्यान करने लगे। इसी समय पांडवों के सेनापति धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य का सिर काट लिया। **(घ)** 1. अर्जुन और कर्ण का भीषण युद्ध हुआ। दोनों का युद्ध देखकर सारे सेनानी दंग रह गए। दोनों ही बाण-विद्या में पारंगत थे। लड़ते-लड़ते कर्ण के पहिए ज़मीन में धँस गए। कर्ण किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। उसने अर्जुन से कहा, ''ठहरो, मैं रथ के पहिए निकाल लूँ, तब बाण चलाना। धर्म-युद्ध की यही माँग है।'' अर्जुन ने कहा, ''जिस समय छह महारथियों के साथ तुमने अभिमन्यु जैसे बालक का वध किया था, उस समय तुम्हारी धर्मबुद्धि कहाँ गई थी?'' कर्ण यह सुनकर लज्जित हो गया। अर्जुन ने उसी समय एक ऐसा बाण मारा कि कर्ण धराशायी हो गया। 2. गदाओं की टक्कर से आग की चिंगारियाँ निकलने लगीं। गदा-युद्ध में कमर से नीचे प्रहार करना वर्जित था पर भीम ने द्रौपदी के अपमान के समय दुर्योधन की जाँघ तोड़ने की प्रतिज्ञा की थी। अत: अवसर पाकर उसने दुर्योधन की जाँघ पर गदा का प्रहार किया। उसकी जाँघ टूट गई और वह धराशयी हो मृत्यु की घड़ियाँ गिनने लगा। **(ङ)** इस पंक्ति का आशय है कि धर्म का आचरण करने वाले वीरों की विजय होती है। **भाषा-ज्ञान–(क)** 1. परेशानी में मालिक से बहुत पैसे मिलने पर वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। 2. पांडवों ने कौरवों के विरुद्ध धर्म-युद्ध लड़ा। 3. द्रौपदी द्वारा अपमान करने पर दुर्योधन बहुत लज्जित हुआ। 4. कृष्ण जी ने युद्ध से विरत रहने की प्रतिज्ञा की। **(ख)** 1. अच्छी तरह सजा हुआ 2. अपने लोग 3. लड़ाई 4. कभी न मरने वाला 5. फेंककर चलाया जाने वाला हथियार 6. टूटा हुआ 7. विनाश 8. आग का 9. शव 10. हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार **(ग)** 1. पार्थ, कौंतेय, पांडुनंदन 2. कन्हैया, मुरारी, गिरिधारी **(घ)** 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग 6. पुल्लिंग 7. पुल्लिंग 8. स्त्रीलिंग **(ङ)** 1. खूब 2. धीरे-धीरे 3. फटाफट 4. निरंतर 5. यहाँ **(च)** 1. के विरुद्ध 2. के जैसा 3. के पीछे 4. के सामने 5. के मारे **(छ)** 1. भविष्यत्काल 2. भूतकाल 3. भूतकाल 4. भविष्यत्काल 5. भूतकाल 6. भूतकाल 7. भूतकाल **(ज)** 1. सकर्मक 2. सकर्मक 3. सकर्मक 4. अकर्मक 5. अकर्मक

GREEN BOOK HOUSE
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com